नई दिल्ली
शनिवार
20 अप्रैल, 2024
वर्षः 10, अंकः 228
पृष्ठः 08, मूल्य 2 रु०
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
# सद्भावना टुडे
आवाज़ अधिकार की

DELHIN/2014/58158

केन्या के राष्ट्रपति ने की विमान दुर्घटना...पेज-06

डिकॉक और राहुल ने चेन्नई को दिखाया आइना...पेज-07

हिन्दी में प्रकाशित होने वाला सबसे लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र 'सद्भावना टुडे' में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :-
011-43678240
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

## लोस चुनाव: 21 राज्यों की 102 सीटों पर हुए 60 फ़ीसदी मतदान

### पीएम मोदी बोले-पहला चरण शानदार!

लोकसभा चुनाव के पहले चरण के तहत देश के 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश में मतदान शुक्रवार शाम 6 बजे मतदान का सिलसिला खत्म हो गया।मतदान समाप्ति पर प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया पहला चरण शानदार! आज मतदान करने वाले सभी लोगों को धन्यवाद। आज के मतदान से स्पष्ट है कि पूरे भारत में लोग रिकार्ड संख्या में राजग के लिए मतदान कर रहे हैं। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी कहा कि मतदान के पहले चरण में भाजपा के पक्ष में बंपर वोटिंग हुई है। दरअसल, पहले चरण में 102 लोकसभा सीटों पर शाम 7 बजे तक कुल 60.03 प्रतिशत औसत मतदान हुआ। हालांकि, इस चरण में शाम को 5 बजे तक 59.7 प्रतिशत औसत मतदान होने का अनुमान था।और दोपहर 3 बजे तक 49.9 फीसदी मतदान हुआ था। दोपहर 1 बजे तक कुल 39.9 फीसदी मतदान हुआ था। अगर देश के अलग-अलग राज्यों में लोकसभा चुनाव के पहले चरण में शाम 5 बजे तक के मतदान के आंकड़े के हिसाब से सबसे ज्यादा मतदान पश्चिम बंगाल में किया गया है। जबकि बिहार में सबसे कम 46.32 प्रतिशत मतदान हुआ। वहीं पश्चिम बंगाल में शाम 5 बजे तक सबसे अधिक 77.57 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाला।

अन्य राज्यों की बात करें तो त्रिपुरा में सबसे अधिक 76.10, असम में 70.77, पुडुचेरी में 72.84, मेघालय में 69.91, मणिपुर में 68.62, सिक्किम में 68.06, जम्मू कश्मीर में 65.08, अरुणाचल प्रदेश में 63.97, छत्तीसगढ़ में 63.41, लक्षद्वीप में 59.02, अंडमान एवं निकोबार द्वीप में 56.87, नागालैंड में 55.02, उत्तराखंड में 53.56 और मिजोरम में 53.03 प्रतिशत मतदान हुआ है। शाम 5 बजे तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, उत्तर प्रदेश में 57.54, तमिलनाडु में 62.08, मध्य प्रदेश में 63.25, महाराष्ट्र में 54.85 और राजस्थान में 50.27 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मध्य प्रदेश में भी



दोपहर 1 बजे तक 44 फीसदी मतदान हुआ जबकि उत्तराखंड में दोपहर एक बजे तक डाले गए वोट का प्रतिशत जम्मू-कश्मीर में 43.1, त्रिपुरा में दोपहर एक बजे तक 53 फीसदी, महाराष्ट्र में 32 फीसदी, पश्चिम बंगाल में 51 फीसदी, छत्तीसगढ़ में 41.5 फीसदी रहा।

वहीं, सुबह 11 बजे तक राजस्?थान में 22.51 प्रतिशत मतदान हुआ था. जबकि, सिक्किम की 32 विधानसभा सीटों और एकमात्र लोकसभा सीट पर 4.64 लाख मतदाताओं में से 21.2 प्रतिशत से अधिक ने शुक्रवार सुबह 11 बजे तक अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। इससे पहले पश्चिम बंगाल के कूचबिहार में वोटिंग के दौरान पथराव की घटना सामने आई है। बताया जा रहा है कि चंदामारी इलाके में पथराव किया गया है. इस पत्थरबाजी में एक क्ष्छ्क कार्यकर्ता घायल हो गया है। लोकसभा चुनावों के तहत आज पहले चरण के तहत 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 102 सीटों पर वोटिंग जारी है। महाराष्ट्र के नागपुर में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने मतदान किया। पहले चरण में वोट डालने के बाद अपनी स्याही लगी उंगली दिखाते हुए वह मतदान केंद्र से बाहर निकले. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पहली बार वोट देने जा रहे अपने युवा साथियों से मेरी यह विशेष अपील है कि वे भारी संख्या में मतदान करें। लोकतंत्र में हर वोट कीमती है और हर आवाज का महत्त्व है! वहीं, गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, आज एक महत्त्वपूर्ण दिन है, जब देश में प्रथम चरण का मतदान हो रहा है। इस चरण के सभी मतदाताओं से अपील करता हूं कि आप अधिक से अधिक संख्या में मतदान करें, क्योंकि आपके एक वोट में सुरक्षित, विकसित और आत्मनिर्भर भारत बनाने की शक्ति है। आपका एक वोट सिर्फ एक लोकसभा या प्रत्याशी का परिणाम तय करने के लिए नहीं, बल्कि भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए है।

पहले चरण में तमिलनाडु की सभी 39 सीटों, राजस्थान की 25 में से 12 सीटों पर, यूपी की 80 में से 8 सीटों पर, मध्य प्रदेश की 6 सीटों पर वोटिंग हुई। महाराष्ट्र की 5, असम की 5, उत्तराखंड की 5, बिहार की 4, पश्चिम बंगाल की 3, मेघालय की 2, अरुणाचल प्रदेश की 2 और मणिपुर की 2 सीटों पर वोट डाले गए। इसके अलावा पुडुचेरी, मिजोरम, छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप, सिक्किम, त्रिपुरा, नगालैंड और अंडमान-निकोबार की 1-1 सीट पर भी वोटिंग हुई। चुनाव आयोग के मुताबिक, इलेक्शन के पहले फेज में कुल 1625 उम्मीदवार मैदान में थे। इनमें 1491 पुरुष और 134 महिला उम्मीदवार हैं। पहले फेज में 8 केंद्रीय मंत्रियों, 2 पूर्व सीएम और एक पूर्व राज्यपाल चुनावी मैदान में अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। इस चरण के प्रमुख उम्मीदवारों में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, सर्बानंद सोनोवाल और भूपेन्द्र यादव, कांग्रेस के गौरव गोगोई, और द्रमुक की कनिमोई शामिल हैं। पिछले चुनाव (2019) में यूपीए ने इन 102 सीटों में से 45 और एनडीए ने 41 सीटें जीती थीं। लोकसभा चुनाव के पहले फेज के साथ ही अरुणाचल प्रदेश (60 सीटें) और सिक्किम (32 सीटें) में विधानसभा चुनाव भी हुए। नतीजे 4 जून को आएंगे।

-डॉ. शाहिद सिद्दीक़ी;
Follow via X @shahidsiddiqui

## 2024 लोकसभा चुनाव विकासशील भारत के सपने को पूरा करेगा: मोदी



**मुंबई,एजेंसी।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव विकासशील भारत और आत्मनिर्भर भारत के सपने को पूरा करने का चुनाव है। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के वर्धा लोकसभा क्षेत्र में पार्टी प्रत्याशियों रामदास तड़स (वर्धा) और नवनीत राणा (अमरावती) के लिए एक चुनाव प्रचार रैली को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने वर्धा को आध्यात्मिकता और देशभक्ति के महान संगम की भूमि बताया।

उन्होंने कहा, बापू ने आज़ादी से पहले भारत में यह सपना देखा था। आज, जब देश निर्णायक प्रगति कर रहा वर्धा का आशीर्वाद महत्वपूर्ण है। आपकी जबरदस्त उपस्थिति और वर्धा और अमरावती से मजबूत समर्थन, यह दर्शाता है कि विकसित महाराष्ट्र और भारत का लक्ष्य पहुंच के भीतर है। आज महाराष्ट्र में %फिर एक बार, मोदी सरकार गूंज रहा है। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि प्रगति के लिहाज से इस उल्लेखनीय दशक में, इस विनम्र सेवक ने 25 करोड़ लोगों को को गरीबी से बाहर निकाला, हर गांव को रोशन किया, 1करोड़ दस लाख को पानी के कनेक्शन प्रदान किए, चार करोड़ गरीब परिवारों को घर दिए और 50 करोड़ लोगों को बैंकिंग के माध्यम से अर्थव्यवस्था में एकीकृत किया। उन्होंने जोर देकर कहा, प्रत्येक उपलब्धि एक उज्जवल, अधिक समावेशी भविष्य के प्रति हमारे सामूहिक समर्पण और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है। विपक्ष की हकीकत उजागर करते हुए श्री मोदी ने दावा किया कि, %कांग्रेस और इंडिया समूह की सोच हमेशा विकास विरोधी और किसान विरोधी रही है। इसीलिए देश में किसानों की हालत दशकों से इतनी ख़राब बनी हुई है। उन्होंने आरोप लगाया, परिवार के नाम पर रखा गया एक पत्थर पीढ़ियों तक अधूरा पड़ा रहा, जिससे कांग्रेस शासन के तहत विदर्भ में पीड़ा हुई। उन्होंने कहा, आज हमारी सरकार विदर्भ की जरूरतों को प्राथमिकता देती है, एकनाथ शिंदे, देवेंद्र फड़नवीस और अजीत पवार आप सभी की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

## एक नजर

### जेल में केजरीवाल को नहीं दी जा रही इंसुलिन: आप

**नई दिल्ली,एजेंसी।** आम आदमी पार्टी (आप) ने मोदी सरकार के इशारे पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के जीवन के साथ खिलवाड़ करने का आरोप लगाते हुए कहा कि जेल में उनको इंसुलिन नहीं दी जा रही है। आप के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने शुक्रवार को संवाददाताओं से कहा कि भरतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कार्य पद्धति और और उनके नेता जिस तरह से काम करते हैं, वह किसी की जान लेने की हद तक षड़यंत्र रच सकते हैं। श्री केजरीवाल के खिलाफ चल रही कार्रवाई को देखकर कह सकता हूं कि उनके खिलाफ गहरी साजिश रची गई है और जेल में उनके साथ किसी भी तरह का हादसा हो सकता है। तीन बार के निर्वाचित मुख्यमंत्री के साथ आतंकवादियों जैसा व्यवहार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री से उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान की मुलाकात आतंकवादियों की तरह कराई जाती है। श्री सिंह ने कहा कि जेल के नियमों के मुताबिक किसी भी कैदी के बारे में उसके स्वास्थ्य और खानपान से संबंधित कोई भी जानकारी सार्वजनिक नहीं की जा सकती है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुरुवार को किस आधार पर श्री केजरीवाल के झूठे डाइट चार्ज को मीडिया में प्रचारित करवाया। इसके पीछे क्या साजिश है? क्या जेल प्रशासन से मिलकर ईडी श्री केजरीवाल को किसी बहाने जहर देकर मारने की साजिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 30 सालों से श्री केजरीवाल शुगर के मरीज हैं और इंसुलिन लेते हैं। किसी भी शुगर के मरीज के लिए इंसुलिन बहुत महत्वपूर्ण दवा होती है। अगर समय पर उसे इंसुलिन न दी जाए तो उसकी जान जा सकती है।

### बसपा की छठी सूची में नौ नये नाम, दो के नाम बदले

**लखनऊ,एजेंसी।** बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने लोकसभा चुनाव के लिये शुक्रवार को उम्मीदवारों की छठी सूची जारी कर दी। नयी सूची में नौ उम्मीदवारों के नाम का ऐलान किया गया है जबकि वाराणसी और फिरोजाबाद में उम्मीदवार बदले गये हैं। हरदोई लोकसभा क्षेत्र से विधानसभा पार्षद भीमराव अंबेडकर को टिकट दिया गया है जबकि संतकबीरनगर से मोहम्मद आलम, फतेहपुर से मनीष सचान,सीतापुर से महेन्द्र सिंह यादव, महराजगंज से मोहम्मद मौसमे आलम, मिश्रिख (सु) से बीआर अहिरवार, मछलीशहर (सु) कृपाशंकर सरोज, भदोही से अतहर अंसारी, फूलपुर से जगन्नाथ पाल बसपा प्रत्याशी होंगे।

## लोकसभा चुनाव: भाजपा की कश्मीर में जमीन नहीं बची है- उमर अब्दुल्ला

**श्रीनगर,एजेंसी।** नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने शुक्रवार को लोकसभा चुनाव को लेकर कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कश्मीर में जमीन नहीं बची है इसलिए वह पीछे से हालात की कमान संभाल रही है। श्री अब्दुल्ला ने कहा,केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हाल के बयान से साफ पता चलता है कि अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को हटाए जाने के बाद भाजपा लोगों का दिल नहीं जीत सकी है।अगस्त 2019 के बाद यह पहला लोकसभा चुनाव है। भाजपा ने वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में जम्मू-कश्मीर की सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। अब गृह मंत्री बोल रहे हैं कि हम पहले लोगों का दिल जीतेंगे और बाद में उम्मीदवार उतारेंगे।

उन्होंने कहा कि इसका सीधा मतलब है कि वह जम्मू-कश्मीर के लोगों का दिल जीतने में असफल रहे हैं। वर्ष 2019 के फैसले के बाद लोग गुस्से में हैं और अलग-थलग पड़ गए हैं। श्री अब्दुल्ला ने कहा, हम कोशिश करेंगे कि दक्षिण, मध्य और उत्तर कश्मीर के हमारे तीन उम्मीदवार सफलतापूर्वक मतदाताओं का दिल जीतें।भाजपा जम्मू-कश्मीर में प्रॉक्सी उम्मीदवारों का समर्थन कर रही है। जम्मू-



कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, अगर भाजपा मैदान छोड़ देती तो इसका मतलब कुछ होता, लेकिन ऐसा नहीं है और वह पीछे से स्थिति की कमान संभाल रही है। श्री अब्दुल्ला ने कहा, भाजपा नेता तरुण चुघ साहब श्रीनगर पहुंचे। सज्जाद लोन को बुलाया जाता है और बैठक होती है। गृह मंत्री नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस (इंडी गठबंधन सहयोगियों) पर निशाना साधते हैं और उन्हें हराने की बात करते हैं। पीपुल्स कांफ्रेंस के बारे में बात नहीं करते है। इससे पता चलता है कि उनके पीछे की ताकत कौन है।

## चुनाव के दौरान 'यात्राओं' की अनुमति पर तीन दिन के भीतर फैसला लें- सुप्रीम कोर्ट

**नई दिल्ली,एजेंसी।** उच्चतम न्यायालय ने चुनाव के दौरान किसी भी सभा पर रोक लगाने के व्यापक आदेश जारी किये जाने पर शुक्रवार को आश्चर्य व्यक्त किया और सक्षम अधिकारियों को मौजूदा आम चुनावों के दौरान यात्राएं आयोजित करने की अनुमति के लिए किसी भी व्यक्ति की ओर से की गयी याचिका पर तीन दिन के भीतर निर्णय लेने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने सामाजिक कार्यकर्ता अरुणा रॉय और निखिल डे की याचिका पर यह निर्देश दिया। पीठ के समक्ष याचिकाकर्ता सुश्री रॉय और श्री डे की ओर से पेश अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने दावा किया कि चुनाव आयोग ने आम चुनाव होने तक सभी सभाओं, बैठकों, प्रदर्शनों आदि पर रोक लगा दी है। पीठ ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा, ऐसा आदेश कैसे जारी किया जा सकता है। श्री भूषण



ने संविधान पीठ के पहले के फैसलों का जिक्र करते हुए कहा कि जब तक शांति भंग होने की कोई ठोस वास्तविक आशंका न हो, सीआरपीसी की धारा 144 के तहत कोई आदेश जारी नहीं किया जा सकता है। पीठ के कहने पर श्री भूषण ने अदालत में ऐसा ही एक नोटिस को पढ़ा। उन्होंने (श्री भूषण) बाड़मेर में जारी एक नोटिस का हवाला देते हुए कहा, बाड़मेर के जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि ईसीआई द्वारा लोकसभा चुनावों की (16 मार्च को) घोषणा की गई है। ईसीआई के निर्देशों के अनुसार, लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से कराए जाने चाहिए। कोई भी व्यक्ति संबंधित चुनाव अधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना जुलूस या सार्वजनिक बैठक का आयोजन नहीं कर सकेगा, लेकिन यह प्रतिबंध विवाह समारोह और अंतिम यात्रा पर लागू नहीं होगा।%

श्री भूषण ने कहा कि याचिकाकर्ताओं ने निर्वाचन क्षेत्रों में मतदाताओं को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों आदि का प्रयोग करने के लिए जागरूक करने के वास्ते लोकतंत्र यात्रा/सार्वजनिक बैठक निकालने की अनुमति के लिए आवेदन किया था। उन्होंने कहा, पिछली बार नवंबर और दिसंबर में हुए विधानसभा चुनाव में हमने यही अनुमति मांगी थी। हमें अनुमति नहीं दी गई थी और अब फिर कोई अनुमति नहीं दी गई है। 48 घंटे के भीतर उन्हें कम से कम अनुमति के लिए आवेदन पर निर्णय लेना चाहिए।

## घर खरीदारों से धोखा: ईडी मुंबई ने की बिल्डर, सहयोगियों की कुर्की

**नई दिल्ली,एजेंसी।** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की मुंबई इकाई ने घर खरीदारों के साथ थोखाधड़ी जुड़े धन शोधन के मामले की जांच के सिलसिले में ललित टेकचंदानी बिल्डर और उसके सहयोगियों से संबंधित करीब 114 करोड़ रुपये की चल सम्पत्तियों की कुर्की के आदेश दिए हैं। ईडी ने शुक्रवार को बताया कि मुंबई में उसके अधिकारियोंने फ्लैट के संभावित खरीदारों को धोखा देने के मामले में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत ललित टेकचंदानी और उसके सहयोगियों से संबंधित 113.5 करोड़ रुपये के कुल मूल्य वाले चल और अचल संपत्तियों के संबंध में अनंतिम कुर्की आदेश जारी किए हैं। इन सम्पत्तियों में मुंबई के पास अंबे वैली में विला, मुंबई में विभिन्न आवासीय व्यावसायिक परिसर, रायगढ़ जिले में जमीने और कुछ सावधि जमा राशि शामिल है।

## सुशासन और सुरक्षा ही मजबूत सरकार का आधार: योगी

**गाजियाबाद।** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सुशासन और सुरक्षा ही मजबूत सरकार का आधार है और जनता की इस उम्मीद पर भारतीय जनता पार्टी की सरकार खरी उतरी है। मोदीनगर में बागपत लोकसभा सीट के लिए एनडीए प्रत्याशी डॉ राजकुमार सांगवान के समर्थन में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुये श्री योगी ने कहा कि अन्नदाता किसानों का सम्मान और उत्थान करके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत रत्न चौधरी चरण सिंह के सपनों को साकार कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने अन्नदाताओं के लिए अनेक योजनाएं प्रारंभ की, जिसका परिणाम हम सबके सामने है। चाहे पीएम किसान सम्मान निधि के जरिए अन्नदाताओं का सम्मान हो, या भारत को दुनिया में सम्मान दिलाने का कार्य, सीमाओं की सुरक्षा हो, देश में आतंकवाद और नक्सलवाद की समस्या का समाधान हो,



वर्ल्ड क्लास इन्फ्रास्ट्रक्चर, 12 लेन का एक्सप्रेसवे, रैपिड रेल, मेट्रो, आईआईटी, आईआईएम सहित तमाम योजनाएं नये भारत की पहचान बन रही हैं। श्री योगी ने कहा कि लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण के लिए मतदान चल रहा है। वोटिंग की स्पीड बताती है कि देश में फिर एक बार मोदी सरकार लाने के लिए लोगों में उतावलापन दिख रहा है। ऐसा होना लाजमी है क्योंकि जो हमारे पूर्वजों को सम्मान दें उनका सम्मान होना ही चाहिए। पहली बार चौधरी साहब को मोदी जी ने भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न देकर हमारे यूपी का गौरव बढ़ाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत 80 करोड़ लोगों को 4 साल से फ्री में राशन दे रहा है, वहीं भारत से अलग हुए पाकिस्तान में 23 करोड़ लोग भूखों मर रहे हैं। जब हम अच्छा नेता चुनते हैं तो परिणाम भी अच्छा आता है। आज 60 करोड़ लोगों को आयुष्मान भारत योजना से जोड़ा जा चुका है, 50 करोड़ जनता का जनधन अकाउंट खुल चुका है, 12 करोड़ अन्नदाताओं को किसान सम्मान निधि और 12 करोड़ घरों में शौचालय के साथ ही 10 करोड़ माताओं को उज्ज्वला योजना से लाभान्वित किया जा चुका है। योगी ने रामनवमी के अवसर पर भगवान श्रीराम के सूर्य तिलक को लेकर कहा कि इसने पूरे देश को गौरवान्वित किया है। वहीं उन्होंने सपा, बसपा और कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि इन पार्टियों ने पश्चिमी यूपी में सुरक्षा के लिए खतरा खड़ा कर दिया था। न बेटी सुरक्षित थी, न व्यापारी, किसान के खेत से उसके ट्यूबवेल ही उखाड़ लिये जाते थे। हमारी सरकार ने 15 लाख निजी नलकूपों को फ्री बिजली देने का प्रावधान किया है। चौधरी साहब के सपने को साकार करने के लिए सरकार ने ये निर्णय लिया है।

## महबूबा मुफ्ती ने किया चुनाव घोषणापत्र जारी, जम्मू-कश्मीर को 'खुली हवा का जेल' कहा

**श्रीनगर,एजेंसी।** पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने शुक्रवार को आगामी लोकसभा चुनाव के लिए घोषणापत्र जारी किया। पीडीपी के घोषणापत्र में वादा किया गया है कि पार्टी अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बाद केंद्र सरकार के नापाक इरादों से लड़ने के लिए संसद में आवाज उठाएगी।

हालांकि, घोषणापत्र में स्वशासन फॉर्मूले की पार्टी की मांग का कोई उल्लेख नहीं है, जिसका उपयोग पीडीपी यह दावा करने के लिए करती रही है कि उसमें जम्मू-कश्मीर के मुद्दे का समाधान करने की क्षमता है। श्रीनगर में सुश्री मुफ्ती द्वारा जारी किए गए घोषणापत्र का शीर्षक 'पहचान की रक्षा, भविष्य की रक्षा' है, जिसमें कहा गया है कि 2019 में अनुच्छेद




370 का अवैध निरस्तीकरण के बाद, जम्मू-कश्मीर 'खुली हवा वाला जेल' में तब्दील हो गया है। घोषणापत्र में कहा गया, हमारी सामूहिक पहचान, भूमि, नौकरियों, संसाधनों पर एक अंतहीन प्रहार किया गया है और बोलने की स्वतंत्रता का उल्लंघन हुआ है। हमें अशक्त करने और बेदखल करने के लिए हजारों किलोमीटर दूर दिल्ली में रोजाना अनेक निर्णय लिए जा रहे हैं। इस हमले के खिलाफ संसद में आवाज उठाने की सख्त आवश्यकता है। इसमें कहा गया, राज्य के विषयों और भूमि कानूनों में भारी बदलाव के साथ शुरू होकर बाहरी लोगों को अनुबंध उपहार में देकर हमारे संसाधनों की आउटसोर्सिंग की जा रही है यहां तक कि विकास परियोजनाएं भी गैर-स्थानीय लोगों को सौंप दी जाती हैं। आजीविका के साथ-साथ पासपोर्ट का भी अपराधीकरण किया गया है।

# रैंकिंग में डीयू कर रहा है लगातार सुधार

## क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग (स्थिरता) में पहले स्थान पर पहुंचा डीयू- कुलपति

मो. हबीबुल्लाह उर्फ मुन्ना, सद्भावना टुडे संवाददाता

**नई दिल्ली।** दिल्ली विश्वविद्यालय लगातार अपनी रैंकिंग में सुधार कर रहा है। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग (स्थिरता) में डीयू भारत में पहले स्थान पर पहुंच गया है, जबकि पिछले वर्ष यह चौथे स्थान पर था। यह जानकारी दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने दिल्ली विश्वविद्यालय में एक पत्रकार वार्ता के दौरान दी। इस अवसर पर उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय एक मल्टी फ़ैकल्टि बड़ा संस्थान है जो बहुजन को शिक्षा प्रदान कर रहा है। रैंकिंग के मामले में इसकी तुलना छोटे आकार के प्रमुख संस्थानों के साथ करने से पहले इस अंतर को समझना चाहिए। कुलपति ने कहा कि एनआईआरएफ़ रैंकिंग में भी जल्द ही दिल्ली विश्वविद्यायल टॉप 10 में आ जाएगा। इस अवसर पर डीन रैंकिंग मुकेश महलावत ने रैंकिंग में डीयू की उपलब्धियों पर पीपीटी के माध्यम से विस्तृत जानकारी सांझा की।

इस अवसर पर कुलपति ने दाखिलों को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि दिल्ली विश्वविद्यालय में पोस्ट ग्रेजुएट (पीजी) दाखिले के लिए पंजीकरण 25 अप्रैल से शुरू होगा। उन्होंने बताया कि

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पंजीकरण के लिए 25 अप्रैल से पोर्टल खुलेगा। 25 मई तक विद्यार्थी दाखिले के लिए पंजीकरण कर सकेंगे। इसके बाद दाखिले का दूसरा चरण शुरू होगा। कुलपति ने बताया कि सीयूईटी (यूजी) प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात यूजी के दाखिले मई माह के मध्य तक घोषित किए जाएंगे। डीन एडमिशन प्रो. हनीत गांधी ने 2024-25 के लिए दाखिलों पर विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष पोस्टग्रेजुएट के लिए (एनसीवेब सहित) कुल 13500 सीटों, बीटेक के लिए 120 प्रत्येक तथा बीए एलएलबी और बीबीए एलएलबी के लिए प्रत्येक में 60 सीटों पर दाखिले किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि पीजी दाखिलों में इस बार एमए हिन्दू स्टडीज़, एमए पब्लिक हैल्थ, एमए चाइनीज स्टडीज़, एमए कोरियन स्टडीज़ और मास्टर इन फ़ाइन आर्ट्स भी शामिल किए गए हैं। डीन रैंकिंग मुकेश महलावत ने डीयू की क्यूएस रैंकिंग पर विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग (स्थिरता) में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर डीयू का स्थान 2023 में 381-400 में था जबकि 2024 में यह 220 हो गया है। इसी रैंकिंग में भारत में डीयू का स्थान अब पहला है, जबकि पिछले वर्ष यह चौथे स्थान पर था। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2023 में डीयू का वैश्विक स्तर पर रैंक 521-530 था जोकि 2024 में 407 हो गया है। भारत में केंद्रीय विश्वविद्यालय श्रेणी में डीयू पहले रैंक पर है। सबजेक्ट अनुसार रैंकिंग में ब्रॉड सब्जेक्ट रैंकिंग के अनुसार आर्ट्स एंड ह्यूमेनिटीज़ में 210, इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलोजी में 401-450, जीवन विज्ञान और चिकित्सा में 379, प्राकृतिक विज्ञान में 345 और सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन में डीयू की रैंकिंग 178 है। सबजेक्ट अनुसार डीयू का डेव्लपमेंट स्टडीज़ 43वें, एन्थ्रोपलोजी 51-100, इंगलिश 101-150, लेगुएजेज़ 101-150 और सोसलोजी 101-150 के रैंक पर है। उन्होंने बताया कि 9 विषयों में पिछले वर्ष के मुक़ाबले डीयू ने उच्च पायदान प्राप्त किया है, 11 विषयों में पिछले वर्ष के बराबर ही रैंक रहा है जबकि 4 विषयों में डीयू को पहली बार रैंक मिला है। दिल्ली विश्वियालय ने इस बार डेव्लपमेंट स्टडीज़, एंथ्रोपोलोजी, हिस्ट्री, बिजनेस एंड मैनेजमेंट स्टडीज़, बायोलोजिकल साइंस, कंप्यूटर साइंस एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स, लिंगुइस्टिक्स, कैमिस्ट्री और पर्यावरण विज्ञान में पिछले वर्ष के मुक़ाबले काफी अच्छा स्कोर प्राप्त किया है। एनआईआरएफ़ रैंकिंग में दिल्ली विश्वविद्यालय ने सुधार किया है। ओवर आल में 2022 में डीयू 23 वें स्थान पर था जबकि 2023 में यह 22वें स्थान पर आया है। इसी विश्वविद्यालय श्रेणी में यह 2022 में 13वें स्थान पर था जबकि 2023 में 11वें स्थान पर आया है। कुलपति ने कहा कि शीघ्र ही हम एनआईआरएफ़ में टॉप 10 में होंगे।

# केजरीवाल के वकील ने अदालत में कहा - भोजन को लेकर ईडी का रुख 'संकीर्णता' और 'राजनीति' वाला

**सैफुल्लाह सिद्दीकी, सद्भावना टुडे**

**नई दिल्ली।** दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रवर्तन निदेशालय पर जेल में उनके आहार पर 'संकीर्ण% सोच रखने और राजनीति करने का आरोप लगाते हुए शुक्रवार को एक अदालत के समक्ष कहा कि उन्होंने जो खाना खाया वो उनके डॉक्टर द्वारा तैयार किए गए आहार चार्ट के अनुरूप था। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बृहस्पतिवार को अदालत के समक्ष दावा किया था कि केजरीवाल चिकित्सा आधार पर जमानत के लिए जेल में रोजाना आम और मिठाई जैसे उच्च शर्करा वाले आहार ले रहे हैं जबकि उन्हें टाइप-2 डायबिटीज है।

एजेंसी ने दावा किया था कि आप के राष्ट्रीय संयोजक शर्करा वाला भोजन कर रहे हैं ताकि वह अस्वस्थ हो जाएं और चिकित्सा आधार पर जमानत मांग सकें। केजरीवाल की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी ने अदालत से कहा, ''ईडी ने दावा किया है कि मैं जमानत पाने के लिए अपना रक्त शर्करा का स्तर बढ़ाना चाहता हूं। मैं क्या जमानत पाने के लिए लकवा होने का जोखिम उठाऊंगा? मैं जो भी भोजन कर रहा हूं वह गिरफ्तारी से पहले मेरे डॉक्टर द्वारा तैयार आहार चार्ट के अनुसार है। केजरीवाल के जेल में नियमित रूप से आम, मिठाई, आलू-पूरी खाने के ईडी के दावे पर उन्होंने कहा कि उन्हें एक-दो बार ही ऐसा भोजन दिया गया। सिंघवी ने अदालत से कहा, ''आरोप है कि मैं आम खा रहा हूं... घर से 48 बार भोजन भेजा गया जिसमें से केवल तीन बार आम भेजे गए। आठ अप्रैल के बाद कोई आम नहीं भेजा गया। आम को तो ऐसे दर्शाया गया है जैसे उसमें शुगर भरी पड़ी है। उनमें शर्करा का स्तर 'ब्राउन राइस या सफेद चावल से बहुत कम होता है। केजरीवाल को जेल में घर के खाने की अनुमति दी गई है। उन्होंने अदालत से कहा, ''मैं अपनी चाय में केवल 'शुगर फ्री लेता हूं। ईडी कितनी संकीर्ण, राजनीतिक और हास्यास्पद हो सकती है। उनके बयान पूरी तरह झूठे और दुर्भावनापूर्ण हैं। आपका मीडिया में बहुत ज्यादा प्रभाव है, केवल इसलिए आप यह प्रकाशित करवा रहे हैं कि मैं आलू-पूरी खा रहा हूं। जबकि ऐसा भोजन केवल एक बार पूजा के समय भेजा गया था। केजरीवाल ने अपने शर्करा के स्तर में उतार-चढ़ाव के बारे में सप्ताह में तीन बार अपने चिकित्सक से परामर्श लेने की याचिका बृहस्पतिवार को वापस ले ली थी। उन्होंने शुक्रवार को एक नयी याचिका दायर कर हर दिन 15 मिनट के लिए अपने चिकित्सक से परामर्श की मांग की।

# देश के हर मुद्दे पर जनहित में योजनाएं बनाई है भाजपा नें घोषणा पत्र में : संदीप कपूर

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी की पारदर्शिता एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शीर्ष नेतृत्व को दर्शाता है भाजपा का घोषणा पत्र, जी हां ऐसा कहना है कृष्णा नगर वार्ड से भाजपा के निगम पार्षद संदीप कपूर का। भाजपा द्वारा 2024 लोकसभा चुनावों के लिए जारी किए गए घोषणा पत्र पर बात करते हुए संदीप कपूर ने कहा कि सदैव देश के हित में कार्य करने वाली राजनीतिक पार्टी के द्वारा बनाया गया अगले पांच वर्षों तक देश हित के लिए घोषणा पत्र। संदीप कपूर ने बताया की भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में देश के हर मुद्दे पर जनहित योजनाएं बनाई है। संदीप कपूर ने आगे बताया की देश में बढ़ रहे साइबर खतरों को रोकने के लिए भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में यह वादा किया है की भाजपा छोटे व्यापारियों और एमएसएमई को साइबर खतरों और धोखाधड़ी से बचाने के लिए सार्वजनिक साइबर सुरक्षा प्रोडक्ट्स का एक इकोसिस्टम बनाएगी। संदीप कपूर ने आगे बताया की भाजपा ने यह वादा किया है की भाजपा प्राकृतिक एवं सरल जीवन शैली के लिए खादी को एक वैश्विक ब्रांड के रूप में स्थापित करेगी। संदीप कपूर ने आगे बताया की भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में ओबीसी, एससी और एसटी समुदायों के लोगों से यह वादा किया है की भाजपा इन समुदायों के लिए मौजूदा कौशल विकास के अवसरों को बढ़ाएगी और उनके मौजूदा कौशलों का प्रमाणीकरण करेगी। संदीप कपूर ने आगे बताया की भाजपा ने यह वादा किया है की भाजपा प्रत्येक जिले में एक समिति का गठन करके हर जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सभी तक पहुंचाएगी एवं इसके साथ-साथ इस समिति में ओबीसी, एससी और एसटी समुदायों के लोगों का भी उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगी।

# जरूरतमंदों को अस्पताल में मुफ्त इलाज की सुविधा

**नई दिल्ली।** दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति ने कई वर्षों से बंद पड़े बाला साहिब अस्पताल यानी गुरु हरिकृष्ण इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में पांच मई से ओपीडी सेवायें शुरू करने का ऐलान किया और कहा कि अस्पताल में जरूरतमंदों को सेवायें नि:शुल्क प्रदान की जायेंगी। समिति के अध्यक्ष सरदार हरमीत सिंह कालका और महासचिव सरदार जगदीप सिंह काहलों ने शुक्रवार को यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि गुरु हरिकृष्ण इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की समस्याओं का चरणबद्ध तरीके से समाधान किया गया है और ओपीडी सेवायें शुरू करने की तैयारी है। उन्होंने कहा कि पांच मई को गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश, गुरबाणी कीर्तन और अरदास के पश्चात सेवायें शुरू की जायेंगी। उन्होंने बताया कि अस्पताल में आधुनिक मशीनें लगाई जा रही हैं, जिससे विभिन्न बीमारियों के इलाज में सुविधा होगी और पेशेवर डॉक्टर इस अस्पताल में अपनी सेवायें देंगे। उन्होंने कहा कि इससे पहले बाला साहिब अस्पताल में मुफ्त डायलिसिस सेवा चल रही है और अब तक 75 हजार लोग इस सेवा से लाभान्वित हो चुके हैं। गुरुद्वारा बंगला साहिब के मेडिकल सेंटर में 50 रुपये में एमआरआई और सीटी स्कैन किया जा रहा है।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि इस बार दिल्ली फतेह दिवस 27 अप्रैल और 28 अप्रैल को लाल किले पर मनाया जा रहा है, जिसमें पहले दिन कीर्तन दरबार होगा और अगले दिन गुरु की प्यारी निहंग सिंहों की फौज के जत्थे अपने जौहर दिखाएंगे। आयोजन के लिये पांचों तख्तों के जत्थेदार साहिबानों, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति सहित सभी पंथक संगठनों को निमंत्रण पत्र भेजे जा रहे हैं।

# भगवान महावीर के सिद्धांतों की वर्तमान समय में ज्यादा जरूरत: आचार्य प्रज्ञ सागर

**नई दिल्ली।** भगवान महावीर का 2623वां जन्मकल्याणक 21 अप्रैल को धूमधाम से मनाया जाएगा। इसके उपलक्ष्य में प्राचीन अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत की ओर से शुक्रवार को तीन दिवसीय महोत्सव लालकिला प्रांगण में शुरू हुआ। पहले दिन शुक्रवार सुबह झंडारोहण और मंच उद्घाटन के बाद धर्म सभा की गई। इसमें परंपराचार्य प्रज्ञ सागर महाराज और आचार्य श्रुतसागर महाराज ने श्रद्धालुओं को धर्म के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलने की ज्यादा जरूरत है और उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष चक्रेश जैन ने बताया कि महोत्सव के शुभारंभ के दौरान भगवान महावीर का 60 फुट ऊंचा और 21 फुट लंबा पालना स्थापित किया गया। तीन दिन तक श्रद्धालु भगवान महावीर को इस पालने में झुलाएंगे। कार्यक्रम के संयोजक अतुल जैन ने बताया कि धर्मसभा के बाद कक्षा एक से 12वीं तक के बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गईं। बच्चों ने अमृत उद्यान समेत कई अन्य विषयों पर पेंटिंग्स बनाईं। अलग-अलग वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को 21 अप्रैल को पुरस्कृत किया जाएगा। कार्यक्रम के संचालक विवेक जैन ने बताया कि शाम को मुंबई के कलाकारों की टीम ने वैराग्य विषय पर मनमोहक नाटिका प्रस्तुत की। इसमें जैन तीर्थंकर के जीवन चरित्र को प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं के लिए निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। इसमें 200 से ज्यादा लोगों ने स्वास्थ्य जांच कराई। बच्चों के लिए फूड और गेम के स्टॉल्स भी लगाए गए। संयोजक अतुल जैन ने बताया कि शनिवार को सुबह 8:30 बजे धर्मसभा और दोपहर दो बजे आचार्य प्रज्ञ सागर महाराज संगीतमय महावीर कथा करेंगे। इस दौरान लाल मंदिर के प्रबंधक पुनीत जैन, भाजपा के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और भाजपा नेता प्रवीण खंडेलवाल भी महोत्सव में पहुंचे।

# दिल्ली बीजेपी अब नुक्कड़ नाटक के जरिए करेगी चुनाव कैंपेन, जनता से कनेक्शन का खोजा नया तरीका

**शबाना बेगम, सद्भावना टुडे**

**नई दिल्ली।** दिल्ली बीजेपी लोकसभा चुनाव को लेकर जनता तक पहुंचने के लिए अनोखा तरीका अपनाने जा रही है। अब नुक्कड़ नाटक के जरिए दिल्ली बीजेपी जनता के बीच जाएगी और मोदी सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जनता को बताएगी। साथ ही विपक्ष की पार्टियों की पोल खोलेगी। इसी बीच दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा नुक्कड़ नाटकों के ट्रायल शो में पहुंचे।

इस अवसर पर चुनाव संचालन समिति प्रमुख अजय महावर, सह प्रमुख योगिता सिंह एवं श्री गजेंद्र यादव, मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर एवं विक्रम मित्तल के आलावा नुक्कड़ नाटक समिति के प्रमुख सदस्य अनुज शर्मा के साथ ही अनेक पार्टी पदाधिकारी भी उपस्थित थे। वहीं, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने बताया कि नुक्कड़ नाटकों के साथ ही पपेट शो, मैजिक शो, कवि गोष्ठी, म्यूजिक बैंड, फ्लैश मोब के माध्यम से जहां एक ओर प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार की जनहितकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाएंगे तो वहीं अरविंद केजरीवाल सरकार के भ्रष्टाचार एवं कुशासन की भी पोल खोलेंगे। सचदेवा ने कहा कि नुक्कड़ नाटक समाज के हर वर्ग को प्रभावित करता है

और दिल्ली एक कसमोपोलिटन महानगर है, इसलिए हम इस बार नाटकों के कुछ शो अंग्रेजी एवं प्रादेशिक भाषाओं में भी रख रहे हैं। यह सांस्कृतिक अभियान 1 मई को पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिती में प्रारम्भ होगा। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने बताया कि इससे पूर्व रविवार 21 अप्रैल को दिल्ली के आईजीआई स्टेडियम में हम एक भव्य समारोह मंदिर प्रकोष्ठ के माध्यम से कर रहे हैं। इसमें प्रसिद्ध भजन गायक हंसराज रघुवंशी अपनी प्रस्तुति देंगे और विकसित भारत का संदेश दिया जायेगा। नुक्कड़ नाटक समिति के प्रमुख सदस्य अनुज शर्मा ने बताया कि नेशनल स्कूल आफ ड्रामा से प्रशिक्षित कलाकारों की 163 टीमें बनाई गई है। इसमें अनेक रामलीलाओं से जुड़े कलाकार शामिल हैं। इन नुक्कड नाटकों के 1 मई से 23 मई के बीच दिल्ली में 8 हजार से अधिक शो प्रस्तुत किए जाएंगे। जिनका मुख्य फोकस बड़े बाजारों के साथ ही अधिकृत कॉलोनियों, स्लम बस्तियों, गांवों आदि के लोगों के बीच पार्टी का संदेश पहुंचाना रहेगा।

# गैर-संचारी रोगों पर लगाम लगा सकता है स्वस्थ लिवर

**नई दिल्ली।** जीवन शैली को सुधार कर लिवर को स्वस्थ रखा जा सकता है। यदि लिवर स्वस्थ रहा तो गैर-संचारी रोग भी कम होंगे। लेकिन बढ़ते मरीजों की संख्या कुछ और कह रही है। दिल्ली सहित देश में तेजी से फैटी लिवर की समस्या बढ़ रही है।

इसे लेकर विश्व लिवर दिवस के अवसर पर लिवर और पित्त विज्ञान संस्थान (आईएलबीएस) में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें लिवर से जुड़ी बीमारियों को लेकर जागरूकता पर जोर दिया गया तो, रोगी के अनुभवों के माध्यम से लिवर के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने पर गहन मंथन हुआ । कार्यक्रम के दौरान आईएलबीएस के निदेशक और चांसलर डॉ. शिव कुमार सरीन ने कहा कि लिवर शरीर का गुमनाम नायक है, जो चुपचाप महत्वपूर्ण कार्य करता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए लिवर के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि इसका असर हमारे शरीर के विभिन्न पहलुओं पर पड़ता है। लोगों में तेजी से बढ़ते फैटी लिवर रोग की समस्या गैर-संचारी रोगों के साथ जुड़ाव के कारण तेजी से चिंता का कारण बनती जा रही है। नीति आयोग के सदस्य डॉ. विनोद पॉल ने कहा कि लिवर की समस्या को दूर करने के लिए सरकार प्रयास कर रही है। इसके निदान, उपचार और सार्वजनिक जागरूकता अभियानों को बढ़ाया गया है।

उन्होंने कहा कि आईएलबीएस को इस रोग में आ रहे बदलाव को देखते हुए प्राथमिक देखभाल मॉडल विकसित करना चाहिए, जो स्वास्थ्य देखभाल में नवाचार को बढ़ावा देगा। कार्यक्रम के दौरान यकृत कुटुंबकम शीर्षक से आईएलबीएस की वार्षिक रिपोर्ट लॉन्च की गई। अंत में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र की क्षेत्रीय निदेशक साइमा वाजेद ने कहा कि लिवर के बढ़ते रोग वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए चिंता बन गए हैं।

# मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए डीएम ने चलाया 'चुनाव का पर्व देश का गर्व' कैंपेन

**नई दिल्ली।** देश में लोकसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। चुनाव के मद्देनजर प्रचार-प्रसार अभियान भी तेज होता जा रहा है। इसी बीच प्रशासन चुनाव में वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के लिए तमाम कवायद कर रही है। इसी फेहरिस्त में उत्तर पश्चिम जिला निर्वाचन द्वारा युवा वोटरों को जागरूक करने के मकसद से एक फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस फुटबॉल टूर्नामेंट के माध्यम से युवाओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के मकसद से खुद उत्तर पश्चिम जिला मजिस्ट्रेट अंकिता आनंद मौजूद रही। चुनाव का पर्व देश का गर्व के तहत आयोजित इस फुटबॉल टूर्नामेंट में युवाओं की भागीदारी देखने को मिली। इस मौके पर डीएम अंकिता आनंद ने कहा कि लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के उद्देश्य से इस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया, ताकि युवाओं को खेल के साथ वोटिंग की ओर भी ले जाया जा सके। डीएम ने कहा कि जिला निर्वाचन द्वारा वोट प्रतिशत को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने सभी मतदाताओं से अपील करते हुए कहा कि 25 मई को लोग छुट्टी ना करें, बल्कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में मतदान केंद्र पहुंचे। बता दें, सात चरणों में होने वाले 7 लोकसभा सीटों पर दिल्ली में छठे चरण में चुनाव संपन्न किए जाएंगे। दिल्ली की सात लोकसभा सीटों पर 25 मई को चुनाव किए जाएंगे। ऐसे में 25 मई को लोग ज्यादा से ज्यादा मतदान केंद्र पर मतदान करने पहुंचे इसी की कवायद में प्रशासन पूरी तैयारियों के साथ जुट गया है। यही वजह है कि चुनाव आयोग और जिला प्रशासन वोट प्रतिशत बढ़ाने के लिए और युवाओं को वोट के प्रति जागरूक करने के लिए विभिन्न खेलों का सहारा ले रही है।

# आरएमएल में रेफर मरीजों को ही मिलेगी सुपर स्पेशियलिटी सुविधा

**शहनवाज़ सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता**

**नई दिल्ली।** डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में दिल, मस्तिष्क, फेफड़े सहित दूसरे गंभीर रोगों का इलाज करवाने आ रहे मरीजों को भीड़ से जल्द राहत मिलेगी। अस्पताल प्रशासन ने सुपर स्पेशियलिटी विभागों में अनावश्यक भीड़ को कम करने के लिए केवल रेफर मरीजों का इलाज करने का निर्णय लिया है। ऐसा करने से करीब 10 से 12 फीसदी अतिरिक्त गंभीर मरीजों को मौका मिल सकेगा। विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा समय सुपर स्पेशियलिटी विभागों में ऐसे मरीज भी इलाज करवाने आ रहे हैं जिनका उपचार सामान्य विभागों में हो सकता है। यह मरीज डॉक्टर के पास पहुंचते हैं और स्क्रीनिंग के दौरान उन्हें वापस सामान्य विभाग में भेजना पड़ता है। अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर डॉ. अजय शुक्ला ने कहा कि गंभीर मरीजों को राहत देने के लिए केवल रेफर मरीजों का ही सुपर स्पेशियलिटी विभागों में इलाज करने का फैसला लिया है। सामान्य विभाग में इलाज के दौरान यदि डॉक्टर को लगता है तो वह मरीज को सुपर स्पेशियलिटी विभाग के लिए रेफर कर सकते हैं। दूसरे अस्पताल से आने वाले मरीजों को भी रेफर पर्ची साथ में

लानी होगी। बता दें कि अस्पताल के सुपर स्पेशियलिटी विभाग में कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, न्यूरोलॉजी, पल्मोनरी मेडिसिन सहित दूसरे रोगों से जुड़े विभाग की सुविधा दी जाती है।

**08 हजार से ज्यादा मरीज रोजाना आते हैं**

आरएमएल अस्पताल में रोजाना आठ हजार से अधिक मरीज इलाज करवाने आते हैं। ओपीडी पर्ची बनवाने के दौरान मर्ज बताने पर विभाग दिया जाता है। जबकि अब डॉक्टरों की पर्ची के आधार पर सुपर स्पेशियलिटी विभाग की पर्ची बन पाएगी। वहीं सामान्य लक्षण वाले मरीजों को जरूरत के आधार पर विभाग में भेजा जाएगा।

**इसी साल मिलेगा नया ब्लॉक**

अस्पताल में इलाज करवाने आ रहे मरीजों को इसी साल नया सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक मिलेगा। मौजूदा समय में सुपर स्पेशियलिटी विभाग की सुविधाएं ओपीडी भवन में ही मिल रही है। जगह कम होने के कारण मरीजों को इंतजार करने व ठहरने में परेशानी होती है। मरीजों की समस्या को देखते हुए ट्रामा सेंटर के पास नया सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक बनाया जा रहा है। इस ब्लॉक को पहले अप्रैल में शुरू करने का लक्ष्य रखा गया था। हालांकि काम में हो रही देरी के कारण लक्ष्य को बढ़ाकर अगस्त कर दिया गया है। हालांकि सूत्रों का कहना है कि इसमें कुछ और देरी हो सकती है। नया ब्लॉक शुरू होने के बाद मरीजों के लिए अतिरिक्त जगह की व्यवस्था होगी। जरूरत के आधार पर मरीजों के लिए बेड व दूसरी सुविधाएं भी मिल सकेंगी।

# दिल्ली भाजपा मंदिर प्रकोष्ठ 21 अप्रैल को मनाएगा हिंदू नववर्ष उत्सव, 35,000 से अधिक लोग करेंगे हनुमान चालीसा पाठ

**नई दिल्ली।** दिल्ली भाजपा मंदिर प्रकोष्ठ द्वारा 21 अप्रैल को दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में हिंदू नववर्ष उत्सव मनाया जाएगा। इसकी तैयारियों को लेकर भाजपा के मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर एवं मंदिर प्रकोष्ठ के संयोजक करनैल सिंह ने शुक्रवार को जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दिल्ली ही नहीं बल्कि देशभर में लोग अंग्रेजी नव वर्ष मनाते हैं। लेकिन हम चाहते हैं कि हिंदू अपना नववर्ष भी मनाएं। इसी को लेकर दिल्ली भाजपा हिंदू नववर्ष उत्सव का कार्यक्रम धूमधाम से मनाएगी। करनैल सिंह ने आगे कहा कि देश के 31 बड़े महामंडलेश्वर सहित 5,000 से अधिक संत महात्मा इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके अलावा प्रसिद्ध गायक हंसराज रघुवंशी सहित 35,000 से अधिक लोग, इस कार्यक्रम में अलग-अलग जगहों से आने वाले हैं। इस कार्यक्रम में दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा सहित कई केंद्रीय मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के कई अन्य वरिष्ठ नेता भी शामिल होंगे। उनके अलावा मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं को संस्कृति के बारे में जागरूक करना है। साथ ही लोगों को यह संदेश पहुंचाना भी है कि इसकी क्या महत्वता है। कार्यक्रम में एक ही छत के नीचे, 35,000 से अधिक लोग हनुमान चालीसा का पाठ करेंगे। कार्यक्रम में बीजेपी नेता विक्रम मित्तल भी मौजूद रहे।

## एक नजर

### दिल्ली में हिरणकी रोड पर ट्रक ने बाइक सवार को रौंदा

**नई दिल्ली।** राजधानी दिल्ली में तेज रफ्तार का कहर एक बार फिर देखने को मिला है। ताजा मामला बाहरी दिल्ली के अलीपुर थाना इलाके से सामने आया है, जहां हिरणकी रोड पर दर्दनाक सड़क हादसा हुआ है। इस हादसे में एक बाइक सवार की मौत हो गई। बताया जा रहा कि ट्रक की चपेट में आने से युवक की मौत हुई है। उसकी पहचान ताजपुर गांव निवासी दीपक (22 वर्ष) के रूप में हुई है। अलीपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच पड़ताल कर रही है। घटना की सूचना मिलने ही अलीपुर थाना पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। एफएसएल टीम को भी घटनास्थल पर बुलाया गया। हादसे की तमाम नमूने मौके से एकत्र किए जा रहे हैं। वहीं, पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। चश्मदीदों से मिली जानकारी के मुताबिक, वह बाइक पर सवार होकर सड़क से गुजर रहा था। वहीं, बख्तावरपुर गांव की तरफ से बिल्डिंग मटेरियल डस्ट लेकर लोडिंग ट्रक ओवर स्पीड में बुराड़ी की तरफ जा रहा था। तभी हिरणकी रोड पर कश्मीरी कॉलोनी के पास अचानक ट्रक का बैलेंस बिगड़ गया और सड़क के किनारे चल रहे बाइक सवार युवक को अपनी चपेट में ले लिया। ईस घटना में दीपक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। चश्मदीदों के मुताबिक, आरोपी चालक तेज रफ्तार में गाड़ी चला रहा था, जिसके कारण इतना बड़ा हादसा हुआ। आशंका है कि हादसे के समय कार चालक नशे की हालत में था। हालांकि, इसको लेकर अभी किसी भी तरह की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

### पलवल जिले के 118 वर्षीय धर्मवीर हैं प्रदेश में सबसे बुजुर्ग मतदाता

**पलवल/चंडीगढ़।** राज्य में बुजुर्ग एवं युवा मतदाताओं व विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि हासिल करने वालों को जिला चुनाव आईकान बनाया गया है। इनमें पलवल जिले के धर्मवीर हरियाणा में 118 आयु वर्ष के सबसे बुजुर्ग पुरुष मतदाता और सिरसा की 117 वर्षीय बलबीर कौर हैं बुजुर्ग महिला मतदाता हैं। हरियाणा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनुराग अग्रवाल ने शुक्रवार को बताया कि 18वीं लोकसभा के आम चुनाव का पर्व आज से शुरू हो गया है। हरियाणा में 25 मई को छठे चरण के चुनाव होने हैं। पिछले लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए राज्य के बुजुर्ग एवं युवा मतदाताओं व विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि हासिल करने वालों को जिला चुनाव आईकान बनाया गया है। उन्होंने बताया कि पलवल जिले के 118 वर्षीय धर्मवीर हरियाणा राज्य के सबसे बुजुर्ग मतदाता हैं। इसी तरह से सिरसा जिले की बलबीर कौर 117 वर्ष, सोनीपत जिले की भगवानी 116 वर्ष, पानीपत जिले के लक्खीशेक 115 वर्ष, रोहतक जिले की चंद्रो कौर 112 वर्ष, फतेबाद जिले की रानी 112 वर्ष, जिले की रानी 112 वर्ष, कुरुक्षेत्र जिले की अंती देवी, सरजीत कौर व चोबी देवी 111-111 वर्ष की हैं। इसी प्रकार से रेवाड़ी जिले की नारायणी 110 वर्ष, कैथल जिले की फुल्ला 109 वर्ष, फरीदाबाद जिले की चंदेरी देवी 109 वर्ष, जींद जिले की रामदेवी 108 वर्ष, नूंह जिले के हरि 108 वर्ष, झज्जर जिले की मेवा देवी 106 वर्ष, करनाल के गुलजार सिंह 107 वर्ष, हिसार जिले के शदकीन व श्रीराम और चरखी-दादरी जिले की गिना देवी 106-106 वर्ष की मतदाता हैं। उन्होंने बताया कि भिवानी जिले की हरदेई 103 वर्ष तथा यमुनानगर की फूलवती 100 वर्ष की मतदाता हैं। अग्रवाल ने बताया कि एशियाई गेम्स 2023 में निशानेबाज़ी में स्वर्ण पदक विजेता पलक को झज्जर जिले के लिए, 19वें एशियाई गेम्स में निशानेबाज़ी में रजत पदक विजेता आदर्श सिंह को फरीदाबाद जिले के लिए, 19वें सीनियर पैरा पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में तीसरा स्थान प्राप्त करने वाली सुमन देवी व भोपाल में हुई नेशनल स्कूल गेम्स में राज्य की टीम की खिलाड़ी याशिका को पानीपत जिले के लिए तथा 19वें एशियाई गेम्स में निशानेबाज़ी में रजत पदक विजेता सरबजोत सिंह को अंबाला जिले के लिए आइकॉन बनाया गया है। इसी प्रकार विश्व चैंपियन में स्वर्ण पदक विजेता महिला पहलवान सोनम मलिक को सोनीपत जिले के लिए, ओलम्पिक हॉकी खिलाड़ी सुरिंदर कौर को कुरुक्षेत्र जिले के लिए तथा राष्ट्रीय युवा महोत्सव में गायकी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली मुस्कान फतेहाबाद के लिए जिला चुनाव आइकॉन बनाया गया है। प्रदेश में पहली बार मतदान करने वाले युवाओं से आग्रह करते हुए कहा कि युवा जब निर्वाचन प्रक्रिया के साथ जुड़ेंगे तभी वे लोकतंत्र की शक्ति और अपने वोट का महत्व जान पाएंगे। इसलिए युवा इस अवसर को चूकें नहीं क्योंकि 5 वर्षों में एक बार लोकतंत्र का यह पर्व आता है।

# अरविंद केजरीवाल को जान से मारने की साजिश, इसमें एलजी सक्सेना भी शामिलः मंत्री आतिशी

**नई दिल्ली,एजेंसी।** सीएम अरविंद केजरीवाल को जेल में इंसुलिन न दिए जाने को लेकर आप ने बीजेपी पर जमकर हमला बोला। अरविंद केजरीवाल ने इस संबंध में कोर्ट में याचिका भी दायर की थी, जिस पर आज राऊज एवेन्यू कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया है और इसपर सोमवार को फैसला आएगा। वहीं दिल्ली की मंत्री आतिशी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बीजेपी पर गंभीर आरोप लगाया है।

आतिशी ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने इंसुलिन देने के लिए कोर्ट में याचिका दायर की। इस याचिका के विरोधमें दो वकील आए। यह वकील हैं योगेंद्र हांडू और बानी दीक्षित। ये दोनों वकील जेल प्रशासन की तरफ से कोर्ट में पेश हुए। ये दोनों वकील एलजी कार्यालय के स्पेशल काउंसिल हैं। इससे साबित होता है कि इस साजिश में एलजी कार्यालय भी शामिल है। उन्होंने कहा कि जैसे आजादी से पहले अंग्रेज जेल में भगत सिंह के साथ क्रूरता करते थे, वैसे ही आज नरेंद्र मोदी की भाजपा सरकार अपने विरोधी नेताओं के साथ कर रही है। भाजपा और नरेंद्र मोदी सरकार का राजनैतिक हथियार ईडी है। ईडी का काम मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच करना होता है। यहां ईडी अरविंद केजरीवाल के खाने पर सवाल उठा रही है। क्या उनके खाने में पैसे छुपाए हुए थे ?

आतिशी ने कहा कि अरविंद केजरीवाल कोर्ट की हिरासत में हैं तो जेल प्रशासन ने किस नियम के तहत उनकी निजी जानकारी ईडी को दी ? आजाद भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब जेल में किसी को दवा लेने से रोका जा रहा है। यह कोई हत्यारा या अपराधी नहीं बल्कि दिल्ली की जनता के चुने हुए मुख्यमंत्री हैं। नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा सरकार केजरीवाल को दिए जाने वाला इंसुलिन रोककर उन्हें जान से मारने की साजिश रच रहे हैं।

## मनोज तिवारी की जीत का अंतराल होगा पहले से भी ज्यादाः विनोद जायस

**नई दिल्ली।** उत्तर पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी मनोज तिवारी इस बार भी जीतेंगे और जीत की हैट्रिक बनाएंगे। यह कहना है उत्तर पूर्वी दिल्ली जिले भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष ठाकुर विनोद जायस का। विनोद जायस कहते है अपने एक दशक के कार्यकाल में मनोज तिवारी ने जो वादे अपने संसदीय क्षेत्र के लोगो से किये थे, उन्होंने वे सब पूरे किये हैं।

विनोद जायस कहते हैं पांच लाख से भी अधिक वोटों से चुनाव जीतेंगे मनोज तिवारी, उत्तरी पूर्वी लोकसभा क्षेत्र के चुनावी समीकरण पर बात करते हुए विनोद जायस ने कहा कि उत्तरी पूर्वी लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी कन्हैया कुमार की छवि जनता के आगे खराब है वही दूसरी तरफ उत्तर पूर्वी लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के प्रत्याशी दो बार सांसद रहे मनोज तिवारी की छवि जनता के सामने बहुत अच्छी है और इसके कई कारण भी है।

विनोद जायस ने बताया की मनोज तिवारी ने दस वर्षों में पूरे लोकसभा क्षेत्र के लिए बहुत ही बढ़िया काम किया है, वह क्षेत्र की जनता के बीच रहते भी है, जिन लोगों को ऐसा लगता था की मनोज तिवारी अपने भोजपुरी स्टार के दर्जे से नीचे न आ कर लोगों से नहीं मिलेंगे मनोज तिवारी ने उन सभी अटकलों को गलत साबित करते हुए यह दिखा दिया की वह एक नेता और अभिनेता दोनों ही भूमिकाओं को बखूबी से निभा सकते है। विनोद जायस कहते है जिस दिन से कांग्रेस ने अपना प्रत्याशी कन्हैया कुमार को घोषित किया है भाजपा खेमे में अपार खुशी है कन्हैया के साथ उनकी अपनी पार्टी के लोग ही नहीं जुट पा रहे।

## फिल्म अभिनेत्री करिश्मा कपूर ने किया रघुराम ज्वैलर्स का उद्घाटन

**शोएब आलम, संद्भावना टुडे**

**नई दिल्ली।** राजधानी दिल्ली के पीतमपुरा मे रघुराम ज्वैलर्स के उद्घाटन मे पहुंची मशहुर फिल्म अभिनेत्री करिश्मा कपूर. रघुराम ज्वैलर्स का उद्घाटन विधिवत हवन पूजा के साथ किया गया। जहाँ कांग्रेस के पंजाब प्रभारी देवेंद्र यादव और रोहिणी जिला पुलिस के अतिरिक्त उपायुक्त आलोक कुमार पहुंचे। उसके बाद फिल्म अभिनेत्री करिश्मा कपूर ने रिबन काटकर विधिवत शुभारंभ किया।

रघुराम ज्वैलर्स के ओनर राम यादव ने बताया की रघुराम ज्वैलर्स एक प्रतिष्ठित ब्रांड है जिसके पहले शोरूम का उद्घाटन भी करिश्मा कपूर कर चुकी है और आज कपिल बिहार स्थित नए शोरूम का उद्घाटन करिश्मा कपूर के हाथों किया गया है। उद्घाटन के मौके पर पहुंची फिल्म अभिनेत्री करिश्मा कपूर को देखने के लिए उनको चाहने वाले हजारों की संख्या में उपस्थित थे जो अपनी पसंदीदा हीरोइन की एक झलक पाने को बेताब थे। वही रघुराम ज्वेलर्स के उद्घाटन के मौके पर पहुंची करिश्मा कपूर ने भी अपने प्रशंसक को निराश नहीं किया और जमकर

सेल्फी खिंचवाई। उद्घाटन के मौके पर करिश्मा कपूर ने रघुराम ज्वेलर्स की प्रशंसा करते हुए बोली कि इनके ओनर राम यादव प्रशंसा के पात्र हैं और उनके ज्वेलर्स शोरूम में गुणवत्तापूर्ण जेवरात मिलता हैं। रघुराम ज्वेलर्स ग्राहकों के लिए भरोसे का प्रतीक है।

## मानेसर पॉलिटेक्निक में नशे के विरुद्ध छात्रों को दिलाई शपथ

**अशोक कुमार, सद्भावना टुडे संवाददाता**

**गुरुग्राम।** राजकीय बहुतकनीकी संस्थान मानेसर में हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जागरुकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने विद्यार्थियों को नशे के विरुद्ध जागरुक किया। प्राचार्य राजेश जिंदल और धर्मपाल की उपस्थिति में 750 विद्यार्थी मौजूद रहे। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक ओपी सिंह साहब के आदेशानुसार नशे के विरुद्ध जागरुकता कार्यक्रम किए जा रहे हैं। ब्यूरो की पुलिस अधीक्षक पंखुड़ी कुमार के मार्गदर्शन में नशा मुक्त हरियाणा अभियान चलाए गए हैं।

ब्यूरो के जागरुकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने प्रतिबंधित नशे की रोकथाम बारे विस्तारपूर्वक कहा कि स्वापक औषधि एवं मन प्रभावी पदार्थ अधिनियम 1985 के अंतर्गत नशीले पदार्थों का सेवन क्रय विक्रय तस्करी उत्पादन परिवहन आदि पूर्ण रूप से निषेध है। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों से परिचित कराते हुए कहा कि यदि ये मनुष्य के उपभोग के लिए अच्छे होते तो सरकार इन्हें बिक्री के लिए खुला छोड़ देती। नशा मुक्त हो भारत मेरा ऐसी सोच बनानी है, नशे में ग्रस्त हो चुकी युवा पीढ़ी मिलकर सबको बचानी है। है सच्चाई नशा बुराई यह बात जन-जन तक

पहुंचानी है। कविता के माध्यम से नशा मुक्त अभियान का संदेश दिया।

विद्यार्थियों ने बड़ी रूचि के साथ इस कार्यक्रम में सहभागिता की। विद्यार्थियों ने कहा कि वे इस अभियान में सहयोग करेंगे। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की यह पहल है, जिसमे सीधे विद्यार्थियों और नागरिकों को नशे के विरुद्ध कार्यक्रमों में जोडक़र नशा मुक्त हरियाणा अभियान को सार्थक किया जा रहा है। ब्यूरो के जागरूकता प्रभारी डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने कहा कि कोई भी व्यक्ति इस प्रयास से जुड़ सकता है। अंत में शपथ ग्रहण करवाई गई।

## मंडियों में गेहूं की खरीद के साथ उठान पर दें ध्यान : विक्रम सिंह

**शहजाद सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता**

**फरीदाबाद।** गेहूं की खरीद और लिफ्टिंग के बेहतर क्रियान्वयन के लिए शुक्रवार को जिलाधीश विक्रम सिंह की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। विक्रम सिंह ने कहा कि जिला में गेहूं खरीद के साथ-साथ लिफ्टिंग पर अधिक विशेष ध्यान दें। ताकि मंडियों में किसानों और व्यापारियों को किसी भी प्रकार की परेशानी ना आए।

उन्होंने कहा कि डेली बेसिज पर संबंधित एसडीएम मंडी से खरीद और उठान कार्यों की समीक्षा व निरीक्षण करना सुनिश्चित करें। एसडीएम बल्लभगढ़ त्रिलोक चंद की अध्यक्षता में गठित कमेटी बल्लभगढ़, मोहना, फतेहपुर बिल्लौच, खेड़ी कला सहित सभी मंडियों में खरीद, उठान और पेयमेंट संबंधित तमाम व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने के लिए मॉनिटरिंग करेगी। विक्रम सिंह ने कहा कि एफसीआई के अधिकारी को ट्रकों की लोडिंग और अनलोडिंग के कार्यों में तेजी लाना सुनिश्चित करें और रोड मूवमेंट डेली बेसिज पर चेकिंग करते रहें। वहीं जो भी ठेकेदार ढिलाई बरतता पाया जाए, उसके खिलाफ तुरंत कार्यवाही करें। जिलाधीश ने कहा कि सरकारी हिदायतों के अनुसार फसलों के रबी सीजन के दौरान जिला की मंडियों में खरीद का कार्य गत एक अप्रैल से किया जा रहा है और अब लिफ्टिंग के कार्य में तेजी लाना सुनिश्चित करें।

ताकि किसानों, व्यापारियों और आम जनता को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। विक्रम सिंह ने कहा कि जमींदारों, आढ़तियों को मण्डियों में कोई परेशानी नहीं आनी चाहिए।

वहीं प्रत्येक मण्डी और गोदाम में एक प्रशासनिक नोडल अधिकारी और कर्मचारी की नियुक्ति सुनिश्चित करें। जिलाधीश विक्रम सिंह ने बैठक में जिला खाद्य एवं आपूर्ति विभाग,कृषि विपणन बोर्ड, हैफेड, एफसीआई,वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन तथा मंडी एसोसिएशन के पदाधिकारियों से एक एक करके बारीकी से विस्तृत जानकारी ली गई। सरकारी हिदायतों के अनुसार रबी सीजनल फसलों की खरीद फरोख्त और उठान कार्यों के लिए साफ- सफाई, झराई, तुलाई, उठाई, फसलों की आन लाइन प्लेट फार्म प्रणाली के बेहतर क्रियान्वयन के लिए अदायगी सहित तमाम पहलुओं पर बारीकी से समीक्षा की गई। जिला खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की अधिकारी श्रीमती सीमा शर्मा ने खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा रबी की फसलों के खरीद के लिए सरकारी हिदायतों के अनुसार की जाने वाले संभावित क्रियान्वयन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। वहीं एक एक करके अन्य विभागों और कारपोरेशन के अधिकारियों ने उनके विभागों के द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के क्रियान्वयन की बारीकी से जानकारी दी गई। बैठक में एसडीएम बल्लभगढ़ त्रिलोक चंद, डीएफसी श्रीमती सीमा शर्मा, हैफेड,एफसीआई, वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन और कृषि विपणन बोर्ड के अधिकारी तथा मण्डी एसोसिएशन के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

## मैरिज हॉल में लगी आग, मची भगदड़

**फरीदाबाद।** फरीदाबाद के सेक्टर-11 स्थित कर्मवीर गार्डन में बने मैरिज हॉल में गुरुवार की रात एक शादी समारोह के दौरान आग लग गई। आग लगते ही वहां भगदड़ मच गई तो सभी लोग बाहर निकल गए और जान की हानि नहीं। इस घटना में मैरिज हॉल जलकर राख हो गया। मौके पर पुलिस और दमकल विभाग की टीम पहुंची। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार मैरिज हॉल के अंदर लडक़ी की शादी का समारोह चल रहा था,तभी शॉर्ट सर्किट हो गया और अचानक आग लग गई। मौके पर मौजूद लोगों ने आग पर काबू पाने की कोशिश की गई लेकिन सफलता नहीं मिली।जिसके बाद मौके पर पुलिस टीम समेत फायर ब्रिगेड की गाडिय़ां पहुंची और आग पर काबू पाया। लोगों यह भी कहना है कि जैसे ही वहां पर मौजूद सिक्योरिटी गार्ड और कर्मचारियों को आग के बारे में पता चला तो तुरंत प्रभाव से लाइट काट दी गई ताकि यह आग और न फैले। उनका कहना है कि हॉल के अंदर लगभग 100 लोग मौजूद थे। जब आग हल्की थी तो बुझाने की कोशिश की गई।

## आचार सहिता में 50 लाख रुपये की अवैध शराब जब्त, तस्करों के खिलाफ 231 मामले दर्ज

**गुरुग्राम।** मिलेनियम सिटी में आचार सहित लागू होने के बाद से अवैध गतिविधियों पर सख्ती बरती जा रही है। 16 मार्च को जिला में आदर्श आचार संहिता लागू हुई थी। पुलिस विभाग व आबकारी विभाग द्वारा 16 मार्च से 17 अप्रैल तक अवैध शराब के मामले में 206 एफआईआर दर्ज की गई।12098 लीटर अवैध शराब जब्त की गई है। जब्त की गई शराब की कीमत लगभग 277911 रूपए है। उन्होंने बताया कि आबकारी व पुलिस विभाग द्वारा 1 मार्च से 15 मार्च तक अवैध शराब के खिलाफ की गई कार्रवाई के दौरान भी 25 एफआईआर दर्ज करवाई गई थी तथा 1088 लीटर शराब जब्त की गई थी, जिसकी कीमत 220290 रूपए है। नगर निगम गुरुग्राम के अतिरिक्त आयुक्त एवं एमसीसी नोडल अधिकारी डॉ.बलप्रीत सिंह ने कहा कि जिला में संसदीय चुनावों के चलते लागू आदर्श आचार संहिता की गंभीरता से पालना सुनिश्चित की जाए। इसके तहत शराब वितरण, निर्धारित समय के बाद लाऊड स्पीकर बजाने तथा नकदी आदि के मामलों पर कड़ी निगरानी रखी जाए। अगर कहीं पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से संबंधित शिकायत प्राप्त होती है, तो उस पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उक्त निर्देश गुरुवार को अपने कार्यालय में आयोजित बैठक में उपस्थित अधिकारियों को दिए। उन्होंने पुलिस विभाग के अधिकारियों से कहा कि वे नाईट पैट्रोलिंग बढ़ाएं तथा जो शराब की दुकानें या गोदाम निर्धारित समय से अधिक खुले रहते हैं, उन पर कार्रवाई करें। इसके साथ ही अवैध शराब, नकदी तथा लाऊड स्पीकर आदि बजाने के मामलों पर भी निगरानी बनाए रखें। अगर कहीं पर आदर्श आचार संहिता की उल्लंघना होती है, तो उस पर तुरंत कार्रवाई करें। उन्होंने बैठक में उपस्थित एरियावाईज नोडल अधिकारियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्र में निगरानी बढ़ाने के लिए टीमों को निर्देश दें तथा स्वयं भी फील्ड में जाएं।

## फरीदाबादः पति के जिंदा रहते महिला की दलाल ने बनवा दी विधवा पेंशन

**फरीदाबाद।** फरीदाबाद में अधिकारियों और दलालों की मिलीभगत का शुक्रवार को एक हैरतअंगेज मामला सामने आया है। एक महिला के पति के जिंदा रहते हुए दलाल ने महिला की विधवा पेंशन बनवा दी। इसके बाद लगभग डेढ़ साल तक महिला का शारीरिक शोषण करता रहा। बाद में दलाल की नजर महिला की बेटी पर गई, तो उनमें अनबन हो गई।

आरोप है कि इसके बाद आरोपी ने महिला को फर्जी कागजातों से विधवा पेंशन लेने का डर दिखा कर उसे ब्लैकमेल किया। उससे पेंशन कटवाने के नाम पर लाखों रुपए की डिमांड कर दी। महिला ने इसकी शिकायत महिला आयोग से की। शुक्रवार को आयोग की चेयरपर्सन रेनू भाटिया ने इस मामले का खुलासा किया है। रेनू भाटिया ने बताया कि आज वह फरीदाबाद में छेड़छाड़, घरेलू हिंसा, पति-पत्नी के बीच वाद-विवाद के मामलों को सुनवाई कर रही थीं। इसी दौरान महिला के साथ विधवा पेंशन के नाम पर धोखा करने का मामला आया। केस को समझा गया तो मालूम हुआ कि पीड़ित महिला को लाड़ली योजना के तहत अपनी बेटी की पेंशन बनवानी थी, लेकिन महिला की विधवा पेंशन बना दी गई। आयोग की चेयरपर्सन ने कहा कि हैरानी की बात है कि महिला को करीब डेढ़ साल तक यह नहीं मालूम था कि उसकी विधवा पेंशन बनी हुई है। विधवा पेंशन बनवाने के लिए पति का डेथ सर्टिफिकेट और श्मशान घाट की पर्ची भी जरूरी होती है। अब सवाल उठता है कि उन्होंने पति के जिंदा रहते हुए कैसे एक महिला की विधवा पेंशन बनवा दी। ऐसे में साफ होता है कि नगर निगम के पेंशन विभाग में काम करने वाले अधिकारियों द्वारा दलाल के साथ मिलकर बड़ा घोटाला किया जा रहा है। रेनू भाटिया ने आगे बताया कि जिस दलाल के जरिए महिला ने पेंशन बनवाई थी, उसने महिला को ब्लैकमेल करते हुए करीब डेढ़ साल तक उससे शारीरिक संबंध बनाए। दलाल की नजर अब महिला की बेटी पर थी। इसका विरोध महिला ने किया तो बात बिगड़ गई। दलाल ने महिला के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा दी कि यह महिला पति जिंदा होने पर भी विधवा पेंशन ले रही है। रेनू भाटिया ने कहा कि पेंशन का मुद्दा बहुत गंभीर है कि किस तरह अधिकारियों-कर्मियों और दलालों की मिलीभगत से गिरोह सक्रिय है, और इस तरह महिलाओं का शोषण हो रहा है।

## गुरुग्रामः सेना बलों में सेवारत जवान ईटीपीबीएस के जरिए ऑनलाईन कर सकते हैं मतदान

**गुरुग्राम।** जिला से बाहर के जो कर्मचारी गुरुग्राम में ड्यूटी कर रहे हैं, वे फार्म 12ए भरकर अपना पोस्टल बैलेट पेपर यहां मंगवा सकते हैं। जिला में इन कर्मचारियों के लिए भी मतदान केंद्र बनाकर वोट डलवाए जाएंगे। यह बात डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी निशांत कुमार यादव ने शुक्रवार को लघु सचिवालय सभागार में पोस्टल बैलेट पेपर को लेकर आयोजित की गई वर्कशॉप में कही। निशांत कुमार यादव ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग ने वर्ष 2020 से अब नई नीति बनाकर पोस्टल बैलेट पेपर से भी वोट डालने की सहूलियत कर्मचारियों को दी है। जो कर्मचारी दूसरी विधानसभा क्षेत्र के गुरुग्राम जिला में सेवारत हैं और अपनी ड्यूटी कर रहे हैं, वे फार्म 12ए भरकर अपने कार्यक्षेत्र में ही मतदान कर सकते हैं। पोस्टल बैलेट पेपर का निर्वाचन आयोग ने पूरा मैकेनिज्म तैयार कर दिया है और उसकी अनुपालना करते हुए ये वोट डलवाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि हरियाणा के सभी जिलों में कर्मचारियों के फार्म-ए किसी जिममेदार अधिकारी की ड्यूटी लगाकर नौ मई के बाद भिजवाए जाएंगे, जिससे कि समय पर उनके

पोस्टल बैलेट पेपर आ सकें। इसके बाद 22, 23 और 24 मई को स्पेशल बूथ बनाकर इन कर्मचारियों के वोट डलवाए जाएंगे।

डीसी ने बताया कि इसी प्रकार जो जवान सेना तथा अर्द्धसैनिक बलों में सेवारत हैं, वे ईटीपीबीएस पोस्टल पेपर के जरिए ऑनलाइन वोटिंग कर सकते हैं। निर्वाचन आयोग ने सर्विसवोटर.एनआईसी.इन तथा ईटीपीबीएस.इन दो पोर्टल भी सर्विस वोटरर्स के लिए बनाए हैं। जिला में 85 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग, हॉस्पिटल में एडमिट कोविड मरीज और दिव्यांगजन फार्म-12डी भरकर घर बैठे मतदान कर सकते हैं। गुरुग्राम जिला के चारों विधानसभा क्षेत्रों में करीब 29 हजार बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाता हैं। चुनाव का नोटिफिकेशन जारी होने के बाद इन सभी को फार्म-12डी भिजवाया जाएगा, जिसमें वे घर से मतदान करने या बूथ पर जाकर वोट डालने के बारे में अपनी सहमति प्रकट करेंगे। इसके बाद उनको मतदान की सुविधा प्रदान की जाएगी।

# कर्नाटक में कांग्रेस दे रही भाजपा-जद (एस) को कड़ी टक्कर

**कल्याणी शंकर**

कांग्रेस सरकार ने पिछले साल किये गये पांच आवश्यक चुनावी गारंटियों को लागू कर दिया है, जिसमें महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा, शिक्षा के लिए धन में वृद्धि और रोजगार सृजन शामिल था। ये वायदे क्षेत्र के मतदाताओं की विशिष्ट चिंताओं को दूर करने और सामाजिक कल्याण और आर्थिक विकास के लिए पार्टी की प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करने के लिए तैयार किये गये थे। कर्नाटक में लोकसभा चुनाव हो रहे हैं जिसके लिए 26 अप्रैल और 7 मई को सभी 28 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होंगे। कांग्रेस पार्टी और भाजपा-जद(एस) गठबंधन मतदाताओं का समर्थन हासिल करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भाजपा उम्मीदवारों के प्रचार के लिए कई बार राज्य का दौरा कर चुके हैं। भाजपा को पूर्व मुख्यमंत्री येदियुरप्पा का समर्थन प्राप्त है, जो लिंगायत समुदाय के बीच प्रभावशाली हैं जो राज्य में एक महत्वपूर्ण वोट बैंक हैं। यह चुनाव कर्नाटक के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं और इसके इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण हैं। कर्नाटक अतीत में कांग्रेस का गढ़ रहा है। इसने आपातकाल के बाद भी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का समर्थन किया, जो इसके राजनीतिक महत्व का एक प्रमाण है। यह ऐतिहासिक महत्व इंदिरा गांधी और सोनिया गांधी की जीत से स्पष्ट है, दोनों ने कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी के लिए सीटें जीतीं।

ये चुनाव सिर्फ एक प्रतियोगिता नहीं है बल्कि कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी-जनता दल (सेक्युलर) गठबंधन के बीच एक बड़ी लड़ाई है। वे कर्नाटक के राजनीतिक परिदृश्य में भाजपा के दोबारा प्रवेश का प्रतीक हैं। चुनाव नीतिगत प्राथमिकताओं और शासन शैली को बदल सकता है, जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था और समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर संभावित प्रभाव पड़ सकता है। परिणामों का लोगों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा, जिससे शासन प्रक्रिया में उनकी भागीदारी और समझ महत्वपूर्ण हो जायेगी। भाजपा दक्षिण में अपने क्षेत्रीय प्रभुत्व को मजबूत करने, राष्ट्रीय राजनीति में अपनी स्थिति बढ़ाने और दक्षिण भारत में अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने के लिए आगामी कर्नाटक चुनावों में विजयी होना चाहती है। इसके विपरीत, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राज्य में अपनी सरकार की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही, जद(एस) अत्यधिक प्रतिस्पर्धी राजनीतिक माहौल में जीवित रहने का प्रयास कर रहा है। संक्षेप में, जद (एस) राज्य में एक राजनीतिक दल के रूप में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने का प्रयास कर रहा है। कर्नाटक में भाजपा का प्रचार अभियान पीएम मोदी की उपलब्धियों और कांग्रेस की विफलताओं पर केंद्रित है। यह दो प्रभावशाली समुदायों, लिंगायत और वोक्कालिगा को लक्षित करता है, जो इसकी चुनावी रणनीति के लिए महत्वपूर्ण हैं। राज्य में एक प्रमुख समुदाय होने के नाते लिंगायत पारंपरिक रूप से भाजपा का समर्थन करते रहे हैं। इसके विपरीत, एक अन्य प्रभावशाली समुदाय वोक्कालिगा, जद (एस) का मजबूत जनाधाररहा है। भाजपा की चुनावी सफलता के लिए इन समुदायों पर जीत हासिल करना महत्वपूर्ण है। भाजपा को कुछ स्थानीय संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है। 2014 के बाद पहली बार पार्टी में खुली बगावत हुई है। इसकी वजह भाजपा-जेडी(एस) गठबंधन है, जिसे अभी तक अच्छा समर्थन नहीं मिला है। कांग्रेस के भी अपने बागी उम्मीदवार हैं।

कांग्रेस कर्नाटक में एससी, एसटी और मुसलमानों पर भरोसा रख रही है। कांग्रेस सरकार ने पिछले साल किये गये पांच आवश्यक चुनावी गारंटियों को लागू कर दिया है, जिसमें महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा, शिक्षा के लिए धन में वृद्धि और रोजगार सृजन शामिल था। ये वायदे क्षेत्र के मतदाताओं की विशिष्ट चिंताओं को दूर करने और सामाजिक कल्याण और आर्थिक विकास के लिए पार्टी की प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करने के लिए तैयार किये गये थे। एडिना, न्यूज 18 और इंडिया टुडे ग्रुप के तीन चुनाव पूर्व सर्वेक्षण कर्नाटक के आगामी चुनावों के लिए परस्पर विरोधी परिणामों की भविष्यवाणी करते हैं। एडिना का अनुमान है कि कांग्रेस 17 सीटें जीतेगी, और भाजपा-जेडी(एस) गठबंधन को 11 सीटें मिलेंगी। न्यूज 18 का अनुमान है कि एनडीए 25 सीटें जीतेगी, कांग्रेस केवल 3। इंडिया टुडे ग्रुप का अनुमान है कि एनडीए 53फीसदी वोट शेयर के साथ 24 सीटें जीतेगी। इंडिया गठबंधन को 42फीसदी वोट शेयर के साथ केवल चार सीटें मिलने की उम्मीद है। ये सर्वेक्षण वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य का एक स्नैपशॉट प्रदान करते हैं। वे पाठकों को चुनाव के संभावित परिणामों का अनुमान लगाने में मदद कर सकते हैं। 2019 के चुनावों से एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है जब कांग्रेस और जद (एस) सहयोगी थे। भाजपा का लक्ष्य पुराने मैसूर में वोक्कालिगा वोटों को सुरक्षित करना और चुनाव को अपने पक्ष में झुकाना है। पुराने मैसूर क्षेत्र का एक प्रमुख समुदाय वोक्कालिगा पारंपरिक रूप से जद (एस) का समर्थन करता रहा है। इस समुदाय पर जीत हासिल करने की भाजपा की रणनीति में जाति-आधारित पहुंच, विकास के वायदे और जद (एस) सरकार की विफलताओं को उजागर करना शामिल है। सफल होने पर, यह रणनीति चुनाव परिणाम और राज्य के राजनीतिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है। भाजपा ने अपने उम्मीदवारों में एक शीर्ष हृदय रोग विशेषज्ञ, मैसूरु शाही परिवार के सदस्य और एक पूर्व मुख्यमंत्री को मैदान में उतारा है। इसने कुछ नये चेहरों को भी मैदान में उतारा है। कांग्रेस में कई मंत्रियों के रिश्तेदार हैं और ये उम्मीदवार नतीजों पर असर डाल सकते हैं। इसने ताकतवर राजनेताओं के परिवार के सदस्यों को मैदान में उतारकर जोखिम उठाया है। 2008 में जब से भाजपा ने अपनी पहली सरकार बनायी, तब से %गिराने का खेल% जारी है। पैसा और पद अक्सर विधायकों को वफादारी बदलने के लिए लुभाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे राज्य के राजनीतिक परिदृश्य में जटिलता की एक और परत जुड़ जाती है। वोट पाने के लिए दोनों पार्टियां पैसा और उपहार खर्च करने को तैयार हैं। दोनों गठबंधनों की पार्टियों के पास पैसा है और मतदाताओं को लुभाने के लिए सभी को भारी रकम चुकानी पड़ रही है। कई उम्मीदवारों को पार्टी लेबल की चिंता नहीं है। उनकी चिंता सत्ता हासिल करने की है। देखना होगा कि आगामी लोकसभा चुनाव में कर्नाटक के मतदाता किस तरह अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं।

ताजिंदगी हम 'सम्पूर्ण खुशी' के पीछे भागते रहते हैं, लेकिन फिर भी यह हाथ नहीं आती। कोई हैरानी नहीं कि हमारे इस काल में जीवन जीने का ढंग सिखाने वाले, प्रेरणास्पद भाषणकर्ता और आध्यात्मिक बाबाओं की कोई कमी नहीं, जो बारम्बार हमें एक खास तकनीक पर चलने की सीख देते हैं, मसलन, समाधि अभ्यास, श्वास साधक व्यायाम, सचेतन होना इत्यादि'खुश' व 'सफल' होने के मकसद हेतु। लेकिन फिर, यह समझना चाहिए कि खुशी की प्राप्ति कैप्सूल खाने जैसा एक त्वरित उपाय नहीं है, जिसकी खुराक किसी स्व-सहायता पुस्तक या आश्रम अथवा मठ के विशेष सत्रों में भाग लेकर मिले। तथ्य तो यह है कि यदि सच में हम एक आडम्बरहीन, शांतिपूर्ण और संतोष से परिपूर्ण दुनिया की ओर बढ़ना चाहते हैं तो हमें स्व और दुनिया अथवा राजनीति और अध्यात्म के बीच पुल बनाना होगा। उदाहरणार्थ, जरा सोच कर देखिए, जो व्यक्ति भूख, कुपोषण और सिर पर छत न होने से बेहाल है उसको संचेतना सिखाने की बेवकूफी (बुरे अनुभवों से बने संताप या अस्थिर भविष्य की आशंका को नज़रअंदाज कर वर्तमान में जीने की समर्था बनाए)। या फिर उस मानसिक हिंसा के बारे में सोचिए जो एक बेरोजगार युवा के मानस पर चोट करती है, जब नौकरी पाने में कंपनी दर कंपनी से अस्वीकृति झेलनी पड़े, तिस पर आप उसे सबसे अधिक बिकने वाली स्व-सहायता किताब 'मैं ठीक हूं- आप ठीक हैं' जैसी कोई पुस्तक पढ़ने को कहें ताकि 'अच्छा' और 'सकारात्मक' महसूस का भ्रम पाले। यह ठीक उतना ही बेवकूफाना है जब किसी बेघर को या जो पहले से झुग्गी में रह रहा है, उसे न्यूनतम साधनों में जीवन जीने का प्रवचन दिया जाए।

# बुद्धिहीन उपभोक्तावाद की आसक्ति से नहीं मिलेगी खुशी

**अविजित पाठक**

हालांकि हम लोग एक भयावह रूप से हिंसाग्रस्त विश्व में जी रहे हैं, वह जिसमें लगातार होने वाले युद्ध, सैन्यीकरण, नए किस्म का अधिनायकवाद, बढ़ती आर्थिक असमानता, पर्यावरण संकट और सामाजिक कारणों से बना मानसिक संताप इसका चरित्र बन गया है। और मानो इन सबके बीच 'खुशी' ढूंढ़ना एक अनन्त खोज बन गई है। आधुनिक काल में, हमें गुणा-भाग वाली सूक्ष्मता से प्यार हो गया कि तुर्रा यह कि खुशी जैसे उच्च गुणवत्तापूर्ण और आत्मनिष्ठ अनुभव को भी हमने नापने-तोलने की चीज़ बना डाला है। हर साल, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास उपाय नेटवर्क एक सूची जारी कर, विभिन्न मुल्कों का पदानुक्रम तय करता है जो उसके हिसाब से मापने लायक 'खुशी सूचकांक' पर आधारित है इस निर्धारण में सकल घरेलू उत्पाद, आयु दीर्घता, राजकीय कामकाज दक्षता, स्वतंत्रता, सामाजिक संबल (परोपकारी व्यवहार) को गिना जाता है। जहां फिनलैंड पिछले सालों की भांति 'सबसे खुश' देश है वहीं विश्व खुशी रिपोर्ट-2024 में भारत का स्थान 143 देशों में 126वां है। खैर, मैं इस किस्म की रिपोर्ट के गुण-दोषों को पूरी तरह खारिज भी नहीं करता। बेशक, एक उचित मात्रा में सामाजिक सुरक्षा, राज्य द्वारा चलाई जाने वाली सामाजिक भलाई नीतियां, अच्छी मेडिकल सुविधाएं, रोजगार उपलब्धता, संवाद की मौजूदगी वाला समाज और राजनीतिक स्वतंत्रता रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ हद तक संतोष पैदा करते हैं।

तथापि, यहां यह अहसास भी उतना ही जरूरी है कि 'शुद्ध खुशी' जैसी कोई चीज़ नहीं हो सकती, क्योंकि उल्लास के हमारे सबसे बढ़िया लम्हे और संतोष भी कुछ हद तक आशंका से जुड़े होते हैं, मसलन, जो कुछ हमारे पास है उसे खोने का डर, चाहे यह भौतिक संपदा, शरीर की तंदुरुस्ती हो या फिर प्रियजनों का साथ छूटने का भय। ताजिंदगी हम 'सम्पूर्ण खुशी' के पीछे भागते रहते हैं, लेकिन फिर भी यह हाथ नहीं आती। कोई हैरानी नहीं कि हमारे इस काल में जीवन जीने का ढंग सिखाने वाले, प्रेरणास्पद भाषणकर्ता और आध्यात्मिक बाबाओं की कोई कमी नहीं, जो बारम्बार हमें एक खास तकनीक पर चलने की सीख देते हैं, मसलन, समाधि अभ्यास, श्वास साधक व्यायाम, सचेतन होना इत्यादि'खुश' व 'सफल' होने के मकसद हेतु। लेकिन फिर, यह समझना चाहिए कि खुशी की प्राप्ति कैप्सूल खाने जैसा एक त्वरित उपाय नहीं है, जिसकी खुराक किसी स्व-सहायता पुस्तक या आश्रम अथवा मठ के विशेष सत्रों में भाग लेकर मिले। तथ्य तो यह है कि यदि सच में हम एक आडम्बरहीन, शांतिपूर्ण और संतोष से परिपूर्ण दुनिया की ओर बढ़ना चाहते हैं तो हमें स्व और दुनिया अथवा राजनीति और अध्यात्म के बीच पुल बनाना होगा। उदाहरणार्थ, जरा सोच कर देखिए, जो व्यक्ति भूख, कुपोषण और सिर पर छत न होने से बेहाल है उसको संचेतना सिखाने की बेवकूफी (बुरे अनुभवों से बने संताप या अस्थिर भविष्य की आशंका को नज़रअंदाज कर वर्तमान में जीने की समर्था बनाए)। या फिर उस मानसिक हिंसा के बारे में सोचिए जो एक बेरोजगार युवा के मानस पर चोट करती है, जब नौकरी पाने में कंपनी दर कंपनी से अस्वीकृति झेलनी पड़े, तिस पर आप उसे सबसे अधिक बिकने वाली स्व-सहायता किताब 'मैं ठीक हूं- आप ठीक हैं' जैसी कोई पुस्तक पढ़ने को कहें ताकि 'अच्छा' और 'सकारात्मक' महसूस का भ्रम पाले। यह ठीक उतना ही बेवकूफाना है जब किसी बेघर को या जो पहले से झुग्गी में रह रहा है, उसे न्यूनतम साधनों में जीवन जीने का प्रवचन दिया जाए। राजनीतिक व आर्थिक असमानता की नींव को बदले बिना हम अ गैर-बराबर व शोषण करने वाली दुनिया को बदलकर संतोष की ओर नहीं बढ़ सकते। इसी प्रकार जैसा कि 'भारत रोजगार रिपोर्ट 2024' बताती है कि भारतीय युवाओं में 83 प्रतिशत बेरोजगार हैं या जब 'द राइज़ ऑफ बिलिनियर्स राज' नामक शोध-पत्र कहे कि भारत के चोटी के 1 फीसदी अमीरों के हाथ में 40 प्रतिशत आम लोगों के बराबर सरमाया है, तो एक आम भारतीय को महसूस हो रहे संताप, भय और आशंका का अंदाजा लगाना कठिन नहीं। भले ही हमारे पास हज़ारों की संख्या में बाबा, गुरु और स्व-सहायता सिखाने वाले हों, जो मोक्ष प्राप्ति की जुगत के तौर हमें नाना किस्मों की घुट्टी पिलाते हैं, तथापि अलफ सच्चाई है कि हमारा देश नाखुश मुल्क है। संभवत: हमारे समाज में राजनीतिक-आर्थिक पुनर्संरचना किए बिना हम वैसा सामाजिक परिवेश नहीं बना सकते, जो यथेष्ट संतोष से परिपूर्ण लोगों की तरक्की अनुकूल हो। ऐसा नहीं है कि मुझे अर्थपूर्ण, सतत और करुणामय जीवन के लिए आत्मविश्लेषण या अंदरूनी शांति के महत्व से इंकार है। जहां उचित मात्रा में आर्थिक सुरक्षा और राजनीतिक स्वतंत्रता हमारे रोजमर्रा के जीवन को कुछ आरामदायक बनाती है वहीं हम एक अधिक अर्थपूर्ण और शांतिपूर्ण वजूद की ओर नहीं बढ़ सकते, जिसके बिना मैं जीवन को धर्मनिष्ठ नहीं कह सकता। उदाहरणार्थ, यह धर्मनिष्ठा जीवन जीने के ढंग में, गैर-उपभोक्तावाद अवस्था की कला विकसित करने के बारे में हैं। भोजन, आवास, जीवन-पुष्ट शिक्षा, राजनीतिक स्वतंत्रता और विरक्ति न बनाने वाले काम जैसी मूलभूत जरूरतों को लालच के वायरस के मोहपाश में जा फंसने से अलहदा कर पहचानना होगाङ्क वह लालच जिसका बाजार-चालित समाज ने सामान्यीकरण कर दिया है। हां, उस समाज में कभी खुशी नहीं हो सकती जो नवउदारवादी बाजार द्वारा उत्पादित नित नए फैशनों या नई वस्तुओं के प्रति बुद्धिहीन उपभोक्तावाद या निरंतर बढ़ती आसक्ति के सिद्धांत को मान्यता दे। लालसा की यह प्रवृत्ति शांति और धीरज को भंग करती है। इसकी बजाय व्यक्ति में ईर्ष्या, अशांति और पीछे छूट जाने का भयंकर डर बनाती है। इसी प्रकार, दूसरों से जुड़े रहने वाले स्व को विकसित करने की कला भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैङ्क वह स्व जिसे दिखने में साधारण से कामों में भी बहुत आनंद मिलता होङ्क जैसे कि दोस्तों से बिना स्वार्थ मिलना या पहाड़ी इलाके में सैर और प्रकृति की अनंतता की झलकी का अनुभव करना। यह बेशक साधारण लगे लेकिन फिर भी सर्जनात्मकता के अतिरेक से लबरेज होती है, वह जो हमें निरंतर ललचाने और बहकाने वाली बाजारीकरण संस्कृति से उपजी मिथकीय 'सफलता' या 'अति उत्तम और खुशी' वाली जिंदगी की मरीचिका से पीछे भागने की लालसा से मुक्त रहने में मददगार होती है। जीवन की धर्मनिष्ठा को जरूरत है हमारे अस्तित्व में अंतर्निहित उदासी को अंगीकार करने के साहस की। यह 'सब कुछ हमारे बस में नहीं' को स्वीकार करने जैसा है। जो कुछ हम थामकर रखना चाहते हैं वह चलायमान और अस्थाई है। बिना पूर्व सूचना घटित अकल्पनीय दुर्घटनाएं और शोकाकुल प्रसंग हमारे अस्तित्व को झिंझोड़ सकते हैं, मौत की सच्चाई से कोई नहीं बच सकताङ्क जो कि हमारे फुलाए अहम की व्यर्थता की अंतिम परिणति है। संभवत: यह अहसास, हमें कटु बनाने की बजाय, आंसुओं से भरे इस लौकिक अस्तित्व से गुजरने में समर्थ बनाता है।

## विचार

# कई आशंकाओं से भरा खतरनाक रास्ता!

**पंकज चतुर्वेदी**

हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के कनीना में सड़क हादसे में 6 बच्चों की मौत हो गई। 15 से अधिक बच्चे गंभीर रूप से घायल हैं। चूंकि माहौल चुनाव का है सो प्रधानमंत्री से लेकर विधायक तक सक्रिय हो गये। कुछ कार्रवाई होती भी दिख रही है। जो बस सड़क पर चल रही थी, उसका अनफ़िट होने के कारण एक महीने पहले भी 15 हजार का चालान हुआ था। सब जानते थे कि बस चलाने वाला शराब पिए है और उसकी ड्राइविंग बेलगाम थी, इसके बावजूद बस सड़क पर चलती रही। अभी इस दुर्घटना के बाद सड़कों पर बसों की जांच और चालान की औपचारिकता चल ही रही थी कि यमुनानगर में स्कूली बच्चों से भरा एक तिपहिया पलट गया, जिसमें एक बच्ची की मौत हो गई। सात बच्चे अस्पताल में भर्ती हैं। जो वाहन महज तीन सवारी के लिए परमिट प्राप्त है, उसमें 12 से अधिक बच्चे भरे थे। सड़क पर चलने के लिए नाकाबिल वाहन, क्षमता से अधिक बच्चे, बेतहाशा गति, अकुशल चालकङ्क स्कूल जाने वाले बच्चों को लाने ले जाने में लिप्त वाहनों के मामले में सारे देश की यही एक-सी तस्वीर है। दिल्ली के वजीराबाद पुल पर लुडलो केसल स्कूल की बस के दुर्घटनाग्रस्त होने पर 28 बच्चों की मौत के बाद सन ? 1997 में सुप्रीम कोर्ट ने स्कूली बसों के लिए दिशा निर्देश जारी किए थे। इसके अनुसार स्कूल बस पीले कलर की होनी चाहिए। इसके साथ ही उस पर स्कूल बस जरूर लिखा होना चाहिए। बस में फर्स्ट-एड बॉक्स होना जरूरी है और बस की खिड़की में ग्रिल लगी होनी चाहिए। इसके साथ ही बस में आग बुझाने वाला यंत्र भी लगा होना चाहिए। स्कूल बस पर स्कूल का नाम और टेलीफोन नंबर भी होना चाहिए। यही नहीं, दरवाजों पर ताले लगे हों और बस में एक अटेंडेंट भी हो। सबसे बड़ी बात कि अधिकतम स्पीड 40 किलोमीटर प्रति घंटा होनी चाहिए। यह निर्देश दिल्ली में ही हवा-हवाई हैं।

और अब तो स्कूल पहुंचने की राह में बड़ा खतरा ओमनी वैन हैं जिसमें अतिरिक्त सीटें लगा कर क्षमता से दोगुने नहीं तीन गुणा अधिक बच्चे बैठना, उनकी अंधाधुंध स्पीड और सबसे अधिक उसके चालकों का संदिग्ध व्यवहार नए किस्म का खतरा है। देश में आए रोज बच्चों के यौन शोषण में ऐसे वाहन चालकों की संलिप्तता सामने आती है। बसों के मामलों में तो स्कूल को जिम्मेदार बना दिया जा सकता है लेकिन वैन में ओवर लोडिंग, दुर्व्यवहार और दुर्घटना होने पर स्कूल हाथ झटक कर अलग हो जाते हैं। बीते कुछ सालों में बैटरी चालित रिक्शा स्कूल की राह का एक खतरनाक साथी बना है। इसमें बेशुमार संख्या में बच्चों को भरना, प्रतिबंधित या तेज गति के वाहनों वाली सड़क पर संचालन करना और अनाड़ी चालक होने के कारण इनके खूब एक्सीडेंट हो रहे हैं। बीते कुछ सालों में विद्यालयों में बच्चों का पंजीकरण बढ़ा है। स्कूल में ब्लैक बोर्ड, शौचालय, बिजली, पुस्तकालय जैसे मसलों से लोगों के सरोकार बढ़े हैं, लेकिन जो सबसे गंभीर मसला है कि बच्चे स्कूल तक सुरक्षित कैसे पहुंचें? इस पर न तो सरकारी और न ही सामाजिक स्तर पर कोई विचार हो पा रहा है। इसी की परिणति है कि आए रोज देशभर से स्कूल आ-जा रहे बच्चों की जान जोखिम में पड़ने के दर्दनाक वाकिये सुनाई देते रहते हैं। परिवहन को प्राय: पुलिस की ही तरह खाकी वर्दी पहनने वाले परिवहन विभाग का मसला मान कर उससे मुंह मोड़ लिया जाता है। दरअसल बढ़ते पंजीकरण को देखते हुए बच्चों के सुरक्षित, सहज और सस्ते आवागमन पर जिस तरह की नीति की जरूरत है, वह नदारद है। निजी स्कूलों में हजारों बच्चे पढ़ते हैं, स्कूलों की अपनी बसों की संख्या सीमित हैं, औसतन 1000-1500 बच्चे इनसे स्कूल आते हैं। शेष का क्या होता है? यह देखना रोंगटे खड़े कर देने वाला होता हैं। पांच लोगों के बैठने के लिए परिवहन विभाग से लाइसेंस पाए वैन में 12 से 15 बच्चे ठुंसे होते हैं। बैटरी रिक्शे में दस बच्चे 'आराम' से घुसते हैं। दुपहिया पर बगैर हैलमेट लगाए अभिभावक तीन-तीन बच्चों को बैठाए रफ्तार से सरपट होते दिख जाते हैं। रोज एक्सीडेंट होते हैं, क्योंकि यही समय कालोनी के लोगों का अपने काम पर जाने का होता है। ऐसा नहीं है कि स्कूल की बसें निरापद हैं, वे भी 52 सीटर बसों में 80 तक बच्चे बैठा लेते हैं। यहां यह भी गौर करना जरूरी है कि अधिकांश स्कूलों के लिए निजी बसों को किराए पर लेकर बच्चों की ढुलाई करवाना एक अच्छा मुनाफे का सौदा है। ऐसी बसें स्कूल करने के बाद किसी रूट पर चार्टेड की तरह चलती हैं। तभी बच्चों को उतारना और फिर जल्दी-जल्दी अपनी अगली ट्रिप करने की फिराक में ये बस वाले यह ध्यान रखते ही नहीं है कि बच्चों का परिवहन कितना संवेदनशील मसला होता है। इस दिशा में सबसे पहले तो विद्यालय से बच्चे के घर की दूरी अधिकतम तीन से पांच किमी का फार्मूला लागू करना चाहिए। स्कूल का समय सुबह 10 बजे से करना, सुरक्षित परिवहन की व्यवस्था करना, प्रयुक्त वाहनों में ओवरलोडिंग या अधिक रफ्तार से चलाने पर कड़ी सजा का प्रावधान करना, असुरक्षित साधनों के लिए कड़े मानदंड तय करना समय की मांग है।

## एक नजर

### लोकसभा चुनाव : बिहार में पहले चरण के चुनाव में 48.23 प्रतिशत हुआ मतदान

**पटना,एजेंसी।** लोकसभा चुनाव के पहले चरण में बिहार की चार सीटों पर कड़ी सुरक्षा के बीच शुक्रवार को शांतिपूर्ण ढंग से मतदान संपन्न हुआ। बिहार के औरंगाबाद, गया, नवादा एवं जमुई में शाम छह बजे तक कुल 48.23 प्रतिशत मतदान हुआ। निर्वाचन आयोग के अनुसार इस वर्ष 2019 के मुकाबले 5 प्रतिशत कम मतदान हुआ। नवादा में सबसे कम 41.50 फीसदी वोट पड़े। गया में सबसे अधिक 52 मतदान हुआ। औरंगाबाद और नवादा में 50-50 प्रतिशत वोट पड़े। बिहार में 7903 बूथों पर मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। सामान्य बूथों पर सुबह 7 बजे से 6 बजे शाम तक और अति संवेदनशील बूथों पर सुबह 7 बजे से शाम 4 बजे तक मतदान हुआ।

**पहले चरण में कुल 7903 बूथों पर हुआ मतदान**

पहले चरण में कुल 7903 बूथ बनाए गए हैं, जिनमें 5021 बूथों को अति संवेदनशील घोषित किया गया है। 4 सीटों पर कुल 76,01,629 मतदाता हैं। इस चरण में 63.5 फीसदी यानी 5021 बूथ अति संवेदनशील घोषित किए गए हैं। औरंगाबाद में 1701, गया में 995, नवादा में 666 और जमुई में 1659 बूथों को अति संवेदनशील घोषित किया गया है।

**मुख्य मुकाबला आईएनडीआई गठबंधन एवं एनडीए प्रत्याशियों के बीच**

चारों सीटों पर 38 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं । चार सीटों पर मुख्य मुकाबला आईएनडीआई गठबंधन व एनडीए के प्रत्याशियों के बीच है। गया से एनडीए उम्मीदवार जीतराम मांझी है, तो वहीं आरजेडी के कुमार सर्वजीत हैं। जमुई से चिराग पासवान के जीजा अरुण भारती के खिलाफ आरजेडी की अर्चना रविदास के बीच मुकाबला है। नवादा में आरजेडी के श्रवण कुशवाहा और एनडीए के विवेक ठाकुर की टक्कर है। वहीं औरंगाबाद में आरजेडी के अभय कुशवाहा और एनडीए के सुशील सिंह के बीच मुकाबला है।

### कांग्रेस देशहित में विश्वास रखने वाली पार्टीः खड़गे

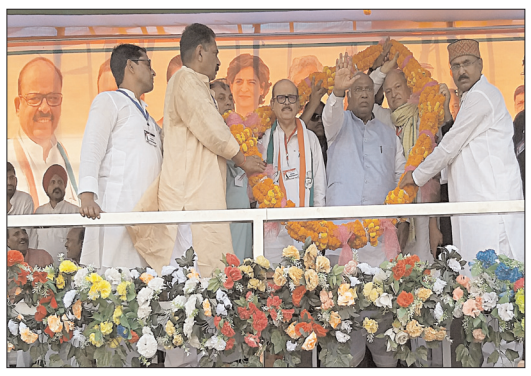

**कटिहार (बिहार)।** कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे शुक्रवार को बिहार के कटिहार जिला पहुंचे। उन्होंने राजेन्द्र स्टेडियम में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र और बिहार में एनडीए की सरकार होने के बावजूद सीमांचल का क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। यहां के कल कारखाने बंद हो गए और शेष बंद होने के कगार पर हैं। यहां के लोग रोजगार को लेकर पलायन कर रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि कुछ लोग कल तक हमारे साथ थे लेकिन आज वे बीजेपी और एनडीए गठबंधन के साथ हैं लेकिन जनता अभी भी आईएनडीआई एलायंस के साथ मजबूती से जुड़ी है। खड़गे ने कहा कि कांग्रेस सिद्धांत वाली पार्टी हमेशा से रही है। हमेशा देशहित में विश्वास रखने वाली पार्टी है। कांग्रेस के दो बड़े नेता इंदिरा गांधी एवं राजीव गांधी ने देश की सेवा करते हुए जान दे दी। कांग्रेस का उसूल होता है, जिनके लिए हम लड़ते रहते हैं और बीजेपी का क्या है आरएसएस के एजेंडे को आगे ले जाना। खड़गे ने जनसभा में मौजूद लोगों से पूछा कि क्या आप चाहते हैं कि इस देश में आरएसएस का एजेंडा चले? यदि नहीं तो कटिहार से कांग्रेस प्रत्याशी तारिक अनवर को भारी बहुमत देकर देश में आईएनडीआई एलायंस को मजबूत करते हुए केंद्र में सरकार बनाये।

### सिकटी थाना पुलिस और एसएसबी जवानों का भारत नेपाल सीमा पर संयुक्त फ्लैग मार्च

**अररिया।** लोकसभा चुनाव के मद्देनजर शुक्रवार को सिकटी थाना पुलिस और आमबाडी कैंप के जवानों की ओर से भारत-नेपाल सीमा पर फ्लैग मार्च किया गया। यह फ्लैंग मार्च सोनापुर से आमबाडी से कुचहा सीमा तक चला। सिकटी थानाध्यक्ष नरेंद्र कुमार प्रसाद ने बताया कि लोकसभा चुनाव से पूर्व फ्लैग मार्च निकालकर मतदाताओं के बीच सुरक्षा और विश्वास की भावना पैदा करने के लिए एसएसबी और सिकटी पुलिस द्वारा भारत-नेपाल सीमा पर फ्लैग मार्च किया गया। उन्होंने बताया कि एसएसबी व सिकटी पुलिस अधिकारियों द्वारा पूरा भारत-नेपाल सीमा पर फ्लैग मार्च किया जा रहा है। फ्लैग मार्च समाज में सुरक्षा और सद्भाव की भावना पैदा करने और स्वतंत्र, निष्पक्ष और भयमुक्त चुनाव सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्र प्रभुत्व अभ्यास का एक हिस्सा है। उन्होंने बताया कि पुलिस और एसएसबी के जवानों ने फ्लैंग मार्च के दौरान गांव के लोगों को मतदान के लिये जागरूक किया गया। कहा कि भारत-नेपाल सीमा पर बसे लोगों को जागरूक करते हुये कहा कि भारत-नेपाल सीमा पर किसी भी असमाजिक तत्वों द्वारा किसी भी प्रकार का कोई गतिविधि हो तो उसकी सूचना प्रशासन को देने की बात कही।

# नवादा लोकसभा क्षेत्र में 40.2 प्रतिशत हुआ मतदान, 8 प्रत्याशियों के भाग्य ईवीएम में कैद

**नवादा,एजेंसी।** कड़ी सुरक्षा के बीच नवादा लोकसभा क्षेत्र के 1796 मतदान केद्रों पर शुक्रवार को मतदान संपन्न हो गया ।कौवाकोल के दनियाँ मतदान केंद्र पर मतदाताओं ने मतदान केंद्र बदल दिए जाने को लेकर वोट बहिष्कार किया था लेकिन काफी देर से चुनाव प्रेक्षक के आग्रह पर मात्र 20 प्रतिशत मतदान सम्पन्न हुए ।मतदाताओं की उदासीनता के कारण नवादा लोकसभा क्षेत्र में मात्र 40.2 प्रतिशत ही मतदान संपन्न कराया जा सका। नवादा, हिसुआ, गोविंदपुर, रजौली, वारसलीगंज तथा शेखपुरा जिले के बरबीघा विधानसभा क्षेत्र को मिलाकर नवादा संसदीय क्षेत्र बनाया गया है, जिसमें 20 लाख 6लाख 124 मतदाताओं को अपना मताधिकार का प्रयोग करना था लेकिन 50त्न से कम मतदाताओं ने अपना मताधिकार का प्रयोग किया है, जिससे स्थिति गंभीर से दिख रही है।

मतदान समाप्त होते ही चुनाव लड़ रहे 8 प्रत्याशियों का ईवीएम में कैद होकर रह गया है,जिसमें प्रमुख एनडीए प्रत्याशी विवेक ठाकुर ,महागठबंधन प्रत्याशी श्रवण कुशवाहा, राष्ट्रीय जनता दल के बागी प्रत्याशी निर्दलीय विनोद यादव ,निर्दलीय प्रत्याशी गुंजन सिंह ,गनौरी पंडित सहित आठ शामिल है। मतदान केंद्र से लौट रहे कई मतदाताओं ने बताया कि उनका नाम पता नहीं चला,जिस कारण वे बिना वोट दिए घर लौट गये ।बीएलओ ने उन्हें पर्ची नहीं दी है ।मतदाता संख्या की पर्ची नहीं दिए जाने के कारण भी भारी संख्या में मतदाताओं ने अपना मताधिकार का प्रयोग नहीं किया,जिसे एक बडी प्रशासनिक खामियां बताई जा रही। नवादा के जिलाधिकारी सहनिर्वाचीअधिकारी प्रशांत कुमार,एसपी कार्तिकेय शर्मा ने कई मतदान केद्रों का दौरा कर हालात का जायजा भी लिया। बूथ स्थानांतरण से आक्रोशित कौआकोल के दनियाँ गांव के महज 20 मतदाताओं ने ही अपना वोट डाले ।कौआकोल संवाददाता के अनुसार नवादा संसदीय क्षेत्र के गोविंदपुर विधानसभा अंतर्गत कौआकोल प्रखण्ड के बूथ संख्या- 328 पर लोकसभा

चुनाव को लेकर मात्र 20 मतदाताओं ने अपना वोट का प्रयोग किया। बताया जाता है कि यहाँ के मतदाताओं में मतदान केंद्र उनके गांव (प्राथमिक विद्यालय दनियाँ) से स्थानांतरित कर दूसरे गांव (उत्क्रमित मध्य विद्यालय पचम्बा) में कर दिए जाने से काफी नाराजगी थी,जिस कारण इस गांव के मतदाताओं ने अपनी नाराजगी का इजहार करते हुए वोट का बहिष्कार कर दिया था। दोपहर साढ़े तीन बजे तक एक भी मतदाताओं ने अपने वोट नहीं डाले। यहां तक कि इस मतदान केंद्र पर किसी भी राजनीतिक दल अथवा निर्दलीय प्रत्यशी का पोलिंग एजेंट (मतदान अभिकर्ता) तक नहीं पहुँच सका था, जिसके बाद स्थानीय प्रशासन लोगों को लगातार प्रेरित करती रही। पीठासीन अधिकारी राज कुमार प्रसाद सिन्हा ने बताया कि बूथ संख्या-328 पर कुल 762 मतदाताओं में 391 पुरूष एवं 371 महिला है। साढ़े तीन बजे तक एक भी मतदाताओं ने अपना वोट नहीं डाले। आब्जर्वर के समझाने जाने पर या मतदान कर्मियों ने अपना कोरम पूरा करने के लिए वोट डालने की खानापूर्ति की।

## पति-पत्नी के शासन में बिहार था बदहाल, हमलोगों ने बिहार के विकास के लिए किया काम : मुख्यमंत्री

**भागलपुर,एजेंसी।** भागलपुर के रंगरा प्रखंड के तिनटंगा में भागलपुर से जदयू उम्मीदवार अजय मंडल के प्रचार के लिए शुक्रवार को आयोजित चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि हमलोगों ने बिहार के विकास के लिए काम किया है। कुछ लोग पत्नी, बेटा और बेटी को आगे बढ़ा रहें हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वे लोग गड़बड़ कर रहे थे इसलिए उन लोगों को हटा दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2005 से पूर्व 15 वर्ष तक पति-पत्नी ने मिलकर बिहार में राज किया था। उन लोगों के कार्यकाल में शाम होते ही लोग घर में कैद हो जाते थे। उस समय कहीं रोड नहीं था। शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था बदहाल हुआ करती थी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र में हमने काम किया। छात्राओं को पोशाक तथा स्कूल जाने के लिए साइकिल दिया गया। उसके बाद सड़कों का निर्माण किया। महिलाओं को स्नातक पास करने पर सरकार की ओर से 50 हजार रुपये दिए जाते हैं। सीएम ने कहा कि पंचायत चुनाव एवं नगर निकाय चुनाव में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। शिक्षक और पुलिस की नौकरी में भी आरक्षण दिया गया। स्वयं सहायता समूह को आगे बढ़ाने के लिए विश्व बैंक से कर्ज लिया। इसको विस्तार करके इसका नाम जीविका किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब शहरी क्षेत्र में भी इसे लागू किया जायेगा। इससे महिलाओं का जीवन स्तर काफी ऊपर हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में प्रति माह 11 हजार लोगों का इलाज किया जाता है। मुख्यमंत्री ने भागलपुर में 1989 में हुए दंगा की चर्चा करते

हुए कहा कि दंगे में अल्पसंख्यकों की क्या हालत हुई थी। दंगा की जांच करवाकर दोषियों को सजा दिलवाई गई। प्रत्येक पीड़ित परिवार को पांच हजार रुपये महीना दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मदरसों को सरकारी किया गया। कब्रिस्तान की घेराबंदी की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब एक लाख कब्रिस्तान की और घेराबंदी की जायेगी। मुख्यमंत्री ने 60 वर्ष पुराने मंदिर के जीर्णोद्धार की बात कही। कार्यक्रम में उदय कांत मिश्रा, पूर्व मंत्री राज्यसभा सदस्य संजय झा, शिक्षा मंत्री सुनील कुमार, गोपालपुर विधानसभा के विधायक गोपाल मंडल, बिहपुर विधानसभा के विधायक इंजीनियर कुमार शैलेंद्र, विधायक ललन पासवान, पूर्व सांसद शैलेश कुमार, राज्यसभा सदस्य कहकशां परवीन, पूर्व सांसद अनिल यादव, लोजपा जिला अध्यक्ष अवधेश पासवान, विपिन बिहारी सिंह, भोला मंडल साकेत बिहारी आदि मौजूद थे। उल्लेखनीय हो कि लोकसभा चुनाव 2024 के दूसरे चरण में भागलपुर में भी वोटिंग होनी है।

## डीएलएड सर्टीफिकेट के नाम पर 1लाख 20 हजार की ठगी, रुपये मांगने पर 5 लाख रंगदारी मांगने का लगाया आरोप

**सहरसा।** जिले के सोनवर्षा राज अस्पताल के लैब टेक्नीशियन अखिलेश कुमार द्वारा डीएलएड करवाने के नाम पर बनमा ईटहरी प्रखंड के पहलाम निवासी मिथिलेश भगत के पुत्र शिवम कुमार से 1 लाख 20 हज़ार रुपये लेकर जाली सर्टिफिकेट डाक से भेज दिया गया। जब रुपये वापस करने के लिए दवाब बनाया तो लैब टेक्नेशियन ने उल्टे बनमा ईटहरी थाना में आवेदन देकर छात्र शिवम कुमार एवं उसके रिश्तेदारों पर पांच लाख रूपये रंगदारी मांगने का आरोप लगाया गया है,जिसका खुलासा पीड़ित छात्र ने भी बनमा ईटहरी थाना में आवेदन देकर मामले का खुलासा किया है। हालांकि दोनो मामलों की पुलिस के द्वारा गहन जांच पड़ताल की जा रही है। जिसके बाद उचित कार्यवाई किए जाने की भरोसा दिया है।

रंगदारी मांगने के आरोपी बनाये गये युवक बनमा ईटहरी थाना क्षेत्र के पहलाम गांव निवासी मिथलेश भगत के पुत्र शिवम कुमार ने पुलिस को आवेदन देकर किया है। बताया कि उसकी मां सीमा कुमारी कस्तूरबा विद्यालय में वार्डेन थी। उसी विद्यालय में लैब टेक्नीशियन अखिलेश कुमार की पत्नी रूपम कुमारी शिक्षिका के पद पर थी। इसी दौरान अखिलेश कुमार से मेरी जान पहचान हुई। इसके बाद अखिलेश मुझसे डीएलएड करवाने के नाम पर कुल एक

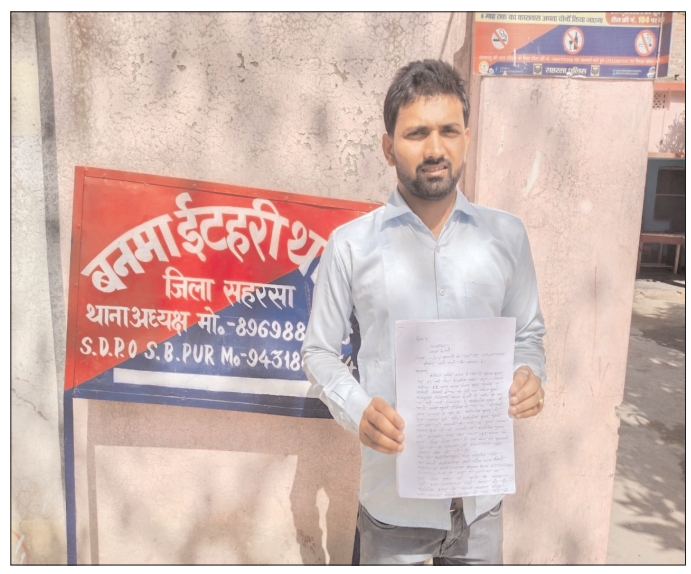


लाख 20 हजार रुपए लिया जो कि मेरी मां के एकाउंट ट्रांसफर कर तथा नकदी भी दी थी। बख्तियारपुर थाना क्षेत्र के शर्मा चौक निवासी जगदीश पंडित के पुत्र अखिलेश कुमार के द्वारा मुझसे सभी रूपये लेने के बावजूद कॉलेज में पैसा जमा नहीं किया गया। जिस कारण मुझे प्रमाण पत्र नहीं मिला। इसके बाद अखिलेश से मैंने पैसा मांगने लगा ।तब वे करीब चार वर्ष से टरकाते रहा। जब पैसा वापस करने का दवाब बनाया तो वे फर्जी सार्टिफिकेट सोनवर्षाराज से पोस्ट आफिस से मेरे घर डाक द्वारा रजिस्ट्री कर दिया गया। इधर मालूम हो कि सोनवर्षाराज पीएचसी में लैब टैक्नीशियन के पद पर काम कर रहे स्टाफ अखिलेश कुमार ने दो अंजान मोबाइल नंबर बताते हुए पहलाम निवासी शिवम कुमार पर पांच लाख रुपए रंगदारी मांगने का आरोप लगाते हुए बनमा ईटहरी थाना में आवेदन दिया है। इस बावत थानाध्यक्ष ज्योतिष कुमार ने बताया कि पुलिस द्वारा दोनो आवेदन की जांच पड़ताल की जा रही है। फर्जी प्रमाण पत्र साबित होने पर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाएगा।

## भगवान विष्णु विराट रूप दर्शन नवाह मानस महायज्ञ के समापन पर निकली भव्य शोभायात्रा

**अररिया,एजेंसी।** फारबिसगंज के केशरी टोला में 09 अप्रैल से चल रहे ग्यारह दिवसीय श्री विष्णु विराट रूप का दर्शन नवाह कीर्तन का समापन शुक्रवार को पूजन हवन के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें भगवान विष्णु के विराट रूप के साथ भगवान गणेश, कार्तिकेय, लक्ष्मी व सरस्वती की प्रतिमाओं को गाजे-बाजे और ढोल नगाड़े की गुंज के बीच भ्रमण कराया गया। रास्ते भर भक्तों द्वारा जय श्री राम एवं विष्णु भगवान समेत माता रानी की जयकारे लगाए गए।

शोभायात्रा छुआपट्टी, सदर रोड, पटेल चौक, हॉस्पिटल रोड होते हुए सीताधार में प्रतिमा विसर्जन के साथ संपन्न हुई। इस दौरान ढाक की थाप व आदिवासी नृत्य आकर्षण का केंद्र बना रहा। वहीं शोभायात्रा में शामिल लोगों ने आतिशबाजी के साथ जमकर अबीर-गुलाल उड़ाया। उधर शोभायात्रा में मजिस्ट्रेट के साथ थानाध्यक्ष समेत सशस्त्र बल के जवान भी जगह जगह तैनात थे। शोभायात्रा विधायक विद्यासागर उर्फ मंचन केशरी, मुख्य पार्षद वीणा देवी, उप मुख्य पार्षद प्रतिनिधि व पार्षद बुलबुल यादव, सशक्त अस्थायी समिति सदस्य मनोज सिंह, संजय केशरी,निर्भय केशरी,राजकुमार केशरी,राजकुमार अग्रवाल, मनोज झा, राम कुमार केशरी, विजय केशरी, सूर्य नारायण केशरी, बिंदी केशरी, विनोद केशरी, पिंटू केशरी,सुरेश केशरी,संजय केशरी,

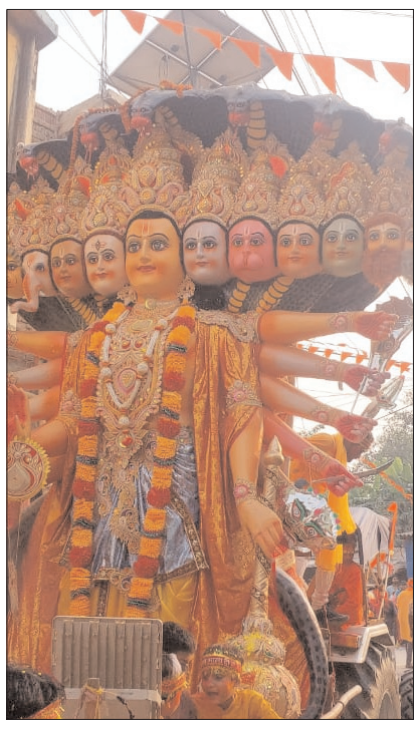

देवेंद्र सिंह, हरि धनावत, विनोद धनावत, प्रमोद साह,संजय अग्रवाल, प्रेम केशरी, अनिल केशरी, विष्णु केशरी,अजय केशरी, सुधीर केशरी, शेखर केशरी,बलराम केशरी, आदि मौजूद थे।

## आम का टिकोला तोड़ने को लेकर दो पक्षों में मारपीट, दर्जन भर लोग जख्मी

**भागलपुर।** जिले के गोराडीह थाना क्षेत्र के सरथ गांव में शुक्रवार को आम का टिकोला तोड़ने को लेकर दो पक्षों में हुए विवाद में दोनों पक्षों से करीब एक दर्जन लोग जख्मी हो गए। बताया जा रहा है कि सारथ निवासी हरिहर पासवान के नाती द्वारा आम का टिकोला तोड़ लिया गया था। इसको लेकर आम गाछ का रखवाली कर रहे जगदीशपुर थाना क्षेत्र के कोला नारायणपुर निवासी बुंटेली यादव के पुत्र पंकज यादव ने टिकोला तोड़ने वाले बच्चे के साथ मारपीट कर दिया। इसकी सूचना जब बच्चे के परिजन को मिली तो वे लोग भी मौके पर पहुंचे और रखवाली कर रहे युवक के साथ मारपीट करने लगे। इसकी सूचना जब युवक के परिजन को मिला तो वे लोग हरिहर पासवान के घर पर पहुंच गए। फिर दोनों तरफ से कहा सुनी होने लगा। देखते ही देखते दोनों तरफ से लाठी डंडे चलने लगे, जिसमें दोनों तरफ से करीब एक दर्जन लोग जख्मी हो गए। घायलों में एक पक्ष से हरिहर पासवान के पुत्र चंदन

पासवान, कुंदन पासवान संजय पासवान, पुत्री सुनीता कुमारी, वहीं दूसरे पक्ष के बुटेली यादव, उनके पुत्र पंकज यादव, लालू यादव, राजकुमार यादव शामिल है। सभी घायल को इलाज के लिए जगदीशपुर स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल को बेहतर इलाज के लिए मायागंज भेजा गया। मामूली रूप से जख्मी का उपचार करने घर भेज दिया गया। इसको लेकर एक पक्ष से जगदीशपुर थाना में आवेदन दिया गया तो दूसरे पक्ष से गोराडीह थाना में आवेदन दिया गया है।

## स्वीप कोषांग के तत्वाधान में मतदान जागरूकता कार्यक्रम

**मधुबनी,एजेंसी।** मुख्यालय सदर क्षेत्र के बीएम कॉलेज रहीका में शुक्रवार को सहायक निर्वाची पदाधिकारी के नेतृत्व में जिला स्वीप कोषांग के तत्वाधान जागरूकता को कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर सदर एसडीओ अश्वनी कुमार ने छात्र-छात्राओं को निर्वाचन से संबंधित सभी आवेदन की विस्तारपूर्वक जानकारी साझा किया। इस का वैषयिक मेरा पहला वोट देश के लिए अभियान के तहत विस्तृत विमर्श मंथन हुई। लोकसभा आम निर्वाचन में मतदान प्रतिशत में वृद्धि को जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। सदर एसडीओ अश्वनी कुमार द्वारा सभी छात्र व छात्राओं के बीच मतदान के महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में प्रत्येक नागरिक को चुनने तथा चुने जाने का अधिकार प्राप्त है। बहुमूल्य मतों का प्रयोग कर हम अपने देश के लिए बेहतर सरकार का निर्माण कर सकते हैं। सरकार हमारे विकास के लिए प्रगतिशील नीतियां बनाती हैं। नागरिकों जिनकी आयु अठारह वर्ष पूरी हो गई।

मतदाता सूची में नाम दर्ज है। उन्हें स्वत: मतदान का अधिकार प्राप्त हो जाता है। सभी युवाओं के जोश और ऊर्जा से जिला के दोनों संसदीय क्षेत्र बिहार में सबसे अधिक वीटीआर प्राप्त करने वाला बनेगा। सभी छत्राओं से लोक सभा आम निर्वाचन में सभी कामों को छोड़कर

पहले मतदान करें तथा अपने घर पड़ोस के सभी मतदाताओं से मतदान की अपील करने को कहा। मत देकर सेल्फी वॉट्सएप ग्रुप,इंस्टाग्राम या अन्य सोशल मीडिया पर भी पोस्ट करने की अपील किए। कार्यक्रम में सभी छात्रों को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अद्यतन आईटी.एप्लिकेशन, सी-विजिल एप्प, सक्षम एप्प, वोटर हेल्पलाइन एप्प,क्नो योर कैंडीडेट एप आदि का इस्तेमाल करने के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी। अवसर पर छात्र- छात्राओं को मतदान हेतु शपथ दिलाया गया।

## एक नजर

### इजरायल का ईरान पर मिसाइल हमला

**तेहरान,एजेंसी।** इजरायल ने शुक्रवार को ईरान पर मिसाइलों से हमला किया। अमेरिकी अधिकारियों ने मीडिया से इसकी पुष्टि की है। ईरानी मीडिया ने कहा कि इस्फहान के मध्य प्रांत में विस्फोट की गूंज सुनी गयी हैं और कई शहरों में उड़ानें निलंबित कर दी गईं। इजरायल की ओर से किए गए मिसाइल हमले के बाद देश की वायु रक्षा प्रणालियों ने तीन ड्रोन नष्ट कर दिए। सीबीएस न्यूज की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि इस्फहान प्रांत में एक बड़े हवाई अड्डे, एक प्रमुख मिसाइल उत्पादन परिसर और कई परमाणु स्थलों का घर है। ईरान के राज्य प्रसारक आईआरआईबी ने हालांकि उन सभी रिपोर्टों को खारिज कर दिया है जिनमें कहा जा रहा है कि इस्फहान प्रांत सुरक्षित नहीं है। इजरायल ने कहा था कि गत शनिवार को उसके खिलाफ ईरानी हमले का वह माकूल जवाब देगा। जिसके बाद से ईरान हाई अलर्ट पर है। ईरान की ओर से किए गए हमलों में उसने इज़राइल पर 300 से अधिक ड्रोन और मिसाइलें दागी थीं। एक अन्य रिपोर्ट में कहा गया है कि ईरान के ओर से किए गए सभी हमलों को अमेरिका, ब्रिटेन और अन्य सहयोगियों के मदद से इजरायली हवाई सुरक्षा प्रणाली ने हवा में ही निष्क्रिय कर दिया था। गौरतलब है कि ईरान ने इजरायल पर हमला प्रतिशोध की वजह से लिया था, जिसमें एक अप्रैल को सीरिया पर किए गए हमले में वरिष्ठ ईरानी कमांडर मारे गए थे।

### ईरान के तेहरान, इस्फहान, शिराज की उड़ानें रद्द

**तेहरान।** ईरान की राजधानी तेहरान तथा इस्फहान और शिराज शहरों की उड़ानें अनिश्चित काल के लिए रद्द कर दी गयी हैं। ईरान हवाई अड्डों और एयर नेविगेशन कंपनी के जनसंपर्क प्रमुख रेजा कारघ्यार ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। ईरानी समाचार एजेंसी मेहर ने कारघ्यार के हवाले से कहा कि तेहरान, इस्फहान और शिराज के हवाई अड्डों के साथ-साथ देश के पश्चिम, उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में हवाई अड्डों के लिए भी उड़ानें रद्द कर दी गयी हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि ईरान की राजधानी तेहरान में इमाम खुमैनी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा स्थानीय समयानुसार सुबह 10:30 बजे तक सेवाओं का संचालन बंद रहेगा।

### रुस में लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त

**मॉस्को।** रूस की वायुसेना का एक लड़ाकू विमान टीयू-22एम3 दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय ने कहा कि लड़ाकू विमान मिशन पूरा करने के बाद अपने घरेलू हवाई क्षेत्र कर ओर लौटते समय स्टावरोपोल क्षेत्र के क्रास्नोग्वर्डेस्की जिले में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मंत्रालय ने कहा है कि बचाव दल ने चालक दल के तीन सदस्यों को लडाकू विमान से निकाल लिया है और एक अन्य पायलट की तलाश अभी भी जारी है। विमान में गोला-बारूद नहीं था जिससे दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्र में कोई अन्य बड़ी हानि नहीं हुई। प्रारंभिक जांच निष्कर्षों से पता चलता है कि दुर्घटना विमान में आयी तकनीकी खराबी के कारण हुई थी।

### भारत में किसी चुनाव पर्यवेक्षक को नहीं भेजा जा रहा- अमेरिका

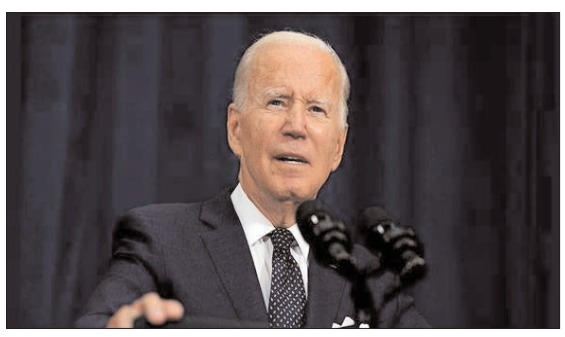

**वाशिंगटन।** अमेरिका के विदेश मंत्रालय ने भारत में जारी लोकसभा चुनावों के बीच कहा कि वह वहां कोई चुनाव पर्यवेक्षक नहीं भेज रहा है, लेकिन वह भारत में साझेदारों के साथ अपने सहयोग को गहरा और मजबूत करने के लिए उत्सुक है। विदेश मंत्रालय के उपप्रवक्ता वेदांत पटेल ने बृहस्पतिवार को अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मुझे अमेरिका द्वारा कोई पर्यवेक्षक भेजे जाने की जानकारी नहीं है। हम भारत जैसे उन्नत लोकतांत्रिक देशों में चुनावों के मामले में आम तौर पर ऐसा नहीं करते हैं। उन्होंने कहा, हम भारत में अपने साझेदारों के साथ अपने सहयोग को गहरा और मजबूत करने के लिए निश्चित रूप से उत्सुक हैं। भारत में लोकसभा चुनाव के पहले चरण के तहत शुक्रवार को देश की 102 सीट पर मतदान हो रहा है। उन्होंने एक सवाल के जवाब में रूस-यूक्रेन संघर्ष या गाजा में जारी युद्ध के मद्देनजर शांति स्थापित करने में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत विश्व के नेताओं द्वारा भूमिका निभाने के विचार का स्वागत किया।

# केन्या के राष्ट्रपति ने की विमान दुर्घटना में सैन्य प्रमुख के शहीद होने की पुष्टि

**नैरोबी,एजेंसी।** केन्या के राष्ट्रपति विलियम रूटो ने गुरुवार को देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में शहीद हुए 10 वरिष्ठ कमांडरों में सैन्य प्रमुख फ्रांसिस ओगोला की मृत्यु की भी पुष्टि की। श्री रूटो ने कहा कि केन्या रक्षा बल (केडीएफ) के प्रमुख ओगोला 11 अन्य सैन्य कर्मियों के साथ केडीएफ ह्युई हेलीकॉप्टर पर सवार थे। हेलीकॉप्टर ने एल्गेयो मारकवेट काउंटी के एक स्थानीय प्राथमिक विद्यालय से उड़ान भरी थी, जब अपराह्न करीब 2:20 बजे हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया और आग की लपटों में घिर गया।

राष्ट्रपति ने एक टेलीविजन संवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए कहा कि दुर्घटना में सेना प्रमुख ओगोला समेत 10 सैन्य अधिकारी शहीद हो गए हैं। जबकि अन्य दो गंभीर रूप से घायल हो गए हैं और अस्पताल में भर्ती हैं। उन्होंने कहा, यह राष्ट्र के लिए बहुत दुखद क्षण है। उन्होंने कहा कि सेना प्रमुख ओगोला डाकुओं से लड़ने के लिए अशांत क्षेत्र में तैनात सैनिकों से मिलने और स्कूल के नवीकरण कार्य का निरीक्षण करने के लिए कल सुबह नैरोबी से रवाना हुए थे। श्री रुतो ने कहा कि केन्या वायु सेना ने दुर्घटना का कारण पता लगाने के लिए एक विमानन जांच दल का गठन किया है और उसे दुर्घटनाग्रस्त क्षेत्र में भेजा है। श्री रूटो ने शहीद जनरल के जीवन और विशिष्ट सैन्य करियर के सम्मान में शुक्रवार से तीन दिवसीय शोक की घोषणा की। जिन्होंने न

केवल पद पर रहते हुए बल्कि सक्रिय सैन्य कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए जीवन न्यौछावर किया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि केडीएफ हेलीकॉप्टर दो किलोमीटर दूर दुर्घटनाग्रस्त हो गया और अशांत एल्गेयो मारकवेट-पश्चिम पोकोट सीमा के पास एक क्षेत्र से उड़ान भरने के कुछ ही क्षण बाद उसमं आग लग गई। एक प्रत्यक्षदर्शी इवांस किपकोसगेई ने कहा, हमने हेलिकॉप्टर को नीचे आते देखा, और जब हम घटनास्थल पर पहुंचे, तो हमने हेलिकॉप्टर को आग की लपटों में घिरा पाया। उन्होंने कहा कि केरियो घाटी में तैनात केडीएफ अधिकारियों द्वारा साइट को तुरंत घेर लिया गया था। सेना प्रमुख ओगोला की मृत्यु पर तंजानिया के राष्ट्रपति सामिया सुलुहु हसन ने सोशल मीडिया एक्स पर राष्ट्रपति रुतो को शोक संदेश भेजा। उन्होंने कहा, मैं केन्या के सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ, राष्ट्रपति विलियम रूटो, सभी केन्याई लोगों और दुर्घटना में अपनी जान गंवाने वाले सभी लोगों के परिवारों, रिश्तेदारों और दोस्तों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करती हूं।

# इजराइल के हमले से ईरान बौखलाया, परमाणु हमले की तैयारी में

**तेहरान,एजेंसी।** इजराइल ने ईरान से कुछ दिन पुराना हिसाब-किताब बराबर करने के लिए एयर स्ट्राइक की है। ईरान के एयरपोर्ट पर तेज धमाके हुए हैं। इजराइल के मिसाइल हमले से ईरान बौखला गया है। उसने परमाणु हमले की तैयारी शुरू कर दी है। अमेरिका के शीर्ष अधिकारियों के हवाले से ईरान की फारस न्यूज एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में इजराइल के हमले की जानकारी दी है।

फारस न्यूज एजेंसी ने दावा किया है कि ईरान के शहर इसाफान के एयरपोर्ट में धमाके की आवाज सुनी गई है। हालांकि विस्फोट की वजह का अभी तक खुलासा नहीं हुआ है। उल्लेखनीय है कि ईरान के कई परमाणु ठिकाने इसाफान प्रांत में ही स्थित हैं। इनमें ईरान का यूरेनियम संवर्धन का प्रमुख केंद्र भी है। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के हवाई क्षेत्र में कई फ्लाइट्स के मार्ग बदले गए हैं। उल्लेखनीय है कि कुछ समय पहले ईरान ने इजराइल पर 300 से ज्यादा मिसाइल और ड्रोन से हमला किया था। दरअसल ईरान के दमिश्क स्थित दूतावास पर हमला हुआ था। इस हमले में ईरान की सेना के दो शीर्ष कमांडर समेत सात लोगों की मौत हुई थी। ईरान ने हमले का आरोप इजराइल पर लगाया था। इसी हमले के जवाब में ईरान ने इजराइल पर हमला किया था। साथ ही चेतावनी दी थी कि अगर इजराइल ने हमला किया तो वह और ताकत के साथ पलटवार करेगा। ईरान और इजराइल के बीच तनाव का यह मसला संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भी उठ चुका है। इजराइल ने मांग की थी ईरान की सेना को आतंकी संगठन घोषित किया जाए। इस पर ईरान ने अमेरिका से कहा था कि वह हम दोनों के बीच में न आए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने दोनों देशों से अपील की थी कि वे शांति और संयम से काम लें। पश्चिम एशिया एक और युद्ध झेलने की स्थिति में नहीं है। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में दो इजरायली रक्षा अधिकारियों के हवाले से दावा किया है कि इजराइली सेना ने शुक्रवार तड़के ईरान पर हमला किया। यह पांच दिन पहले हुए हमले पर इजराइल की पहली सैन्य प्रतिक्रिया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि तीन ईरानी अधिकारियों ने पुष्टि की कि शुक्रवार तड़के मध्य ईरान के इसाफान शहर के पास सैन्य हवाई अड्डे पर हमला हुआ। मगर इन अधिकारियों ने यह नहीं बताया कि हमला किस देश ने किया। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स से संबद्ध ईरानी समाचार एजेंसी फारस न्यूज ने कहा कि इस शहर के नागरिक हवाई अड्डे के पास विस्फोटों की आवाज सुनी गई। इजराइल की सेना ने इस घटनाक्रम पर आधिकारिक टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है। सामरिक विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान और इजराइल के बीच छिड़ी वर्चस्व की जंग से टकराव बढ़ेगा। फारस न्यूज एजेंसी का कहना है कि ईरान के सेना प्रमुख मेजर जनरल अब्दुल रहीम मौसवी ने बुधवार को कहा था कि अगर हमला होता है देश चुप नहीं बैठेगा। अल जजीरा न्यूज चैनल के अनुसार हमले के बाद कई ईरानी शहरों में उड़ानें निलंबित कर दी गईं। सीरिया और इराक से भी विस्फोट की खबरें आ रही हैं।

## फलस्तीन को संयुक्त राष्ट्र की पूर्ण सदस्यता देने के प्रस्ताव का अमेरिका ने किया वीटो

**संयुक्त राष्ट्र,एजेंसी।** फलस्तीन को संयुक्त राष्ट्र की पूर्ण सदस्यता प्रदान करने संबंधी प्रस्ताव के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में अमेरिका के %वीटो% शक्ति का इस्तेमाल करने की इजराइल ने सराहना की, लेकिन फलस्तीन ने इसे अनुचित और अनैतिक करार देते हुए इसकी आलोचना की है। सुरक्षा परिषद में एक मसौदा प्रस्ताव पर बृहस्पतिवार को मतदान हुआ। इसके पारित होने पर 193 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र महासभा यह सिफारिश करती कि फलस्तीन को इस वैश्विक संस्था के सदस्य के रूप में स्वीकार किया जाए।

सुरक्षा परिषद के कुल 15 सदस्य देश हैं। प्रस्ताव के समर्थन में 12 वोट पड़े, जबकि स्विटजरलैंड और ब्रिटेन ने मतदान से दूरी बना ली और अमेरिका ने वीटो किया। मसौदा प्रस्ताव को पारित करने के लिए इसके समर्थन में सुरक्षा परिषद के कम से कम नौ सदस्यों के वोट देने की जरूरत थी और यूएनएससी के पांच स्थायी सदस्य देशों में से किसी को भी अपनी वीटो शक्ति का इस्तेमाल नहीं करना था। सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य देश चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका हैं। पूर्ण सदस्य देश का दर्जा प्राप्त करने की फलस्तीन की कोशिश 2011 में शुरू हुई थी। फलस्तीन अभी गैर-सदस्य पर्यवेक्षक देश है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2012 में उसे यह दर्जा प्रदान किया था। यह दर्जा फलस्तीन को वैश्विक संस्था की कार्यवाहियों में भाग लेने की अनुमति देता है लेकिन यह संयुक्त राष्ट्र में लाये जाने वाले प्रस्तावों पर मतदान नहीं कर सकता। संयुक्त राष्ट्र में एक और गैर-सदस्य पर्यवेक्षक देश होली सी है जो वेटिकन का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

## यूएई में रिकॉर्ड तोड़ बारिश, फिलीपींस के तीन नागरिकों की मौत

**अबू धाबी,एजेंसी।** संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में भारतीय दूतावास ने शहर में इस सप्ताह हुई जबरदस्त बारिश के बाद परिचालन सामान्य होने तक दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से यात्रा करने वाले भारतीय यात्रियों को गैर-जरूरी यात्रा को पुनर्निर्धारित करने का परामर्श जारी किया है। संयुक्त अरब अमीरात इस सप्ताह हुई जबरदस्त बारिश से उबरने की कोशिश कर रहा है जिसके कारण दुबई और आसपास के इलाकों में बड़े पैमाने पर बाढ़ आ गई है। दूतावास ने कहा है कि संयुक्त अरब अमीरात के अधिकारी स्थिति को सामान्य करने के लिए 24 घंटे काम कर रहे हैं। इस बीच हवाई अड्डे के अधिकारियों ने सलाह दी है कि यात्री उड़ानों की प्रस्थान तिथि और समय के संबंध में संबंधित एयरलाइन से पुष्ट सूचना मिलने के बाद ही हवाई अड्डे से यात्रा कर सकते हैं। परामर्श में कहा गया है कि इस सप्ताह की शुरुआत में संयुक्त अरब अमीरात में प्रतिकूल मौसम की स्थिति के कारण दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उड़ानों की संख्या को अस्थायी रूप से सीमित कर दिया गया है।

दूतावास ने परामर्श में कहा, ''दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से यात्रा करने वाले या वहां से आने वाले

भारतीय यात्रियों को परिचालन सामान्य होने तक गैर-आवश्यक यात्रा को पुनर्निर्धारित करने की सलाह दी जाती है।'' इसमें कहा गया है, ''दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर भारतीय नागरिकों की सहायता के लिए दुबई में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने 17 अप्रैल से आपातकालीन हेल्पलाइन नंबर की शुरुआत की है। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में इस सप्ताह रिकॉर्ड तोड़ बारिश के कारण दुबई में काम करने वाले फिलीपींस के तीन नागरिकों की मौत हो गयी है। प्रवासी श्रमिक विभाग (डीएमडब्ल्यू) के प्रभारी अधिकारी हंस कैकडैक ने बताया कि दो महिलाओं की कार के अंदर फंस जाने के बाद दम घुटने से मौत हो गयी, जबकि एक व्यक्ति की मौत उसके वाहन के सिंकहोल से टकराने के बाद हुई। उन्होंने बताया कि दुबई और अबू धाबी स्थित उनका कार्यालय फिलीपींस दूतावास और महावाणिज्य दूतावास के साथ मिलकर काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि दुबई में फिलीपीन्स के 648,929 नागरिक हैं। किसी ने भी स्वदेश वापसी का अनुरोध नहीं किया है।

## तुर्किए में 5.6 तीव्रता का आया भूकंप, कोई हताहत नहीं

**अंकारा।** तुर्किए में गुरुवार को 5.6 तीव्रता के भूकंप का तेज झटका महसूस किया गया। देश की आपदा प्रबंधन एजेंसी ने यह जानकारी दी। आपदा प्रबंधन एजेंसी के मुताबिक, राजधानी अंकारा से लगभग 450 किलोमीटर पूर्व में स्थित टोकाट प्रांत के सुलुसराय शहर में 5.6 तीव्रता का भूकंप आया, जिससे कुछ इमारतें जमींदोज हो गईं। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। किसी के हताहत होने के बारे में अभी तक कोई सूचना नहीं है। तीन सप्ताह पहले शक्तिशाली भूकंप से तुर्किये-सीरिया क्षेत्र में भीषण तबाही हुई थी।

देश की आपदा प्रबंधन एजेंसी ने कहा है कि सोमवार का भूकंप मालत्या प्रांत के येसिलर्ट शहर में केंद्रित था। येसिलर्ट के महापौर मेहमत सिनार ने 'हैबरटर्क टेलीविजन' को बताया कि कस्बे में कुछ इमारतें ढह गई हैं। मालत्या तुर्किए के उन 11 प्रांतों में शामिल था, जो 7.8 तीव्रता के भूकंप से बुरी तरह प्रभावित हुए थे। छह फरवरी को आए भूकंप से दक्षिणी तुर्किए और उत्तरी सीरिया के कुछ हिस्सों में भारी तबाही हुई। भूकंप से अब तक दोनों देशों में

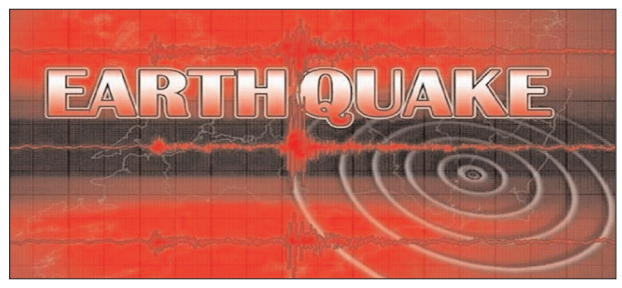


48,000 से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है और तुर्किए में 1,73,000 इमारतों को गंभीर नुकसान पहुंचा। तुर्किए की आपदा प्रबंधन एजेंसी एएफएडी ने कहा है कि छह जनवरी के शक्तिशाली भूकंप के बाद से क्षेत्र में करीब 10,000 झटके आ चुके हैं।

## भारतीय मूल के प्रोफेसर ऊर्जा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित

**ह्यूस्टन,एजेंसी।** ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के कुलेन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में सेवारत, ग्लोबल एनर्जी पुरस्कार विजेता, भारतीय मूल के प्रोफेसर कौशिक राजशेखर को जापान की इंजीनियरिंग अकादमी के अंतरराष्ट्रीय फेलो के रूप में चुना गया है। विश्वविद्यालय ने एक बयान जारी कर यह जानकारी दी। इस संबंध में बृहस्पतिवार को जारी बयान में कहा गया कि मूल रूप से कर्नाटक के एक छोटे से गांव के रहने वाले प्रोफेसर कौशिक राजशेखर को बिजली रूपांतरण और परिवहन के विद्युतीकरण में उनके योगदान के लिए चुना गया हैं। अकादमी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय फेलो के रूप में राजशेखर का चयन विशेष रूप से उस ऊर्जा में उनके उत्कृष्ट वैज्ञानिक अनुसंधान और वैज्ञानिक-तकनीकी क्षेत्र में उनके योगदान का सम्मान करता है जो संपूर्ण मानव जाति के हित में पृथ्वी पर ऊर्जा स्रोतों के लिए अधिक दक्षता और पर्यावरणीय सुरक्षा को बढ़ावा देती है। राजशेखर ने कहा, जापान की इंजीनियरिंग अकादमी के अंतरराष्ट्रीय फेलो के रूप में चुने जाने पर मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। यह एक ऐसी उपलब्धि है जिसका मैं बहुत सम्मान करता हूं। राजशेखर को 2022 में ग्लोबल एनर्जी एसोसिएशन ने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा के क्षेत्र के सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार ग्लोबल एनर्जी पुरस्कार से सम्मानित किया था।

## पाकिस्तान के कराची में आत्मघाती हमले में बाल-बाल बचे पांच जापानी नागरिक

**कराची,एजेंसी।** पाकिस्तान में सिंध प्रांत के कराची में शुक्रवार को आतंकवादियों ने जापान के नागरिकों के एक वाहन को निशाना बनाते हुए आत्मघाती हमला किया लेकिन गनीमत यह रही कि वाहन सवार जापानी नागरिक हमले में बाल-बाल बच गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। उप महानिरीक्षक (पूर्व) अजफर महेसर ने कहा कि मोटरसाइकिल सवार आतंकवादियों ने लांधी में मुर्तजा चौरंगी के पास जापानी नागरिकों की वैन को टक्कर मारने का प्रयास किया। बताया जाता है कि जापान के ये नागरिक पाकिस्तान सुजुकी मोटर्स में काम करते हैं।

उप महानिरीक्षक महेसर ने कहा, ''सभी पांचों जापानी नागरिक सुरक्षित हैं लेकिन उसके साथ मौजूद निजी सुरक्षाकर्मी घायल हो गया है। उन्होंने बताया, जापानी नागरिक ज़मज़मा, क्लिफ्टन में अपने निवास से निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र की ओर जा रहे थे। आतंकवाद रोधी विभाग के उप महानिरीक्षक आसिफ ऐजाज शेख ने कहा कि जापानी नागरिक दो सुरक्षाकर्मियों के साथ एक वैन में यात्रा कर रहे थे तभी आतंकवादियों ने उनकी वैन को टक्कर मारने की

कोशिश की। अधिकारी ने बताया कि सुरक्षाकर्मियों ने एक आतंकवादी को मार गिराया, जबकि दूसरे ने वैन के करीब पहुंचने के क्रम में विस्फोट करके खुद को उड़ा लिया। शेख ने बताया कि सभी पांचों जापानी नागरिक सुरक्षित हैं। उन्होंने बताया कि अभी किसी ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। जापानी नागरिकों का वाहन बुलेट फ्रूट था। जिन्ना अस्पताल के अधिकारियों ने बताया कि कुल तीन घायलों- दो सुरक्षाकर्मियों और एक राहगीर को चिकित्सा केन्द्र में लाया गया जिनमें से दो की हालत गंभीर है। अस्पताल ने पुष्टि की है कि कोई विदेशी नागरिक को अस्पताल नहीं लाया गया है। अधिकारी ने बताया कि जापानी नागरिक पाकिस्तान सुजुकी मोटर्स में काम करते थे। सिंध के परिवहन मंत्री शरजील इनाम मेमन ने हमले की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा, समय पर पुलिस की कार्रवाई ने आतंकवादियों के नापाक इरादों को विफल कर दिया। सिंध के गवर्नर कामरान टेसोरी ने आत्मघाती हमले की निंदा की और घटना पर रिपोर्ट तलब की है। उन्होंने कहा, शहर में आतंकवाद को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

## स्कॉटलैंड में झरने में डूबने से दो भारतीय छात्रों की मौत

**लंदन।** ब्रिटेन के एक विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले दो भारतीय छात्रों की स्कॉटलैंड में एक झरने में डूबने से मौत हो गई। दोनों छात्र आंध्र प्रदेश के निवासी थे, जिनकी उम्र 20 से 30 साल के बीच थी। पुलिस ने दोनों की पहचान नहीं बताई है। यह घटना बुधवार रात पर्थशायर में ब्लेयर ऑफ एथोल के पास लिन ऑफ टुमेल में हुई जब छात्रों के एक समूह के दो लोग पानी में फिसल गए। उनके दोस्तों द्वारा शोर मचाए जाने के बाद स्कॉटिश फायर एंड रेस्क्यू सर्विस ने बचाव प्रयासों में सहायता के लिए नौका टीम और जहाजों को रवाना किया। पुलिस स्कॉटलैंड के प्रवक्ता ने कहा, बुधवार, 17 अप्रैल को शाम सात बजे के आसपास हमें ब्लेयर एथोल के पास लिन ऑफ टुमेल झरने के पानी में 22 और 26 साल की उम्र के दो लोगों के गिरने की सूचना मिली। प्रवक्ता ने कहा, आपातकालीन सेवा के कर्मी वहां पहुंचे और क्षेत्र में खोज के बाद दोनों के शव बरामद किए गए। घटनाक्रम का पता लगाने के लिए पूछताछ जारी है। हालांकि इन मौतों को लेकर कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है।

## संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद आज की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती : अमेरिका

**वाशिंगटन )।** अमेरिका की एक शीर्ष राजनयिक ने भारत के इस रुख का समर्थन किया है कि 70 साल पहले की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद आज की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती और उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन का प्रशासन जी-4 सदस्यों को संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष निकाय का स्थायी सदस्य बनाने का समर्थन करता है। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की राजदूत लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने तोक्यो में एक भाषण के दौरान संकेत दिया कि सुरक्षा परिषद में रूस और चीन ही केवल ऐसे देश हैं जो संयुक्त राष्ट्र की 15 सदस्यीय शक्तिशाली शाखा के विस्तार का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने कहा, पहले अमेरिका, चीन और रूस इस बात पर सहमत थे कि हम सुरक्षा परिषद में बदलाव नहीं देखना चाहते, लेकिन 2021 में अमेरिका ने अपने इस रुख में बदलाव किया और हमने स्पष्ट कर दिया है कि सुरक्षा परिषद और व्यापक रूप से संयुक्त राष्ट्र में सुधार महत्वपूर्ण है। ग्रीनफील्ड ने कहा, 70 साल पहले की सुरक्षा परिषद आज की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती। हमारे पास 193 (सदस्य देश) हैं। परिषद में अफ्रीका के पास स्थायी सीट नहीं है, लातिन अमेरिका के पास स्थायी सीट नहीं है और दुनिया भर के कई अन्य देशों और क्षेत्रों का परिषद में उचित प्रतिनिधित्व नहीं है।

## एक नजर

### गुकेश को फिर संयुक्त बढत, प्रज्ञानानंदा और गुजराती दौड़ से बाहर

**टोरंटो।** भारत के युवा ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए अजरबैजान के निजात अबासोव को हराकर कैंडिडेट्स शतरंज टूर्नामेंट में संयुक्त बढत बना ली लेकिन आर प्रज्ञानानंदा और विदित गुजराती 12वें दौर के बाद दौड़ से बाहर हो गए। अमेरिका के हिकारू नकामूरा ने फ्रांस के फिरोज अलीरजा को हराया। गुकेश और नकामूरा अब रूस के इयान नेपोम्नियाश्चि के साथ शीर्ष पर है जिन्होंने प्रज्ञानानंदा से ड्रॉ खेला। इन तीनों के 7.5 अंक हैं जबकि अमेरिका के फेबियानो कारूआना उनसे आधा अंक पीछे हैं। प्रज्ञानानंदा छह अंक लेकर पांचवें स्थान पर है जबकि गुजराती के पांच अंक है। आठ खिलाड़ियों के दोहरे राउंड रॉबिन टूर्नामेंट के दो दौर बाकी हैं और उनके लिये शीर्ष तीन में जगह बनाना नामुमकिन है। अलीरजा और अबासोव के 4.5 अंक हैं। महिला वर्ग में चीन की झोंग्यी तान ने बुल्गारिया की नूरगुल सलीमोवा से ड्रॉ खेला। रूस की कैटरीना लागनो ने चीन की टी लेइ को ड्रॉ पर रोका। भारत की कोनेरू हम्पी ने रूस की अलेक्जेंड्रा गारियाश्किना से ड्रॉ खेला जबकि आर वैशाली ने यूक्रेन की अन्ना एम को हराया। तान के आठ अंक है और लेइ उनसे आधा अंक पीछे हैं। हम्पी , लागनो और गोरियाश्किना छह अंक लेकर तीसरे स्थान पर हैं। वैशाली 5.5 अंक के साथ छठे स्थान पर है। सत्रह वर्ष के गुकेश कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में खेलने वाले दूसरे सबसे युवा खिलाड़ी हैं। उनसे पहले 1959 में बॉबी फिशर सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बने थे जिन्होंने यह टूर्नामेंट खेला।

### धाविका शालू चौधरी को क्लीन चिट, डीएनए टेस्ट से नमूना दूषित होने का खुलासा

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय डोपिंग निरोधी एजेंसी की अपील पैनल ने मध्यम दूरी की धाविका शालू चौधरी को डोपिंग के आरोपों से बरी करके चार साल का प्रतिबंध हटा दिया है क्योंकि डीएनए टेस्ट में पता चला कि उनके मूत्र के नमूने से या तो छेड़छाड़ की गई या लेते समय वह दूषित हो गया था। तीस वर्ष की चौधरी पर पिछले साल प्रतिबंध लगाया गया था और वह नाडा की अनुशासन समिति के सामने अपील हार गई थी। उन्हें दो प्रतिबंधित दवाओं के कथित इस्तेमाल के कारण प्रतिबंध झेलना पड़ा था। आठ सौ मीटर में राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता चौधरी ने मूत्र के नमूने के डीएनए टेस्ट की मांग की जिसे अनुशासन समिति ने तो खारिज कर दिया लेकिन अपील पैनल ने मान लिया। डीएनए जांच लंदन के किंग्स कॉलेज स्थित फारेंसिंक विभाग द्वारा कराई गई। अपीली पैनल ने कहा, ''मूत्र के नमूने के पिछले विश्लेषण में डीएनए प्रोफाइल सही नहीं आया है। डीएनए नमूने की जांच रिपोर्ट को देखते हुए नाडा के वकील कोई और कारण नहीं बता पाये है जिससे अपीली पैनल खिलाड़ी की अपील खारिज करने का फैसला ले। इसने कहा, ''नाडा के वकील ने डीएनए रिपोर्ट मान ली और इसके नतीजे को चुनौती नहीं दी है। इसके मद्देनजर डोपिंग निरोधक पैनल द्वारा 11 अप्रैल 2023 को दिया गया फैसला दरकिनार किया जाता है। खिलाड़ी पर लगाया गया चार साल का प्रतिबंध खारिज कर दिया गया है। इसके साथ ही 13 जून 2022 से प्रतिस्पर्धाओं में उनके नतीजे रद्द करने के निर्देश भी खारिज किये जाते हैं। पैनल ने 18 अप्रैल को आदेश दिये जाने के दस दिन के भीतर डीएनए टेस्ट पर हुआ डेढ लाख रूपये का खर्च भी चौधरी को भुगतान करने का नाडा को निर्देश दिया।

### बुमराह के खिलाफ स्वीप शॉट खेलना मेरा सपना था , कहा आशुतोष शर्मा ने

**मुल्लांपुर।** पंजाब किंग्स के आक्रामक बल्लेबाज आशुतोष शर्मा ने कहा कि दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को स्वीप शॉट खेलना हमेशा से उनका सपना था जो मुंबई इंडियंस के खिलाफ आईपीएल मैच में पूरा हुआ। आशुतोष ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ 28 गेंद में 61 रन बनाये लेकिन उनकी टीम नौ रन से हार गई। आशुतोष ने मैच के बाद मीडिया से कहा, ''बुमराह को स्वीप शॉट लगाना मेरा सपना था। मैं उस शॉट का अभ्यास कर रहा था और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज के सामने वह शॉट

खेला। उन्होंने कहा, ''मुझे भरोसा था कि मैं टीम को मैच जिता सकूंगा। उन्होंने अपने बेहतर प्रदर्शन कर श्रेय पंजाब किंग्स के क्रिकेट विकास प्रमुख और भारत के पूर्व खिलाड़ी संजय बांगड़ को दिया। उन्होंने कहा ,संजय सर ने मुझे कहा कि मैं स्लॉगर नहीं हूं और विशुद्ध क्रिकेटिया शॉट खेल सकता हूं। यह छोटा या बयान था लेकिन मेरे लिये बहुत मायने रखता है। मैं इस पर अमल कर रहा हूं। मैं हार्ड हिटर नहीं हूं और क्रिकेट के शॉट खेलता हूं। मैने अपने खेल में यही बदलाव किया। टीम की हार के बावजूद उन्होंने कहा, ''जीत और हार खेल का हिस्सा है। मायने यह रखता है कि एक टीम के रूप में आप कैसा खेल रहे हैं। अगर हम अच्छा खेलेंगे तो जीतेंगे।

# डिकॉक और राहुल ने चेन्नई को दिखाया आइना, लखनऊ आठ विकेट से जीता

**लखनऊ,एजेंसी।** क्विंटन डिकॉक (54) और कप्तान केएल राहुल (82) के बीच 134 रन की शतकीय साझीदारी की मदद से लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने टाटा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 34वें मुकाबले में गत विजेता चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) को पीट कर अपने मनोबल में इजाफा किया।

पीले समंदर में तब्दील इकाना स्टेडियम पर चेन्नई ने पहले बल्लेबाजी करते हुये निर्धारत 20 ओवर में छह विकेट खोकर 176 रन बनाये जिसके जवाब में लखनऊ ने विजय लक्ष्य छह गेंद शेष रहते दो विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। यह इकाना स्टेडियम के इतिहास में सबसे बड़ा रन चेज रहा।

डिकॉक और राहुल की जोड़ी ने आज 2022 के आईपीएल सत्र की याद दिला दी जब दोनो ने अपने दम पर 210 रन की पार्टनरशिप कर केकेआर के खिलाफ यादगार जीत दर्ज की थी। केएल राहुल की आज की पारी अब तक के सत्र की सर्वश्रेष्ठ पारी थी, इससे पहले उन्होने राजस्थान रायल्स के खिलाफ 58 रन बनाये थे। अपनी अर्धशतकीय पारी में उन्होने 53 गेंद खेल कर नौ चौके और तीन छक्के जड़े। राहुल सीएसके के सफल गेंदबाज पथिराना का शिकार बने जब प्वाइंट पर खडे जडेजा ने उनका कैच एक हाथ से लपका। इससे पहले दूसरे छोर पर डिकॉक पारी के 15वें ओवर की आखिरी गेंद पर मुस्फिजुर रहमान का शिकार बने। उन्होने अपनी सत्र की तीसरी अर्धशतकीय पारी में 43 गेंद खेलकर पांच चौके और एक छक्का लगाया। दोनो सलामी बल्लेबाजों के आउट होने के बाद जीत की औपचारिकता को निकोलस पूरन (23) और मार्कस स्टॉयनिस (8) ने बगैर और नुकसान के पूरा कर लिया। पूरन ने नो बाल में फ्री हिट पर चौका जड कर अपनी टीम को जीत दिलायी। इकाना स्टेडियम में आज 50 हजार दर्शकों का दिल अपने चहेते सितारे सीएसके के महेन्द्र सिंह

धोनी के साथ था मगर दिमाग में उनके लखनऊ की जीत की तमन्ना थी और दर्शकों की दोनो तमन्नायें पूरी हुयी जब उन्होने धोनी की पैसा वसूल पारी देख कर अपने अरमानों को पूरा किया। उधर एलएसजी के कप्तान केएल राहुल ने अपने घरेलू दर्शकों की जीत की चाहत को भी पूरा कर दिया। सातवें बल्लेबाज के रुप में पिच पर उतरे धोनी ने अपने खास अंदाज में नौ गेंदों की नाबाद पारी में तीन चौके और दो छक्के की मदद से 28 रन ठोक दिये जिसके चलते चेन्नई मेजबान टीम के खिलाफ चुनौतीपूर्ण लक्ष्य तैयार करने में सफल हो सका। हालांकि उनकी इस पारी पर राहुल और डिकॉक ने पानी फेर दिया। धोनी के साथ दूसरे छोर पर हरफनमौला रविंद्र जडेजा की साहसिक नाबाद पारी ने न सिर्फ चेन्नई को मुश्किलों के भंवर से निकाला बल्कि मैदान पर बैठे एलएसजी के समर्थकों की भी खूब वाहवाही लूटी। आईपीएल के मौजूदा सत्र में जडेजा की यह पहली अर्धशतकीय पारी थी जिसमे उन्होने 76 मिनट क्रीज पर रुक कर 40 गेंदों में पांच चौके और एक जानदार छक्के की मदद से नाबाद 57 रन बनाये। इससे पहले टॉस हार कर पहले बल्लेबाजी करने उतरी चेन्नई की शुरुआत अच्छी नहीं रही जब रचिन रविंद्र (0) पारी के दूसरे ओवर में ही मोहसिन खान का शिकार बन गये। कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ (17) भी यश ठाकुर की गेंद पर विकेट के पीछे लपके गये। हालांकि सलामी बल्लेबाज आंजिक्य रहाणे (36) का बल्ला इकाना की पिच पर चल निकला। उन्होने 24 गेंदों की अपनी संक्षिप्त पारी में पांच चौके और एक छक्का जड़ा। चेन्नई के विस्फोटक बल्लेबाज शिवम दुबे (3) और इंपेक्ट प्लेयर समीर रिजवी (1) भी अपने विकेट जल्दी गंवा बैठे और टीम का स्कोर पांच विकेट पर 90 रन हो गया। मुश्किल हालात से टीम को निकालने की जिम्मेदारी अब हरफनमौला रविंद्र जडेजा के पास थी जिन्होने इसे बखूबी निभाया। उन्होने पहले मोइन अली (30) के साथ 51 रन की बहुमूल्य साझीदारी की जबकि बाद में भारतीय प्रशंसकों की जान महेन्द्र सिंह धोनी के साथ तेज गति से रन बटोरते हुये एलएसजी के लिये एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य खड़ा करने में टीम की मदद की।

# सिराज को तैयारी और खेल के समय के संबंध में अपना क्षेत्र ढूंढने की जरूरत है: जहीर

**नई दिल्ली।** आईपीएल 2024 में, मोहम्मद सिराज रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए विकेटों में नहीं रहे हैं और भारत के पूर्व बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जहीर खान का मानना है कि अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन में वापस आने के लिए तैयारी और खेल के समय की शर्तों के संबंध में यह उनके लिए अपना जोन ढूंढने की जरूरत है।

आईपीएल 2023 में सिराज ने 14 मैचों में 19.73 की औसत और 7.5 की इकोनॉमी रेट से 19 विकेट लिए, जिसमें पावर-प्ले में दस विकेट आए। लेकिन मौजूदा टूर्नामेंट में सिराज उन ऊंचाइयों तक नहीं पहुंच पाए हैं, उन्होंने छह पारियों में 57.25 की औसत और 10.40 की इकोनॉमी रेट से चार विकेट लिए हैं। उनकी पावर-प्ले संख्या में भी गिरावट आई है और वह 12.3 की इकॉनमी रेट से केवल एक विकेट ले पाए हैं। सिराज को इस हफ्ते की शुरुआत में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ आरसीबी के मैच से भी बाहर कर दिया गया था, लेकिन जहीर को लगता है कि सिराज को वेस्टइंडीज और यूएसए में 1 जून से शुरू होने वाले टी20 विश्व कप में तेज गेंदबाजी के अगुआ जसप्रीत बुमराह के साथ साझेदारी करनी होगी। सिराज एक ऐसा खिलाड़ी है जो बहुत अच्छा कर रहा है और यह अभी प्रारूप की मांग है कि कभी-कभी, किसी को भी परेशानी हो सकती है। यह टीमों के गेम न जीतने का नतीजा भी हो सकता है और बात सिर्फ इतनी है कि इसकी निराशा आप तक पहुंच रही है, जिससे आप प्रक्रियाओं से दूर जा रहे हैं। लेकिन उसके लिए, यह जितना संभव हो उतना सरल होगा अगर उसे अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन में वापस आने की जरूरत है। उसे विकेटों के बारे में सोचना होगा, उन स्टंप्स पर आक्रमण करना होगा, जितनी तेज़ हो सके गेंदबाजी करनी होगी, शुरुआती स्विंग की तलाश करनी होगी-यह सब जो हमने देखा है वह उसकी सफलता के फॉर्मूले का हिस्सा है। आईपीएल 2024 के स्ट्रीमिंग पार्टनर जियोसिनेमा के आईपीएल विशेषज्ञ जहीर ने चुनिंदा वर्चुअल इंटरेक्शन में कहा,"उनके लिए, यह तैयारी, खेल के समय और तुरंत वहां पहुंचने के संबंध में उस क्षेत्र को फिर से ढूंढने के बारे में है। मुझे अभी भी लगता है कि उसे टी20 विश्व कप का हिस्सा होना चाहिए क्योंकि शमी उपलब्ध नहीं है, यह एक निश्चित संसाधन का उपयोग करने के बारे में हो जाता है और उसके संबंध में, वह वहीं पर है। भारत की 2011 वनडे विश्व कप जीत के सदस्य जहीर ने राजस्थान रॉयल्स के लिए आवेश खान के प्रभावशाली प्रदर्शन पर भी ध्यान दिया। जब मैं आवेश को देखता हूं तो जिस चीज ने मुझे प्रभावित किया है, वह यह है कि जब वह खेल के करीब आ रहा है तो उसके विचारों की स्पष्टता है और वह वहां लड़ाई का आनंद कैसे ले रहा है। आवेश सही दृष्टिकोण के संदर्भ में वे सभी चीजें कर रहा है और इस आईपीएल में सफल होने के लिए अभी विभिन्न परिदृश्यों में आक्रामक बल्लेबाजों के खिलाफ चुनौती के लिए तैयार है। जहीर का यह भी मानना है कि अर्शदीप सिंह को ऑस्ट्रेलिया में टूर्नामेंट के 2022 संस्करण में मौजूद रहने के बाद टी20 विश्व कप टीम में जगह बनानी चाहिए, जहां उन्होंने दस विकेट लिए थे। टीम का चयन अभी भी दो सप्ताह दूर है लेकिन अर्शदीप सिंह टी20 विश्व कप के लिए एक गंभीर उम्मीद है और चयनकर्ता उन पर नज़र रखेंगे। खलील अहमद, मोहसिन खान और यश दयाल पर भी चयनकर्ताओं की नजर रहेगी।

# सेमीफाइनल के लिए भिड़ेंगे ओडिशा एफसी और केरला ब्लास्टर्स

**भुवनेश्वर)।** ओडिशा एफसी और केरला ब्लास्टर्स आज शाम भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम में इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2023-24 में प्लेऑफ के पहले मैच में भिड़ेंगे। ये दोनों टीमें खराब फॉर्म के साथ नॉकआउट मुकाबले में उतरेंगी, दोनों ही अपने पिछले पांच मैचों में तीन बार हारी हैं और एक ड्रा व एक जीत से संतुष्ट हुई हैं। ओडिशा 39 अंकों के साथ तालिका में चौथे स्थान पर रहे, जबकि केरला ब्लास्टर्स एफसी 33 अंक लेकर पांचवें स्थान पर रही। एक-चरण वाला यह प्लेऑफ मैच दोनों टीमों के लिए महत्वपूर्ण होगा, जिसका विजेता सीधे सेमीफाइनल में पहुंचेगा, जहां शीर्ष दो टीमें, यानी मोहन बागान सुपर जायंट और मुम्बई सिटी एफसी उसका इंतजार कर रही हैं। सर्जियो लोबेरा और इवान वुकोमानोविक दोनों अनुभवी रणनीतिकार हैं, और वे आगामी महत्वपूर्ण 90 मिनटों के लिए अपनी टीमों को तैयार करने में जुटे होंगे। ओडिशा एफसी के स्पेनिश हेड कोच सर्जियो लोबेरा ने गुरुवार को प्री-मैच प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, अगर मैं आज अब तक के पूरे सीजन का विश्लेषण करूं तो मैं बहुत खुश हूं। हमने भारत की सबसे मजबूत टीमों का मुकाबला बहुत अच्छे से किया। हमने सुपर कप के फाइनल में जगह बनाई और हालांकि हम हार गए, लेकिन हमने अंत तक संघर्ष किया। केरला ब्लास्टर्स एफसी के सर्बियाई हेड कोच इवान वुकोमानोविक ने मैच से पहले कहा, सीजन के दौरान हमें प्रमुख खिलाड़ियों की सर्जरी और अन्य अनचाही वजहों के कारण टीम को पूरी तरह से बदलना पड़ा। लेकिन नॉकआउट में मानसिकता पूरी तरह से अलग होती है, क्योंकि यहां आपको लंबी अवधि के लिए योजना नहीं बनानी होती है। बता दें कि दोनो टीमों के बीच अब तक 22 मैच खेले गए हैं, जिसमें से केरला ब्लास्टर्स एफसी ने 9 में और ओडिशा एफसी ने 6 में जीत दर्ज की है, जबकि 7 मैच ड्रा रहे हैं।

# ऋषभ पंत की भावुक घर वापसी, दिल्ली के सामने सनराइजर्स हैदराबाद की कठिन चुनौती

**नई दिल्ली।** पिछले साल अरूण जेटली स्टेडियम पर बैसाखियों के सहारे चलते नजर आये ऋषभ पंत इंडियन प्रीमियर लीग के मैच में शनिवार को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान के रूप में लौटेंगे तो यह उनके लिये भावुक पल होगा लेकिन उनकी टीम को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन भी करना होगा। दिल्ली ने अब तक मिला जुला प्रदर्शन किया है हालांकि लखनऊ सुपर जाइंट्स और गुजरात टाइटंस को हराकर वे दौड़ में बने हुए हैं। अब तक सात मैचों में से दिल्ली ने तीन जीते और चार हारे हैं। आईपीएल अंक तालिका में चौथे स्थान पर काबिज सनराइजर्स की टीम दो बार टूर्नामेंट के इतिहास का सर्वोच्च स्कोर (तीन विकेट पर 277 रन और तीन विकेट पर 287 रन) बना चुकी है। ऐसे में कप्तान पंत को कोटला की घरेलू पिच पर अपने संसाधनों का चतुराई से इस्तेमाल करना होगा। सनराइजर्स के ट्रेविस हेड (235 रन) 39 मैच में शतक जड़ने का कारनामा कर चुके हैं। वहीं अभिषेक शर्मा ने भी 211 रन बना लिये हैं। दोनों पावरप्ले में आक्रामक प्रदर्शन करने को बेताब होंगे। दोनों का स्ट्राइक रेट 199 और 197 रहा है जो ईशांत शर्मा, खलील अहमद और मुकेश कुमार की तेज गेंदबाजी तिकड़ी के लिये कड़ी चुनौती होगा। वहीं हेनरिच क्लासेन का भी स्ट्राइक रेट 199 के करीब रहा है और वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फिनिशर्स में से एक हैं। ये तीनों मिलकर सनराइजर्स की बल्लेबाजी को खतरनाक बनाते हैं। कुलदीप यादव के रूप में दिल्ली के पास ट्रंपकार्ड है

जिनका इकॉनामी रेट छह के करीब है। स्पिन गेंदबाजी में उनका साथ देने के लिये अक्षर पटेल के अलावा तीसरा विकल्प ट्रिस्टन स्टब्स हैं। पंत अगर टॉस जीतते हैं तो बल्लेबाजी चुन सकते हैं। वैसे डेविड वॉर्नर की चोट उनके लिये चिंता का विषय है हालांकि पहले दो मैचों में जैक फ्रेसर मैकगुर्क ने प्रभावित किया है। सनराइजर्स की बल्लेबाजी जहां बेहतरीन रही है, वहीं उसके गेंदबाजों ने निराश किया है। सिर्फ कप्तान पैट कमिंस (7.87) का इकॉनॉमी रेट ही आठ से नीचे रहा है जो टी20 क्रिकेट में अच्छा माना जायेगा। जयदेव उनादकट और भुवनेश्वर कुमार महंगे साबित हुए हैं। वहीं स्पिनर मयंक मार्कंडेय और शाहबाज अहमद भी प्रभावित नहीं कर सके। अगर दिल्ली को लक्ष्य का पीछा करना है तो उसकी नजरें सनराइजर्स को 210.220 के स्कोर पर रोकने पर होगी।

# देर से पहुंचने के कारण एशियाई क्वालीफायर नहीं खेल सकेंगे पहलवान पूनिया और सुजीत

**नयी दिल्ली।** बिश्केक में एशिया ओलंपिक क्वालीफायर में भारतीय कुश्ती दल को करारा झटका लगा क्योंकि देश के दो सर्वश्रेष्ठ पहलवान दीपक पूनिया और सुजीत कलाकल समय पर नहीं पहुंच पाने के कारण टूर्नामेंट नहीं खेल सकेंगे। दुबई में खराब मौसम के कारण उनकी फ्लाइट देर से बिश्केक पहुंची। भारी बारिश और बाढ के कारण दोनों दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर फंसे रहे और वजन कराने के समय पर नहीं पहुंच सके। सूत्रों ने कहा कि भारतीय कोचों के अनुरोध के बावजूद आयोजकों ने उन्हें अनुमति नहीं दी।

पूनिया ( 86 किलो) तोक्यो ओलंपिक में पदक जीतने के करीब पहुंचे थे। वह और सुजीत (65 किलो ) पेरिस ओलंपिक के क्वालीफाइंग टूर्नामेंट में भाग लेने बिश्केक पहुंचे जबकि दुबई से जाने वाली अधिकांश उड़ानें हवाई अड्डे पर पानी भरा होने के कारण या तो रद्द हो गई या देर से

पहुंची। रूसी कोच कमाल मालिकोव और फिजियो शुभम गुप्ता के साथ दोनों जमीन पर सोये और दुबई हवाई अड्डे पर बाढ के कारण भोजन उपलब्ध नहीं होने से भूखे भी रहे। सुजीत के पिता दयानंद कलाकल ने कहा था, ''दोनों 16 अप्रैल से दुबई हवाई अड्डे पर फंसे थे। उन्हें बिश्केक की उड़ान नहीं मिल रही थी। मैं दोनों को लेकर चिंतित हूं। दोनों रूस में अभ्यास कर रहे थे और उन्होंने दुबई के रास्ते बिश्केक पहुंचने का फैसला लिया था। पेरिस ओलंपिक का आखिरी विश्व क्वालीफायर मई में तुर्की में खेला जायेगा।

# विश्व स्तरीय खिलाड़ियों के लिये ठोस नींव तैयार कर रहा है हॉकी इंडिया-भरत छेत्री

**नई दिल्ली।** भारत के पूर्व गोलकीपर भरत छेत्री ने जमीनी स्तर पर ड्रैग फ्लिकरों और गोलकीपरों को तैयार करने पर जोर देने के लिये शुक्रवार को हॉकी इंडिया की तारीफ की। छेत्री समेत भारत के पूर्व गोलकीपर और ड्रैग फ्लिकर देश भर में राष्ट्रीय अकादमियों में तीन दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का संचालन करेंगे। इनमें एड्रियन डिसूजा, योगिता बाली, हेलेन मेरी, दीपिका मूर्ति, आकाश चिकते और पीटी राव शामिल हैं। वहीं ड्रैग फ्लिकरों में रूपिंदर पाल सिंह, गुरजिंदर सिंह, वी आर रघुनाथ और जसप्रीत कौर का चयन किया गया है।

छेत्री ने हॉकी इंडिया द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा, ''भारतीय हॉकी के भविष्य के लिये जमीनी स्तर पर निवेश बहुत जरूरी है। गोलकीपरों और ड्रैग फ्लिकरों के लिये विशेष ट्रेनिंग के जरिये हॉकी इंडिया इन भूमिकाओं के लिये विश्व स्तरीय प्रतिभाओं के उदय होने की ठोस नींव तैयार कर रहा है। हॉकी इंडिया राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग की भी शुरूआत कर रहा है जिसका पहला चरण 30 अप्रैल से नौ मई तक रांची में खेला जायेगा। इसके बारे में छेत्री ने कहा, ''यह भारतीय खेलों के लिये अहम पल है। घरेलू स्तर पर महिला खिलाड़ियों को इतना बड़ा मंच देकर हॉकी इंडिया अगली पीढी के सितारे तैयार कर रहा है। मुझे यकीन है कि यह लीग

असंख्य लड़कियों को हॉकी स्टिक उठाने के लिये प्रेरित करेगी।%%

## एक नजर

### कंगना ने अपने घर पर की पंचायत प्रतिनिधियों के साथ मुलाकात

**मंडी,एजेंसी।** हिमाचल प्रदेश के मंडी संसदीय सीट से भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी और फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत ने शुक्रवार को भांबला स्थित अपने निवास स्थान पर सरकाघाट विधानसभा क्षेत्र के भाजपा समर्थित पंचायत प्रतिनिधियों के साथ मुलाकात की। इस दौरान में सरकाघाट विधानसभा क्षेत्र से चुने हुए भाजपा समर्थित पंचायत प्रधान, उपप्रधान, बीडीसी और जिला परिषद सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। इस दौरान कंगना ने सभी के साथ अपनी स्थानीय मंडयाली बोली में संवाद किया। उपस्थित जनप्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कंगना ने कहा कि मंडी संसदीय क्षेत्र के तहत 17 विधानसभा क्षेत्र आते हैं और यहां हर व्यक्ति को नाम से याद रख पाना संभव नहीं है। सरकाघाट के लोगों के कंधों पर इस वक्त बड़ी जिम्मेदारी है और इस जिम्मेदारी को सभी मिलकर निभाएंगे। कभी भी आपने यह नहीं सोचना है कि कंगना के साथ कैसे मुलाकात करें। काम के सिलसिले में जब भी आपको मिलना हो या बात करनी हो तो निसंकोच होकर आ सकते हैं। उन्होंने कहा कि मंडी संसदीय क्षेत्र इतना बड़ा है कि हर वक्त घर पर उपस्थित रह पाना संभव नहीं होगा। ऐसे में घर पर भी लोगों की सुविधा के लिए पूरी व्यवस्था की जा रही है। घर पर जो परिवार के लोग हैं वो भी इस काम में पूरा साथ दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकाघाट विधानसभा क्षेत्र में अधिकतर उनकी रिश्तेदारी है और हर रिश्तेदार द्वारा अब अपनी अहम भूमिका निभाई जाएगी। इस दौरान उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों के साथ अपना मोबाइल नंबर भी शेयर किया। इस मौके पर सरकाघाट के विधायक दलीप ठाकुर सहित सरकाघाट मंडल भाजपा के अन्य पदाधिकारी भी मौजूद थे।

### डेल टेक्नोलॉजीज ने एआई लैपटॉप और मोबाइल वर्कस्टेशन किये लॉँच

**नई दिल्ली,एजेंसी।** डेल टेक्नोलॉजीज ने आज भारत में आधिकारिक तौर पर वाणिज्यिक एआई लैपटॉप और मोबाइल वर्कस्टेशन की नयी रेंट लॉन्च करने की घोषणा की जिसकी कीमत 110999 रुपये से लेकर 260699 रुपये तक है। डेल टेक्नोलॉजिज इंडिया के क्लाइंट सॉल्यूशंस ग्रुप के वरिष्ठ निदेशक एवं महाप्रबंधक इंद्रजीत बेलगुंडी ने यहां इसे लॉँच करते हुये कहा, डेल वाणिज्यिक पीसी दशकों से परिवर्तन को बढ़ावा दे रहे हैं, और हमारी नवीनतम पीढ़ी के उपकरणों में एआई क्षमताओं में प्रगति से हमें मदद मिलेगी। ग्राहक के कार्यबल अपने उद्योग को एआई युग में ले जाने के लिए प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ रहे हैं। नया लेटीट्यूट और हाइब्रिड कार्य युग में व्यावसायिक पेशेवरों के लिए एआई-संवर्धित उत्पादकता और सहयोग प्रदान करता है। जैसे-जैसे एआई परिदृश्य विकसित होता है, हमारा नया वाणिज्यिक पोर्टफोलियो हमारे ग्राहकों और उनके कार्यबल को प्रदर्शन, उच्चतम सुरक्षा, पोर्टेबिलिटी और स्थिरता के साथ सशक्त बनाता है, जिससे उन्हें आधुनिक कार्य वातावरण की जटिलताओं को आत्मविश्वास और आसानी से हल करने में मदद मिलती है।

ये नए पीसी संगठनों और कर्मचारी उत्पादकता को एआई युग में लाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। उन्होंने कहा कि नवीनतम लैटीट्यूड पोर्टफोलियो इंटेल कोर अल्ट्रा 7 प्रोसेसर तक से लैस है, 5000 सीरीज 13वीं पीढ़ी के इंटेल कोर आई 7-1355यू प्रोसेसर तक के कॉन्फ़िगरेशन में भी उपलब्ध है। नया प्रिसिजन पोर्टफोलियो इंटेल कोर अल्ट्रा 9 प्रोसेसर द्वारा संचालित पावर उपयोगकर्ताओं, डेवलपरों और उससे आगे की प्रदर्शन आवश्यकताओं को पूरा करता है। पीसी में नई अत्याधुनिक एआई तकनीक हाइब्रिड कार्यबल की चतुराई बढ़ाने, उत्पादकता, सुरक्षा और निर्बाध सहयोग बढ़ाने में मदद कर सकती है। उन्होंने कहा कि सीपीयू, जीपीयू और एनपीयू के साथ नया एकीकृत मल्टी-प्रोसेसर पैकेज एआई वर्कलोड को एक्सपीयू, एक बहुमुखी एआई इंजन में लोड करने में मदद कर सकता है। यह एकीकरण बेहतर प्रदर्शन और लंबी बैटरी लाइफ प्रदान करता है। नए पोर्टफोलियो में अतिरिक्त को पायलट 'की' उपयोगकर्ताओं को अपने एआई साथी तक तुरंत पहुंच की अनुमति देती है। डेल ऑप्टिमाइज़र एआई-आधारित सॉफ़्टवेयर को भी और बेहतर बनाया गया है।

# पैसे के दम पर लोकतंत्र की हत्या करने वाले षड्यंत्रकारी जल्द होंगे सलाखों के पीछे- सुक्खू

**शिमला,एजेंसी।** मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार पूरी तरह स्थिर है और मजबूत है और वह अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि पैसे के दम पर लोकतंत्र की हत्या करने वाले षड्यंत्रकारी जल्द ही सलाखों के पीछे होंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मण्डी संसदीय सीट सहित प्रदेश की सभी लोकसभा व विधानसभा उप चुनावो में जीत हासिल करेगी। शुक्रवार को कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में मण्डी संसदीय क्षेत्र के नेताओं की एक बैठक को संबोधित करते हुए सुक्खू ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा ही चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते हुए उस पर पार पाया है। उन्होंने कहा उनके छह विधायको ने पैसे के लिये अपना ईमान बेच दिया,इसके लिये प्रदेश की जनता उन्हें कभी माफ नही करेंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार ने अपने 15 माह के कार्यकाल में कई उल्लेखनीय निर्णय कर जनता के हित में कार्य किये है। कर्मचारियों की ओल्ड पेंशन जारी कर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को 1500 रुपए की गारंटी भी पूरी की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की विकट आर्थिक परिस्थितियों के बाबजूद आपदा से प्रभावित लोगों की सरकार ने पूरी मदद की। उन्होंने कहा कि



मण्डी जिला सबसे ज्यादा आपदा प्रभावित रहा। उन्होंने कहा कि इस दौरान न तो केंद्र की भाजपा सरकार ने प्रदेश को कोई विशेष आर्थिक मदद दी और न ही प्रदेश भाजपा के नेताओं ने राहत कार्यो में ही कोई सहयोग दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा ने प्रदेश में लोकतंत्र की हत्या करने की कोशिश की है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने एक षड्यंत्र के तहत कांग्रेस की राज्यसभा की एक सीट चुराई है। उन्होंने कहा कि हिमाचल देव भूमि है और लोग अब भाजपा को लोकसभा की चारों सीटों पर करारी हार देकर इसका हिसाब चुकता करेंगे। सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि मण्डी संसदीय क्षेत्र से उन्होंने एक योग्य,अनुभवी युवा नेता विक्रमादित्य को चुनाव मैदान में उतारा है। उन्होंने कहा कि विक्रमादित्य मण्डी संसदीय क्षेत्र में रिकार्ड मतों से जीत हासिल करेंगे। उन्होंने पार्टी नेताओं, पदाधिकारियों से कार्यकर्ताओं के साथ एकजुटता से चुनाव प्रचार में डटने व सरकार की 15 माह की उपलब्धियों को जनता के बीच प्रमुखता से रखने को कहा। इससे पूर्व अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव मण्डी संसदीय क्षेत्र के प्रभारी संजय दत्त ने पार्टी पदाधिकारियों से सभी ब्लॉकों में मजबूती के साथ ग्रासरूट में कार्य करने को कहा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जो कहती है उसे हर हाल में पूरा करती है। पूर्व मंत्री ठाकुर कौल सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में कांग्रेस पूरी तरह मजबूत है और मण्डी संसदीय सीट पर भारी मतों से जीत हासिल करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के विकास में कांग्रेस नेताओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने पार्टी के सभी पदाधिकारियों से आपसी समन्वय के साथ काम करने का आह्वान किया। लोक निर्माण मंत्री मण्डी संसदीय क्षेत्र से पार्टी प्रत्याशी विक्रमादित्य सिंह ने कहा कि पार्टी आलाकमान ने उन्हें मण्डी लोकसभा चुनाव लड़ने के निर्देश दिए है।

# मोदी कार्यकाल में बॉर्डर तक सुदृढ़ हुई सड़क और संचार सेवाएं- जयराम ठाकुर

**मंडी,एजेंसी।** नेता विपक्ष जय राम ठाकुर ने कहा है कि पहाड़ी प्रदेश हिमाचल में विकास की रफ्तार बढ़ाने का श्रेय केंद्र की भाजपा सरकार को ही जाता है जबकि इतने वर्षों तक कांग्रेस ने राज किया लेकिन प्रदेश विकास को हमेशा तरसता ही रहा। पूर्व में जब श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जी की सरकार केंद्र में रही तो हिमाचल को विशेष आर्थिक पैकेज मिला और विकास कार्यों में कभी विराम नहीं लगा।

उन्होने कहा कि इसके बाद यूपीए की दस वर्षों तक केंद्र में सरकार रही तो हिमाचल को छोटा राज्य बोलकर न केवल विकास में भेदभाव हुआ बल्कि प्रदेश में कांग्रेस की सरकार होने के बाबजूद यहां के प्रमुख नेताओं को दिल्ली में मिलने तक का समय नहीं दिया जाता था। तत्कालीन मुख्यमंत्री रहे वीरभद्र सिंह के साथ ऐसा कई बार हुआ है। यही नहीं उनके कार्यकाल में केवल एक बार प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह हिमाचल आए और वो भी केवल चुनावी जनसभा करने जबकि दूसरी ओर 2014 के बाद जब से देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बने हैं उन्होंने हिमाचल को अपना घर बताकर विकास में कोई कमी नहीं आने दी। जय राम ने कहा कि मोदी ने न केवल अटल टनल रोहतांग का रिकार्ड समय में निर्माण पूरा करवाकर कबायली जिला लाहौल स्पीति को देश से 12 महीने यातायात से जोड़ने का नया कीर्तिमान स्थापित किया है वहीं अब आजादी के आठ दशकों बाद स्पीति के उस हिस्से में भी मोबाइल की घंटी बजा दी है जहां इतने वर्षों तक केंद्र में राज करने वाली कांग्रेस संचार सेवा भी नहीं पहुंचा पाई थी। पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने स्पीति वासियों को बधाई देते हुए और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताते हुए कहा कि गत दिन स्पीति के गिउ गांव वासियों से प्रधानमंत्री ने मोबाइल पर बात कर अपनी विकास प्रतिबद्धता को दिखाया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा विकास में हिमाचल के साथ भेदभाव किया है जबकि भाजपा सरकार जब भी केंद्र में आई तो बिना भेदभाव के विकास की रफ्तार को आगे बढ़ाया है। आज चारों तरफ़ फोरलेन का निर्माण हो रहा है। दिल्ली से जहां पहले 12 से 14 घंटे शिमला या मनाली के लिए लगते थे आज मात्र छ: से सात घंटों का वक्त सड़क मार्ग से लग रहा है। सीमांत गांव में भी सड़क और संचार सेवाएं सुदृढ़ हुई है।

## निर्वाचन की तैयारियों में नहीं चलेगी शिथिलता और बहानेबाजी: के रवि कुमार

**रांची,एजेंसी।** झारखंड में लोकसभा चुनाव की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। तैयारियों में कोई शिथिलता और बहानेबाजी नहीं चलेगी। गर्मी-धूप लग रही, तो माथे पर गमछा लगायें और क्षेत्र भ्रमण कर निरोधात्मक कार्रवाईयां सुनिश्चित करें। निर्वाचन कार्य की तैयारियों में बेहतर परिणाम चाहिए। यह बातें मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, झारखंड के. रवि कुमार ने कही। वे आज लोकसभा चुनाव 2024 के तहत पलामू लोकसभा क्षेत्र के गढ़वा जिले में अबतक की गई तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे।

गढ़वा जिले के समाहरणालय सभागार में आयोजित बैठक में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने अवैध शराब की बिक्री एवं आवाजाही पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निदेश दिया। उन्होंने संपूर्ण जिला क्षेत्र के साथ-साथ बॉर्डर क्षेत्र के प्रखंड एवं थाना क्षेत्रों में सघन छापेमारी एवं जांच अभियान चलाकर संलिप्त आरोपितों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई का निदेश दिया। उन्होंने उत्पाद अधीक्षक को अवैध शराब की बिक्री पर रोक लगाने के लिए पुलिस पदाधिकारियों के साथ समन्वय कर संलिप्त व्यक्तियों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई करते हुए 22 अप्रैल 2024 तक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया । उन्होंने पदाधिकारियों को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं भयमुक्त मतदान सुनिश्चित कराने को लेकर सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण करने का निदेश दिया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने शस्त्र जमा कराने की कार्रवाई में गति लाने का निदेश दिया। शस्त्र जमा नहीं करने वालों की शस्त्र अनुज्ञप्ति रद् करने का निदेश दिया। आदर्श आचार संहिता उल्लंघन की स्थिति पर कार्रवाई का निदेश दिया। साथ ही उन्होंने निर्वाचन के कार्यों में लगे वाहनों का प्रबंधन ससमय करने का भी निदेश दिया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मतदान केन्द्रों पर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने का निदेश दिया। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को मतदान केंद्र का मैपिंग करते हुए एएनएम, जीएनएम सहिया आदि की तैनाती कर आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराये, ऊताकि मतदान के दिन मतदान कर्मियों एवं मतदान केंद्र पर आने वाले मतदाताओं को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निदान हो सके। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के निदेशानुसार इस बार दिन भर मतदान होगा। सभी मतदान केंद्रों पर सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक मतदान होना है। उन्होंने अंतरराज्यीय एवं अंतरजिला चेक पोस्ट पर विशेष निगरानी रखते हुए सघन जांच कराने का निदेश दिया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि गर्मी का मौसम है। पानी की समस्या सामने आने लगी है, ऐसे में मतदान केन्द्रों पर पेयजलापूर्ति की मुकम्मल व्यवस्था सुनिश्चित करें ऊर्जा ऊपानी की किल्लत वाले मतदान केन्द्रोंऊ पर टैंकर से भी पेयजलापूर्ति की उपलब्धता सुनिश्चित कराने का निदेश दिया।

# लोकसभा चुनाव के लिये गांधीनगर सीट से अमित शाह ने भरा नामांकन

**गांधीनगर,एजेंसी।** केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार के रूप में शुक्रवार को गांधीनगर सीट से अपना नामांकन पत्र भरा। श्री शाह ने विजय मुहूर्त में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि उनके लिये बड़ा गौरव का विषय है कि जिस सीट का प्रतिनिधित्व श्रद्धेय लालकृष्ण आडवाणी, श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने किया, जिस सीट पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मतदाता हैं। उस सीट को प्रतिनिधित्व करने का मौका भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें दिया है। उन्होंने कहा कि वह इस सीट पर से 30 साल से विधायक, सांसद रहे हैं। यहीं से बहुत छोटे से बूथ के कार्यकर्ता से संसद तक पहुंचा हैं। इस क्षेत्र की जनता ने उन्हें अपार प्रेम दिया है और श्री मोदी के नेतृत्व में पहले मुख्यमंत्री के नाते और बाद में प्रधानमंत्री के नाते इस क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकारों ने ढेर सारे काम किये हैं। इस पांच साल के अंदर 22 हजार करोड़ से ज्यादा के विकास के कार्य गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में हुये।

श्री शाह ने इससे पहले गुरुवार को अहमदाबाद जिले के साणंद में एपएमसी सर्कल से नणसरोवर चौक तक, गांधीनगर जिले के कलोल में जेपी गेट से टावर चौक तक, अपराह्न अहमदाबाद में सरदार पटेल चौक (राणीप) से के के नगर (घाटलोडिया) से वाणीनाथ चौक (नाराणपुरा) से जीवराज पार्क चार रास्ता (वेजलपुर) तक भव्य रोड़ शो किया। रोड़ शो के बाद उन्होंने वेजलपुर में जनसभा को भी संबोधित किया। उन्होंने राज्य में कल रोड़ शो से अपने संसदीय क्षेत्र में चुनाव प्रचार शुरू किया। एक रोड़ शो के दौरान उन्होंने कहा कि जीत का अंतर तो जनता तय करती है, मगर उत्साह देखकर वह इतना कह सकते हैं, हम गत चुनाव से बड़े बहुमत के साथ जीतने जा रहे हैं। गुजरात में क्षत्रिय समाज की नाराजगी पर उन्होंने कहा कि जहां तक क्षत्रियों की नाराजगी का सवाल है, केन्द्रीय मंत्री परशोत्तम रुपाला ने माफी मांग ली है और वह मानते हैं गुजरात में 26 सीटें भाजपा गत चुनाव से ज्यादा बहुमत के साथ जीतेगी। उन्होंने कहा कि देश में हम पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण 400 पार करेंगे और कहा तीसरी बार मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद एक दो साल में ही इस देश में नक्सलवाद समाप्त हो जायेगा। उन्होंने कहा हरेक नागरिक को प्रचार करना चाहिये। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस ने केंद्रीय गृह मंत्री के खिलाफ सोनल पटेल को उम्मीदवार बनाया है। गांधीनगर लोकसभा सीट भाजपा का गढ़ रही है। इस निर्वाचन क्षेत्र में गांधीनगर उत्तर, कलोल, घाटलोदिया, साबरमती, वेजलपुर, साणंद और नारणपुरा विधानसभा शामिल हैं। नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 19 अप्रैल है और राज्य की सभी 26 लोकसभा सीटों के लिये सात मई को मतदान होगा।

# मेडी-क्यूटिस क्लिनिक द्वारा अब नॉर्थ दिल्ली में भी इटली की क्वांटम सिस्टम से क्यू स्विच तकनीक की शुरुआत

दिल्ली के लोगों को स्किन केयर के सफल इलाज का तोफा | स्किन टैनिंग, टैटू रिमूवल, झाइयां आदि से मिलेगा छुटकारा | सुरक्षित और प्रभावी तरीके से पुराने घाव या चोट के निशान से मिलेगा छुटकारा

**नई दिल्ली।** आज के इस दौर में भगति दौड़ती जिंदगी में खुद को उप टू डेट रखना और खुद को रेप्रेसेंटाब्ले दिखना बहुत बड़ा चैलेंज हो गया है। आज के युवाओं में सन बर्न, झाइयां, डार्क सर्कल्स, टैटू रिमूवल आदि से दो चार होना पड़ता है। इसी समस्या से निजात दिलाने के लिए उत्तरी दिल्ली के प्रशांत विहार स्थित मेडी-क्यूटिस क्लिनिक द्वारा इटली की क्यू स्विच तकनीक वाली क्वांटम सिस्टम का शुभारंभ किया गया। इस तकनीक से उत्तरी दिल्ली के सभी लोगो को स्किन से जुड़ी बीमारियों एवं टैटू रिमूवल, पुराने चोट के निशान, आदि को सफलता के साथ साथ किफायती दरों पर उपलब्ध होगा। मेडी-क्यूटिस द्वारा स्किन, हेयर, एंटी-एजिंग, हाइड्राफैसियल, पीआरपी, मुँहासे, द्धङ्क ग्लूटाथिओन इंजेक्शन, लेजर हेयर रिमूवल, मधुमेह, थायराइड आदि के सफल इलाज की सुविधा है।

क्यू-प्लस सीरीज़ - ईवीओ फैमिली एक लेज़र प्लेटफ़ॉर्म है जो अधिकतम बहुमुखी प्रतिभा के लिए प्रत्येक उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से अनुकूलित करने के लिए 6 अलग-अलग कॉन्फ़िगरेशन में उपलब्ध है। एक ही प्रणाली में दो अलग-अलग लेजर स्रोतों को सम्मिलित करना संभव है-शुद्ध क्यू-स्विच या हाइब्रिड क्यू-स्विच/स्पंदित।

क्यू-प्लस सीरीज़ उपचारों की एक बड़ी श्रृंखला को पूरा करने के लिए आदर्श समाधान है, जिसमें सौम्या रंजित घावों को हटाना, टैटू हटाना, त्वचा का पुनरुत्थान, संवहनी घावों और बालों को हटाने के उपचार शामिल हैं। क्यू-प्लस सीरीज़ शक्तिशाली क्यू-स्विचिंग तकनीक पर आधारित बाजार में एकमात्र हाइब्रिड लेजर डिवाइस है जिसे स्पंदित लेजर के साथ भी कॉन्फ़िगर किया जा सकता है। डॉ. सोनल गर्ग ने इस बारे में बात करते हुए कहा कि इस तरह की तकनीक विभिन्न त्वचा स्थितियों के इलाज में कैसे मदद करती है और यह सुरक्षा प्रोफ़ाइल से भी संबंधित है। मेडी-क्यूटिस क्लिनिक पिछले 10 वर्षों से अधिक समय से ही उत्तरी दिल्ली के प्रमुख स्थान पर एक प्रतिष्ठित और अत्याधुनिक क्लिनिक है, जहां हमारा मुख्य लक्ष्य अंडर वन रूफ सभी प्रकार की स्किन और हेयर से जुड़ी बीमारियों का समाधान और इलाज मुहैया करना है। हमारे पास सबसे उन्नत प्रौद्योगिकियां हैं और हम सर्वोत्तम सेवाएं देने के लिए एक्सपर्ट की टीम और साथ ही हम खुद को समय के साथ अपडेट करते रहते हैं। हमारा एक मात्र नारा है स्वास्थ्य और सौंदर्य को सशक्त बनाना।

# इंडिगो एयरलाइन चेन्नई से बैंकॉक के लिए उड़ान सेवाएं फिर से शुरु करेगी

**चेन्नई,एजेंसी।** इंडिगो एयरलाइन चेन्नई से बैंकॉक के लिए उड़ान सेवाएं फिर से शुरू करेगी और इस महानगर से दुर्गापुर के लिए क्रमश: 15 और 16 मई से सीधी उड़ानें होंगी। इंडिगो एयरलाइन 15 मई से बैंकॉक के लिए सप्ताह में चार बार और 16 मई से दुर्गापुर के लिये सप्ताह में तीन बार उड़ानें संचालित करके अपना परिचालन फिर से शुरू करेगी। तमिलनाडु की राजधानी से ये सीधे मार्ग घरेलू और अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा देंगे।

यहां एक एयरलाइन विज्ञप्ति में कहा गया है कि चेन्नई से बैंकॉक और दुर्गापुर की कनेक्टिविटी से व्यवसायिक और अवकाश यात्रियों को उड़ान के विकल्प बढ़ेंगे और क्षेत्र में आर्थिक विकास में मदद मिलेगी। चेन्नई को शामिल करने के साथ, इंडिगो अब दुर्गापुर से दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद सहित मेट्रो शहरों के लिए 28 साप्ताहिक उड़ानें संचालित करता है। यह नया कनेक्शन दुर्गापुर के यात्रियों को चेन्नई के माध्यम से अन्य घरेलू और अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों से जुड़ने के लिए अधिक विकल्प प्रदान करेगा।

इंडिगो के वैश्विक बिक्री प्रमुख विनय मल्होत्रा ने कहा, हमें चेन्नई और दुर्गापुर के बीच सीधी उड़ानें शुरू करने के साथ-साथ चेन्नई और बैंकॉक के बीच सीधी उड़ानें फिर से शुरू करने की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। उन्होंने कहा, इन उड़ानों के साथ इंडिगो भारत के सात शहरों से थाईलैंड के लिए 69 सीधी उड़ानें संचालित करता है।

शहर की चारों ओर प्रमुख ऑटोमोबाइल विनिर्माण इकाइयों और संबद्ध उद्योगों की उपस्थिति के कारण, तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई को भारत का डेट्रॉइट भी कहा जाता है।

मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी, सैफुल्लाह सिद्दिकी द्वारा आरडी प्रिंटिंग एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-08, नोएडा ( यूपी ), से छपवा कर एन-81, बटला हाउस, जामिया नगर पुलिस स्टेशन, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित किया। सर्वाधिकार सुरक्षित, किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। ( संपादक- सैफुल्लाह सिद्दिकी )